छूत-अछूत

—+❀+—

लेखक—

श्री बैजनाथ केडिया

—+:○:+—

प्रथमबार] १९३८ [मूल्य १।)

प्रस्तावना

इस समय देशके सामने दो ही प्रश्न विशेष रूपसे उपस्थित हो रहे हैं। एक हरिजन उत्थान और दूसरा ग्रामसंगठन। यद्यपि महात्मा गांधीके निरंतरके प्रयत्नसे इन दोनों विषयोंमें ही काफी प्रगति प्राप्त हुई है। पर इस विषयके साहित्यकी कमी रहनेके कारण जिस तेजीसे यह दोनों समस्याएं हल होनी चाहिये उतनी नहीं हो रही हैं।

भारतके ग्यारह प्रान्तोंमें से सात प्रान्तोंमें इस समय कांग्रेस-का शासन चल रहा है। बाकी चारमें से भी दो प्रायः कांग्रेसकी नीतिको ही स्वीकार किये हुए हैं। इसलिये यदि यह कहा जाय कि इस समय हमें अपने विचारोंके अनुसार कार्य करनेका सब-से अधिक अवसर प्राप्त हुआ है तो कोई अत्युक्ति नहीं है।

पर अपने विचारोंको फैलानेके लिये सबसे आवश्यक चीज उस विषयका साहित्य होता है जिसका प्रचार हम करना चाहें। दुर्भाग्यसे राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही नहीं अन्य प्रान्तीय भाषाओंमें भी इस तरहके साहित्यकी बहुत ही कमी दिखाई दे रही है।

इसी अभावकी किंचित पूर्तिके लिये इस उपन्यासकी रचना

की गई है। यद्यपि उपन्यास लिखनेका यह मेरा पहला ही प्रयास है। पर मनके भावोंको एक कथाके रूपमें वर्णन करके सर्व-साधारणके समझने योग्य भाषामें अपने अभिलषित विषय या विषयोंको उपस्थित करनेसे जितना अधिक प्रभाव पड़ता देखा गया है उतना विचार पूर्ण गम्भीर लेखोंसे नहीं पड़ता।

एक प्रकाशकके नाते यह बात भी भली-भांति विदित है कि आज कलके पाठक सैकड़े अस्सीसे भी अधिक कथा कहानी और उपन्यास ही पढ़ना पसंद करते हैं। इसलिये विचारोंको फैलानेके लिये इस समय सबसे सुगम साधन अच्छे और भाव पूर्ण उपन्यासोंकी रचना ही है।

प्रस्तुत पुस्तकमें यह दिखानेका प्रयत्न किया गया है कि मनुष्यके मनमें यदि कोई विचार दृढ़तासे जम जाता है तो वह आगे चलकर अवश्य सफल होता है। श्रीमती सुखियाकी यह दृढ़ता कि हम चाहे जितने गरीब और पतित क्यों न हों हमारा बालक भी आगे चलकर कभी उच्चपद प्राप्त कर सकता है; उसके लड़केको एक योग्य हाकिम बना देता है।

साथही यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि घसीटू जैसा एक साधारण अछूत बालक भी अवसर मिलनेसे एक योग्य और महान पुरुष बननेमें कोई रुकावट नहीं पा सकता।

पुराने विचारोंके गुरु महाराज जैसे लोग भी अवसर पाकर बिना किसी ऊंच-नीच और भेद-भावकी शिक्षाके महत्वका अनु-

भव करके अपनी भूलको बड़ी आसानीसे सुधार सकते हैं।

विदेशी शिक्षाके दूषित प्रभावसे जिससे वासनाकी पूर्ति और स्वार्थ साधन ही एक मात्र लक्ष्य बन जाता है पर भारतका प्राचीन आदर्श त्याग ही एक मात्र मनुष्य-जीवनको सुखी और ऊंचा बना सकता है। यह पण्डितजीकी दोनों पत्नियाँ श्रीमतो कात्यायिनी और एनाके चरित्रसे भलीभाँति विदित हो जाता है।

उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेनेपर भी नैतिक शिक्षाके अभावमे श्रीमती सुशीलाकी नाव संसार रूपी महासमुद्रकी उत्ताल तरंगोंमें पड़कर जिस तरह डगमगा उठती है और सारे साधन मौजूद रहनेपर भी उसको उसके किनारे लगानेकी कोई उपाय नहीं सूझती। वही सुशीला अपनी माताकी एक जरासी सद्‌शिक्षा रूपी अनुकूल वायुके मिल जानेसे श्री रामचरण जैसे पति रूपी किनारेको प्राप्त करके अपने जीवनको सफल बना लेती है।

धनीलाल जैसा उद्योगी युवक बिना किसी सहारेके तो किस तरह अपना जीवन-भार बनाये हुए था और जरासा सहारा पाकर उसने वह वह काम कर दिखाये जो एक बहुत उच्च शिक्षा पाये हुए किसी उच्चकुलके अभिमानी युवकके लिये भी एक बारगी ही असंभव है।

देशमें धनकी कमी नहीं है। पर लोगों का दृष्टिकोण बदला हुआ होनेके कारण वही धन आज गरीबों को उठानेके बदले उन्हें और भी दबाये रखनेका कारण बना हुआ है। उसी धन-

का सद्-उपयोग होनेसे वह देशकी कितनी अधिक सहायता कर सकता है यह श्री रामचरण और सुशीलाके ट्रस्टके रुपयोंके उदाहरणसे स्पष्ट विदित हो जाता है।

हमारे कार्यकर्त्ताओंकी शहरोंमें रहकर, बिजलीके पंखोंके नीचे बैठकर तथा मोटर गाड़ियोंमें चढ़कर गरीबोंकी सेवा करनेकी जो भावना हो रही है उससे इस उपन्यासकी सुधारक पार्टीके गांवोंमें जाकर वहां रहकर जो उन्होंने सेवा स्वीकार की है। उसकी तुलना भी अवश्य ही विचारणीय है।

बड़ी-बड़ी स्कूल और कालेजोंकी पढ़ाईके बदले पंडितजी और उनकी दोनों पत्नियोंके गाँवके किनारे एक व्यवहारिक शिक्षाकी पाठशाला खोलकर बालकोंका ज्ञान प्राप्त करना कितना उपयोगी हो सकता है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है।

इसके सिवा वर्तमान सामाजिक बातोंपर भी बीच-बीचमें प्रकाश डालनेका प्रयत्न किया गया है। इन सबमें कहां तक सफलता या असफलता प्राप्त हुई है। यह तो पाठक ही निर्णय करेंगे।

अवश्य ही मेरे जैसे अल्पज्ञके लिये जिसे न तो व्याकरण-का ही पूरा ज्ञान है और न भाषा सम्बन्धी गुण-दोषोंके निर्णय करनेकी क्षमता ही है। इस तरहकी पुस्तक लिखना धृष्टताके सिवा और कुछ नहीं कहा जा सकता पर सहृदय पाठक सिर्फ

मेरे भावोंपर ध्यान देकर ही अन्य सब त्रुटियोंको क्षमा कर देगें। ऐसा मैं विश्वास कर सकता हूँ।

साक्षीविनायक-काशी।
रथयात्रा १९९५

लेखक—

लेखककी

लिखी

अनोखी और लाभप्रद

कहानियोंके संग्रह

पढ़िये।

१—अस्फुट कलियां	१)
२—दुर्बादल	॥)
३—समाजके हृदयकी बातें	१।)
४—महिला-मंडल	१॥)

छूत-अछूत

प्रथम अध्याय

मुनवा मोची और उसकी स्त्री सुखियाके अनेक यतन करने के बाद उनके एक लड़का पैदा हुआ। लड़केका नाम रखा गया घसीटू। मुनवाके यहां एक बूढ़े महाराज आया जाया करते थे। सुखियाने एक दिन हाथ जोड़कर उनसे पूछा—बूढे बाबा! जरा पतड़ा खोलकर तो देखिये, मेरे घसीटूके भाग्यमे क्या लिखा है?

ब्राह्मण महाराज बहुत पढ़े-लिखे न होनेपर भी इन गँवारों को सन्तोष कराने लायक विद्या खूब जानते थे। उन्होंने बड़ी गम्भीरता पूर्वक पत्रेके पन्ने इधर-उधर उलट-पुलटके तथा अपनी अंगुलियोंपर दो, चार बार गिन-गिनाकर कहा—बहू! तुम्हारा यह लड़का बड़ा भाग्यवान होगा। इसके ग्रह इतने जोरदार पडे हैं कि यह छोटी उमरमे ही एक बहुत बड़ा हाकिम बनेगा।

ब्राह्मण महाराजकी इस बातने सुखियाके रोम-रोमको खिला दिया। उसने खुश होकर बाबाजीको सवा रुपया नगद और एक

सीधा भेंट किया। बाबाजीने लड़केको अनेक आशीषें दीं। और चलते-चलते बोले—"देख बहू, जब घसीट्टू पढ़ने लायक हो जाय तब इसको चटशालामें अवश्य भेजना।

मुनवाके घर लौटनेपर सुखियाने ब्राह्मण महाराजकी कही हुई सारी बातें बड़े उत्साहसे कह सुनाई। मुनवा इन बातोंपर बिलकुल विश्वास नहीं करता था, वह तो इनको ब्राह्मणोंकी चतुराई ही समझता था। तो भी सुखियाको खुश करनेके लिये उसने भी दो चार उत्साह पूर्ण शब्द कह दिये, जिससे सुखिया और भी फूल उठी। वह इस बातकी चर्चा अपने अड़ोस-पड़ोसके लोगोंसे जबतब किया करती थी। पर उन लोगोंसे विशेष समर्थन न पाकर वह बहुत ही खिन्न हो जाती थी।

मुनवा जो कुछ मेहनत मजदूरी करके लाता था उसमें उन तीनों प्राणियोंका काम बड़े मजेमें चल जाता था। सुखिया गँवार होनेपर भी सफाईको बहुत पसन्द करती थी। उसके महल्ले भरमें सबसे साफ-सुथरा उसीका घर था। वह रोज अपने घरको गोबर-माटीसे लीप-पोतकर साफ कर लेती थी। घरका कूड़ा करकट भी दूर फेंक आती थी। कपड़े, लत्ते और बर्तन-भांड़े भी खूब मांज धोकर साफ-सुथरे रखती थी।

घसिट्टुवाका रंग काला होनेके कारण वह रोज साबुन लगाकर उसे सफेद बनानेका प्रयत्न किया करती थी। चाहे उसके

उद्योगसे घसिट्टुवा गोरा न बना हो पर उसके काले रंगमें एक ऐसी आभा आ गई थी कि जिससे वह बहुत ही सुन्दर दिखाई देने लगा था।

इसी तरह सुखियाके लाड़-प्यारके बीचमें पलता हुआ घसि-ट्टुवा पांच सालका हो गया। सुखिया उसे पढनेके लिये गुरुजीके यहां भेजना ही चाहती थी कि इसी बीचमे उसपर एक ऐसा वज्र आ गिरा कि जिससे कुछ दिनके लिये उसके सब मनसूबे मनके मनमें ही रह गये।

बात यह हुई कि एक दिन मुनवा कांपता हुआ समयसे पहलेही घर लौट आया। उसका चेहरा हींगुलकी तरह लाल हो रहा था और वह पत्तेकी तरह कांप रहा था। सुखियाने उसका यह हाल देखकर उसका हाथ पकड़कर उसे खाटपर लिटाया। उसका शरीर तवेकी तरह तप रहा था। उसे जोरोंका बुखार चढ़ा हुआ था।

यद्यपि सुखिया अपने घरको लीप-पोतकर बहुत साफ सुथरा रखती थी। पर जिस मोहल्लेमें उसका घर था वह स्थान बहुत ही गन्दा था। रास्ते और घरोंके पिछवाड़े सब कूड़े कीचड़से लथपथ रहते थे। पाखाने तो इतने गन्दे रहते थे कि उनकी बदबूसे सारा महल्ला सड़ा करता था, इसलिये हर साल उस महल्लेमें कभी प्लेग, कभी हैजा, कभी चेचक एक न एक संक्रामक बीमारी आही

धमकती थी, जिससे सैकड़ों गरीबोंका खात्मा हो जाता था।

सदाकी तरह इस साल भी प्लेग महारानी बिना किसी तरह के निमन्त्रण या बुलावेके ही आ पहुंची और नित्य दो चार प्राणियोंकी आहुति लेने लगी। दुर्भाग्यसे आज सुखियाके घरपर भी उसने धावा बोल दिया। सिर्फ चौबीस घण्टेके भीतर ही वह मुनवाको निगल गई।

सुखिया बहुत रोई कल्पी पर उसका रोना धोना सब बेकार था। सरकारी वारण्टसे तो कोई लुक छिपकर बच भी सकता है पर यहां तो उस तरहकी चतुराई भी नहीं चल सकती। जिसके लिये भी हो मौतका परवाना कटा सो कटा, फिर तो उसे जाना ही होगा। सुखियाने इस बातको समझा चाहे कुछ विलम्बसे ही सही

अबतक सुखियाके प्रेमके दो हिस्से हो रहे थे। पर अब व॰ सारेका सारा एक ही केन्द्रमें आ गया और वह केन्द्र घसिटुवा हुआ। सुखियाने देखा पति तो चला ही गया कहीं लड़केसे भी हाथ न धो बैठना पड़े। इसी डरसे वह घसीटुवाको लेकर अपने बापके घर चली गई।

उसका बाप सुमेरन बहुत गरीब था। उसकी मां तो पहले ही मर चुकी थी। बूढ़ा बाप एक पादड़ीके यहां बागवानी करके अपने निर्वाह योग्य कुछ पैसे कमा लेता था। उन्हीं थोड़ेसे पैसों से किसी प्रकार अपना निर्वाह कर रहा था। अब लड़की और

नातीके आ जानेसे उसकी कठिनाई और भी बढ़ गई। पर करता क्या ? दुःखिया बेटीको आसरा देना ही पड़ा।

सुखिया गंवार थी तो क्या, शहरमें रहते-रहते उसे परिस्थिति समझनेका ज्ञान तो हो ही गया था। दो चार दिनमें ही उसने अपने बूढे बापकी कठिनाइयोंको समझ लिया। उसे अपने घरमें कभी अन्न-वस्त्रके अभावका सामना नहीं करना पड़ा था। इससे उसे अपने घरके काम धन्धेको छोड़कर और किसी तरहकी मेहनत मजदूरी करनेका अभ्यास नहीं था, तो भी अपने निर्वाहके योग्य पीसना, कूटना, कातना आदि काम वह बराबर करती चली आ रही थी। इसलिये उसने सोचा कि इन्हीं कामों को करके वह अपने और घसीटू दोनोंके निर्वाहके लिये कुछ पैसे भली-भांति कमा सकती है।

इस निर्णयपर पहुँचनेके बाद वह इसी तरहके काम करके अपने दोनोंके निर्वाहके योग्य मजदूरी निकालने लगी। जिससे उसके पिताका यह नया बोझा सहजमें ही हलका हो गया।

सुखियासे यह बात छिपी नहीं रही कि पहले तो उसका पिता उन लोगोंको भार स्वरूप समझकर उनके प्रति कुछ तिरस्कारका भाव रखता था। पर अब वह इनको बहुत ही प्यारकी दृष्टिसे देखने लगा। पहले बूढ़ेको अपनी रोटियां अपने हाथसे सेकनी पडती थी। पर अब तो दोनों समय उसे बनी बनाई मिलने

लग गई। इससे भी वह इनकी ओर विशेष रूपसे आकृष्ट हो गया तथा दिनपर दिन घसीटूके प्रति उसके स्नेहकी मात्रा बढ़ने लगी।

इस तरह कुछ दिन सुखसे बीतनेके बाद एक दिन सुखियाने ब्राह्मण महाराजकी भविष्यवाणीकी बात अपने पिताको कह सुनाई। यह बात सुनकर बूढ़ा सुमेरन बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह कहने लगा—पादड़ी साहबके यहां मालीका काम करनेके पहले मै एक पाठशालाके गुरुजीके यहां कभी-कभी लकड़ी चीरने के लिये जाया करता था। मैं उन्ही पंडितजीके यहां घसीटूको पढ़नेके लिये बैठा आऊँगा।

सुमेरन जब गुरुजीके यहाँ काम करने जाया करता था तब वह देखता था कि वहाँ सैकडों बालक पढ़ रहे है, पर यह बात तो कभी उसके ध्यानमे भी नहीं आयी थी कि हमारे बच्चे भी इसी तरह लिखपढ़ सकते है। वह तो समझता था कि भगवानने हमलोगोंको मेहनत मजदूरी करनेके लिये ही पैदा किया है। पढ़ने-लिखनेका काम तो ब्राह्मण, वैश्योंका ही है।

दूसरे दिन वह बड़े चावसे पंडितजीके पास दौड़ा हुआ गया और वहाँ जाकर एक कोनेमें खड़ा हो गया। कुछ देर बाद जब पण्डितजीकी दृष्टि उसपर पड़ी तो उन्होंने पूछा—क्यों सुमेरन आज कैसे आया?

बूढ़ेने बहुत श्रद्धाके साथ हाथ जोड़के साहस पूर्वक कहा—

पण्डितजी मेरे एक पांच सालका नाती है क्या उसे आपकेपास पढ़नेके लिये छोड़ जाऊँ ?

गुरुजी उसकी यह बात सुनते ही कानोंपर हाथ रखकर बोले—ना भाई ! इन ऊंची जातिके बालकोंके साथ बैठकर तुम्हारा नाती कैसे पढ़ सकता है ? फिर उसे पढ़नेकी आवश्यकता ही क्या है ? बड़ा होकर तुम्हारी तरह उसे भी तो यही मेहनत-मजदूरीका काम करना होगा।

गुरुजीकी यह नेक सलाह सुनके बेचारा बूढ़ा अपनासा मुंह लेकर घर लौट आया और वहाँकी सब बातें सुखियासे कह सुनाई।

सुखिया बोली—बाबा घसीटूको लेकर मै कल गुरुजीके पास जाऊँगी। मेरा घसीटू किसीसे भी कम साफ-सुथरा नहीं है। जो उसके साथ बैठनेसे दूसरे लडकोंका कुछ बिगड़ जायगा।

दूसरे दिन बड़े उत्साहके साथ घसीटूकी अगुली पकड़कर सुखिया पण्डितजीकी पाठशालामे जा पहुँची, उस समय पण्डितजी एक आसनपर बैठे लड़कोंको पढ़ा रहे थे।

सुखियाने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाके कहा—गुरुजी महाराज। मेरे इस घसीटूको भी अपनी पाठशाला मे बैठा लीजिये।

पण्डितजीने कुछ नरमीके साथ पूछा—तुम कौन हो ? कहाँ रहती हो ?

सुखियाने उत्तर दिया, महाराज। मैं सुमेरन चमारकी लड़की

हूँ, यह उनका नाती है।

पण्डितजी कुछ कड़े होकर बोले—यह डोम-चमारोंके पढ़ानेकी पाठशाला नहीं है। ऊँची जातिके बालक ही यहाँ पढ़ा करते हैं।

सुखिया बोली :गुरुजी महाराज! मेरा घसीटू भी इन्हींकी तरह साफ-सुथरा रहता है। इसलिये उसको यहाँ बैठालेनेसे इनकी कुछ भी हानि होनेकी सम्भावना नहीं है।

पण्डितजी—सम्भावना क्यों नहीं है? तुम लोग ठहरे नीच जातिके, तुम्हारा काम भी नीचा है। इसलिये हम इसे यहाँ नहीं बैठा सकते।

सुखिया—नहीं महाराज हम नीचा काम नहीं करते। बाबा उन पादड़ी साहबके यहाँ मालीका काम करते हैं और मैं आप ही लोगोंके घरोंका पीसने-कूटनेका काम करती हूँ। फिर हमारा काम नीचा कैसे हुआ?

इस तरह सुखियाकी युक्तिसंगत बातोंसे हार खाकर पंडित जी आग बबूला हो गये और सुखियाको झिड़ककर बोले—बहुत शास्त्र बघारनेकी आवश्यकता नहीं है। हमारी खुशी हम इस बालकको नहीं पढ़ाते। (हाथसे दरवाजा दिखाते हुए बोले) बस, अब बहुत हो चुका तुम सीधी तरहसे यहाँसे चली जाओ।

बेचारी सुखिया अब क्या करती? अपने प्यारे बच्चेको साथ लेकर पाठशालाके बाहर चली आई।

द्वितीय अध्याय

सुखिया घर आकर सोचने लगी। उन लोगोंके बालकोंके साथ हमारे बालक एक जगह बैठकर पढ़ नहीं सकते। पर हमारी चीरी हुई लकड़ियां उनकी रसोईतक खूब मजेमें जा सकती हैं, सो क्यों ? क्योंकि लकड़ी चीरनेका काम कठिन परिश्रमका है। वह दूसरेसे कराये बिना इनका काम नहीं चल सकता। इसीलिये हमारी चीरी हुई लकडियां उनके चौकेतक मजेमे पहुँच सकती हैं।

हमारे पीसे हुए आटेसे भी इनकी रोटियां मजेमें बन सकती हैं। क्योंकि इनकी घरवालियोंसे आटा पीसनेका कठिन काम नहीं किया जा सकता।

हमारे काते हुए सूतसे हमारा ही बुना हुआ वस्त्र भी इनके शरीरपर शोभा दे सकता है। क्योंकि उनके बिना सरदी और गरमीसे बचनेके लिये इनके पास और कोई साधन नहीं है।

हम लोगोंके बनाये हुए जूते भी इनके पावोंकी शोभा बढ़ा सकते हैं क्योंकि उनके बिना न तो कडाकेके जाड़ेमें और न तेज

धूपमे ही इनका काम चल सकता है। इसलिये ये भी इन्हें सहर्ष स्वीकार हैं।

हमारा दूहा हुआ दूध और उससे निकाले हुए घी के इनके पवित्र पेटमें प्रवेश करनेमे कोई वाधा उपस्थित नहीं होती। फिर क्या कारण है कि हमारे बच्चे ही इनके बच्चोंके साथ बैठकर पढ़ नहीं सकते ? अवश्य ही इसमे कोई गूढ रहस्य है। सुखिया-ने सोचा, संभव है ये लोग इस बातसे डरते हों कि यदि इनके बच्चे भी पढ लिखकर होशियार हो जायंगे तो फिर हमारी गुलामी कौन करेगा ? बस यही एक ऐसी बात है जो हमारे बच्चों के पढ़ने लिखनेमें बाधा डाल रही है।

इसी तरह मनमे तर्क-वितर्क करती हुई सन्ध्या समय सुमे-रनके घर लौटनेपर, सुखियाने पण्डितजीके यहांका सारा किस्सा कह सुनाया।

सुमेरन बोला—बेटी मुझे तो कल ही यह विश्वास हो गया था कि तुम्हारे वहा जानेसे भी वही बात होगी जो मेरे साथ हुई थी। खैर, आज मैंने अपने मालिक पादड़ी साहबसे घसीटूके पढ़ानेके सम्बन्धमें सलाह पूछी तो वे कहने लगे—बुड्ढे तुम उस बालकको मेरे यहां भेज दो मैं उसे पढ़ाऊंगा। सो वेटी कल तुम घसीटूको लेकर वहां चली जाना, वे बड़े दयालु हैं। उनसे घसीटूका भला ही होगा।

सुखिया सोचने लगी, पादड़ीकी स्कूलमें घसीटूको पढ़ाऊँ तो वे लोग तो जीशु मिशीका धर्म सिखावेंगे। मेरे बच्चेको क्रिस्तान बना लेंगे। नहीं मैं ऐसा कभी नहीं करूँगी। धर्म खोकर पढ़ाने से तो न पढ़ाना ही अच्छा है।

दूसरे दिन बूढे सुमेरनके बहुत आग्रह करनेपर भी सुखिया ने घसीटूको पादड़ियोंके स्कूलमें नहीं भेजा। परन्तु लड़केको पाठशाला न भेजनेके दुःखसे वह रात दिन बेचैन रहने लगी। वह पहलेकी तरह ही मेहनत करके अपना काम पूरा कर लेती थी पर खाने बैठनेपर बहुत चेष्टा करके भी अब पूरा भोजन नहीं कर सकती थी। रात दिन इन्हीं बातोंको सोचते-सोचते वह सूखकर काटा हो गयी। परन्तु वह अपने लालको किस तरह पढावे, इसका उपाय उसकी समझमें नहीं आया।

एक दिन घसीटू दौड़ा हुआ सुखियाके पास आया और अपने हाथकी मिठाई दिखाकर बोला—अम्मा! यह मुझे बूढ़े साहबने दी है। वह बहुत अच्छा आदमी है। उसने मुझे गोदमें उठाकर मेरा मुँह चूम लिया और पूछने लगा कि क्या तुम पढ़ने जाते हो? मेरे ना कहनेपर उसने पूछा—क्या पढ़ना चाहते हो, मैंने कहा हां, तब वह बहुत खुश हुआ और बोला कि कल तुम हमारी स्कूलमें आओ, हम तुमको पढायेगा। क्यों अम्मा तुम मुझे उसकी स्कूलमें भेजोगी? अच्छी अम्मा मुझे जरूर वहां

भेजो, मैं बहुत पढ़ूंगा।

सुखियाने बच्चेकी बातें सुनकर सोचा, यदि पादड़ी के स्कूलमें ही भेजा जाय तो क्या हर्ज है। मैं अपने घसीटूको घरमे अपने धर्मकी बाते बताकर ऐसा पक्का बना लूंगी कि वह पढनेके सिवा उनके क्रिस्तानी मतकी बात ही नहीं सुनेगा।

दूसरे दिन घसीटूको साथ लेकर सुखिया पादड़ी साहबकी स्कूलमे जा उपस्थित हुई, पादड़ीने बड़े प्रेमसे उसके सरपर हाथ रखके पूछा—अच्छा तुम आ गये ? यह साथमे तुम्हारी मां है ? बहुत अच्छा ! तुम इसे रोज यहां पहुँचा दिया करो मैं इसे अपने स्कूलमे भरती कर लूंगा।

कभी सुमेरन और कभीसुखिया रोज घसीटूको वहां पहुँचा आते। घसीटू था बुद्धिका तेज़, थोड़े ही दिनोंमें वह अच्छी तरह नियमित रूपसे पढ़ने लगा। दिनमें तो वह ईसाई लड़कोंके साथ स्कूलमे पढ़ता और रातको सुखिया उसे महाभारत, रामायणकी सुनी सुनाई कथाएं कहा करती, इस तरह पादड़ियोंकी स्कूलमे पढ़ते हुए भी घसीटू पूरा हिन्दू ही बना रहा, पर उसके दुर्भाग्यने अभी उसका पीछा नहीं छोड़ा था। उसे अभी स्कूलमें पढ़ते कुल एक ही साल हुआ था कि उसका नाना चल बसा। बेचारी सुखिया अनाथ तो थी ही पिताके मर जानेसे और भी सूनी हो गई। तिसपर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। पिताके क्रिया-कर्म-

के लिये उसे कुछ उधार लेकर काम चलाना पडा था इसके लिये उसे और भी कठिन परिश्रम होने लगा।

इस तरह लगातार पांच सालके कठिन परिश्रम के बाद वह पितृऋणसे मुक्त हुई। इधर घसीटू भी अपनी पढाईमे काफी तरक्की करता जा रहा था।

तृतीय अध्याय

काफी समय बीत गया। दुनियामें बहुतसे उलट फेर हो गये सुखिया भी अब पहलीसी सुखिया नहीं रही। अब उसे न तो चक्की ही पीसनी पड़ती और न ढेंकी ही चलानी पडती है। अब उसका प्यारा घसीटू बी० ए० पास करके कानून पढ़ रहा था। बी० ए० में सर्व प्रथम होनेके कारण उसे पचास रुपये मासिक वजीफा मिलने लगा जो सारेका सारा वह अपनी माके हाथोंमें लाकर रख देता। सुखिया बड़े हिसाबसे चलती थी, इस लिये वह इन पचास रुपयोंमेंसे बहुत थोड़ा ही खर्च करके अधिकांश बचा लेती थी।

यह सब तो हुआ परन्तु पादड़ियोंकी स्कूलमें पढ़नेके कारण उसका प्यारा पुत्र अब जीशुका भक्त बन गया, उसकी हिन्दू धर्मकी सारी शिक्षा बेकार हो गई, पहले तो वह घसीटूपर बहुत नाराज हुई पर ईसाई बन जानेपर भी उसकी मातृ भक्ति वैसी ही अटल देखकर वह चुप रह गई। पर एक बात अवश्य हुई कि वह अब घसीटूके हाथका जल ग्रहण नहीं करती न अपना

थाली-लोटा उसे छूने देती। उसके खाने पीनेके बर्तन अलग कर दिये गये थे और सब बातें पहलेकी तरह ही चल रही थी।

सुखिया तो अब भी घसीटू ही कह कर संबोधन करती थी, पर स्कूलमें तथा उसके इसाई मित्रोंमें अब उसका नाम मिस्टर घोस्ट पड गया था।

घसीटू, मिस्टर घोस्ट तो बन गया। परन्तु जिस बातके प्रभावमें आकर वह ईसाई बना था, इसाई बननेके बाद घसीटू को वह बात वहा नहीं दिखाई दी। वह समझता था। मेरे इसाई बन जानेके बाद मेरा रंग काला है और दूसरोंका गोरा है। यह भेद कत्तई उठ जावगा। पर ऐसा न हुआ, बल्कि इसाई बन जानेके बाद भी वह काला चमारका काला चमार ही बना रहा, सिर्फ फर्क यही हुआ कि जैसे हिन्दू उसे छूना भी पाप समझते थे वह बात इसाइयोंमें नहीं दिखाई दी। बाकी सब बातोंका भेद वैसा ही बना रहा।

घसीटू इसाइयोंमें भले ही काला आदमी समझा जाता हो। अपने सहधर्मियोंमें चाहे अछूत करार दिया जाता हो। पर पढ़ लिख लेनेसे कालेजमें उसके काफी मित्र हो गये थे। जिनके साथ वह खाता-पीता, उठता-बैठता तथा बराबर खेल-कूदमें शामिल होता रहता। वे उससे परहेज नहीं करते थे। उसका स्वभाव इतना नम्र और विनयी था कि जो कोई भी एक बार उससे

मिल लेता वह उसका हो जाता।

अपने साथियोंमेंसे यदि किसीके कुछ तकलीफ हो जाती, बिमारी-सिमारी हो जाती, तो घसीटू अपना खाना-पीना भूलकर उसकी सेवामें लग जाता। वह रात गिनता न दिन, जबतक वह अच्छा न हो जाता उसकी खाटकी पटिया नहीं छोड़ता और भी नाना प्रकारसे वह सबके काम आता। इसलिये उसके सभी साथी उसका आदर करते थे।

चतुर्थ अध्याय

जिस कालेजमे घसीटू पढता था, उसमे लडकोंके साथ लड कियोंकी संख्या भी काफी थी। जिस तरह वह अपने नम्र और विनयी स्वभावके कारण अपने सहपाठियोंमे अनेक मित्र बना लेनेमें समर्थ हुआ था, उसी तरह लडकियोंमे भी उसका आदर कम नहीं था। कालेजकी अधिकाश लडकियाँ अपनी छोटी-से-छोटी फरमाइशे भी उसके द्वारा पूर्ण करानेमे नहीं हिचकतीं थीं। घसीटू भी उनको सब तरहसे सहायता पहुँचानेमें भरसक कोर-कसर नहीं रखता था।

कालेजकी परिचित बालिकाओंमें सबसे अधिक वह कुमारी मिश्राको मानता था। मिस मिश्राका पूरा नाम माहेश्वरी मोहन-लाल मिश्रा था। उसके पिता श्री मोहनलालजी मिश्र उच्च कुलके ब्राह्मण थे; परन्तु एक विशेष कारणवश वे ईसाई हो गये थे। उनकी पत्नी श्रीमती कात्यायिनी देवी उच्च कोटिकी धर्मभीरु महिला हैं। अपने पतिको धर्म परिवर्तन करते देखकर उन्होंने उनको इस कार्यसे निवृत्त करनेका पूरा उद्योग किया। पर

उन्हें सफलता नहीं मिली। श्री मोहनलालजी पत्नीके लाख समझानेपर भी अपने निश्चयसे नहीं डिगे और अन्तमे वे ईसाई मतमें दीक्षित हो ही गये।

मिश्रजीके ईसाई बननेका विशेष कारण यह था, कि वे एक मिशनरी स्कूलमें अध्यापकका कार्य करते थे। उनके शिष्योंमें जहाँ बहुतेरे लड़के थे, वहाँ लड़कियाँ भी कम नहीं थीं। जिस समयका हाल लिखा जा रहा है, उस समय मिश्रजीका विवाह हो चुका था। विवाह ही नहीं हो चुका था, उसके फल-स्वरूप एक कन्या भी मौजूद थी। उनकी अवस्था लगभग २५ सालकी थी, रंग गोरा और शरीर हृष्ट-पुष्ट था।

मिश्रजी अपना काम बहुत ही मनोयोग-पूर्वक करते थे। उनके कार्यसे स्कूलके उच्च पदाधिकारी जितने सन्तुष्ट थे, उससे भी अधिक उनकी छात्र-मण्डली प्रसन्न रहती थी। उनके अध्यापकत्वमे स्कूलका वार्षिक फल बहुतही सन्तोषजनक हो रहा था।

स्कूलमें एना नामकी एक बालिका थी, जो इस समय लगभग १७ सालकी हो चुकी थी और पढनेमें बहुत ही तेज थी। वह नीची श्रेणियोंसे ही सबसे अधिक नम्बर पाती चली आ रही थी। इसलिये स्कूल भरमें उसकी काफी ख्याति थी। जितनी वह पढनेमें तेज थी, उतनी ही सुन्दर भी थी। उसके अंग ऐसे सुगठित थे, मानों साचेमें ढले हुए हों।

आरम्भमें तो मिश्रजी एनाको एक तेज छात्राके रूपमें ही प्यार करते थे, पर ज्यों-ज्यों वह बड़ी होती गयी, त्यों-त्यों उनके मनमें विकार उत्पन्न होने लगा और उनका मन उसकी तरफ अनुचित भावसे आकर्षित होने लगा।

एना भी धीरे-धीरे उनकी तरफ झुकती चली जा रही थी। यह झुकना उसके अनजानते ही हो रहा था, क्योंकि वह तो उन्हे अपना अध्यापक ही समझकर उनकी तरफ आकर्षित हो रही थी। पर मन चोर होता है। अध्यापकके रूपमें प्यार करते-करते वह कब उन्हें प्रेम करने लगी थी, इसका उसे अबतक ज्ञान भी नहीं हुआ था।

मिश्रजीसे भी एनाका यह भाव छिपा नहीं रहा। वे सोचते, जिस बालिकाको कलतक मैं अपनी लड़कीकी तरह देखता था, उसके प्रति मेरा यह उत्कट आकर्षण बहुत ही अनुचित है। बालकोंके माता-पिता हमारा विश्वास करके ही उन्हें हमारे हाथोंमें सौंपते हैं। यदि हमीं उनके विश्वासमें आघात पहुँचावेंगे, तो निःसन्देह हमारा यह व्यवहार भयंकर विश्वासघाती समझा जायेगा। पर दूसरे ही क्षण वे इस न्याय-बुद्धिको दूर फेंककर अपने पापी मनके फेरमें पड़ जाते और पहलेकी तरह फिर मनमें काम-वासनाको स्थान देकर पाप-भावनाका पोषण करने लगते।

एना अक्सर मिश्रजीके घर आया-जाया करती थी। मिश्रजी

की पत्नी कात्यायिनी भी उसे अपनी छोटी बहिनकी तरह ही प्यार करती थी। मिश्रजी की नवजात बालिका माहेश्वरीको एना बहुत ही प्यार करती थी। वह उसके लिये कभी मोजे बुनती, कभी फ्राक सिया करती और कभी टोपी तैयार करती थी। इसी प्रकार कितनी ही चीजोंसे वह अपने अवकाशके समय उसे सजाती रहती थी। उसके इस तरहके आचरणसे कात्यायिनीको बहुत ही सन्तोष होता था। उस बेचारीको क्या मालूम था कि इस प्यारकी ओटमें और भी कुछ रहस्य भरा हुआ है।

धीरे धीरे इस तरहकी घनिष्ठताकी चर्चा स्कूलमें भी होने लगी। कुछ दिनों बाद यह बात एनाके माता-पिताके पास तक जा पहुँची। उन्होंने इसकी थाह ली, तो बातमें कुछ सचाई झलकी। थोडे पर्देसे उन्होंने एनाको समझाया। एना अब तक मिश्रजीके प्रेममें सर तक डूब चुकी थी। यद्यपि यह प्रेम अभी-तक दूषित नहीं हुआ था, पर दोनों ओरका आकर्षण चरम सीमातक पहुँच चुका था।

एना अपने माता-पिताके सामने खुल पडी। सिर झुकाये हुए उसने सारी बातें स्पष्टरूपसे कह दीं, यह भी कहा कि—मैं मिश्रजीके साथ विवाह करूँगी।

उसके पिताने कहा—बेटी एना यह कब सम्भव हो सकता है? पहले तो हम ईसाई हैं और वे हिन्दू, हिन्दुओंमें भी कट्टर

ब्राह्मण और फिर वे विवाहित हैं। हमारे धर्ममें तो एक स्त्रीके रहते दूसरी स्त्रीसे विवाह करनेकी कत्तई गुञ्जाइश नहीं है। तुम्हीं सोचो, तुम्हारी यह इच्छा कैसे पूरी हो सकती है ?

एनाने कहा—वे अपनी पहली स्त्रीको छोड देंगे, मेरे लिये हिन्दू-धर्मका भी वे त्याग कर देंगे ; फिर तो आपको कोई आपत्ति नहीं होगी ?

उसके पिताने कहा—अवश्य ही इतना हो जानेसे ये अड-चनें दूर हो जायेंगी, पर मिश्रजीकी पहली स्त्री उनके त्याग देने-से ही उनसे अलग नहीं हो जायेंगी। यदि वे उन्हें अदालत तक घसीट ले जायेंगी तो भी वे किसी भाति उनका त्याग नहीं कर सकेंगे ?

एना—नहीं पिताजी, मिश्रजीकी स्त्री इतनी साध्वी हैं कि यदि वे उन्हें नदीमें डूब मरनेको कहे, तो वे आँखें मूँदकर बिना किसी तरहकी हिचकिचाहटके उसी समय हँसती हुई जलमें प्रवेश कर जायेगी।

उसके पिताने कहा—बेटी ! यह सब तो हो जायेगा, परन्तु अपने समाजमें हम लोग कैसे मुँह दिखायेंगे ? और स्कूलोंके अध्यापक ही यदि इस तरहके काम करने लगेंगे तो लोग किसका विश्वास करके अपने बच्चोंको पाठशालाओंमें भेज सकेंगे ? यह ठीक है, कि तुम्हारी इच्छाकी पूर्तिके लिये हम सब कुछ सहनेके

लिये तैयार है, परन्तु इस तरहके अनाचारका परिणाम तो बहुत भयंकर होगा।

एना अपने पिताकी इस बातसे कुछ लज्जित हुई, पर वह तो मिश्रजीके प्रेममे इतनी पागल हो चुकी थी, कि नीतिकी इन बातोंको वह अपने हृदयमे स्थान तक न दे सकी, कुछ देर सोच-कर बोली—पिताजी, अब तो चाहे जो हो, मैं अपना मत बद-लनेमें असमर्थ हूँ। यदि आप जबरन मुझे दबाकर रखेंगे, तो इसका परिणाम विपरीत ही होनेकी अधिक सम्भावना है।

लड़कीके इस तरहके उद्‌गार सुनकर बेचारे पिता अपना मन ससोसकर चुप रह गये। परन्तु अपनी कन्याकी बातोंसे इस निष्कर्षपर अवश्य पहुँच गये कि प्राचीन हिन्दुओंमे बालक-बालिकाओंका विवाह आदि करनेका भार अपने ऊपर रखनेकी रीति थी वह बहुत ही उत्तम थी।

एनाकी माताको अपनी पुत्रीकी यह धृष्ठता अच्छी नहीं लग रही थी, पर वह बेचारी क्या करती? उसके समाजमे तो बालक-बालिकाओंको इस तरह आचरण करनेका खुल्लम-खुल्ला अधिकार मिला हुआ था।

एनाके माता-पिताने बहुत कुछ सोच-समझकर मिश्रजीको बुलवाकर उनको भी हर प्रकारसे टटोला। मिश्रजीने भी एनाकी तरह ही निर्भीकतामे सारी बातें स्वीकार कर लीं और बोले—

मैंने माहेश्वरीकी माताको भी राजी कर लिया है। उन्होंने अपनी कन्याके साथ अलग रहना स्वीकार कर लिया है। मेरे बहुत कहने सुननेपर अपने निर्वाहके लिये कुछ लेनेकी भी उन्होंने हां भर ली है। उनकी कुछ लेनेकी इच्छा न थी, परन्तु मैंने जब बहुत आग्रह किया तो अपनी बच्चीकी शिक्षा-दीक्षाके नामपर कुछ लेना उन्होंने स्वीकार किया है। असल बात यह है कि वे हर तरहका त्याग करके भी हम दोनोंके बीचमें आना नहीं चाहतीं और न दूरसे ही किसी प्रकारका रोडा अटकाना चाहती हैं।

एनाके पिताने कहा—आपकी पहली पत्नीकी ओरकी बात तो ठीक हो गयी, पर हमारे कुटुम्बकी यह प्रथा है कि हमारे धर्मको माननेवालोंके साथ ही हमारे बालकोंका सम्बन्ध होता है, इसलिये यदि आप एनासे विवाह करना चाहे तो आपको ईसाई धर्म स्वीकार करना होगा।

मिश्रजीने कहा—एनाके लिये यह भी करनेको मैं तैयार हूँ।

युवावस्थाकी यह बहक मनुष्यसे जो भी करा दे, थोड़ा है। स्वर्गकी देवी कात्यायिनीका त्यागकरके वासनाकी पुतली एनाको ग्रहण करते मिश्रजीको कुछ भी संकोच नहीं हुआ। उसके लिये उन्होंने मन्दिरको छोड़कर गिरजेमें जाना स्वीकारकर लिया।

स्कूल और बाहर सब जगह इस विवाहसे काफी हलचल

मच रही थी। सभी मिश्रजीको धिक्कार रहे थे; साथ ही एनाके माता-पिताको भी इस धिक्कारका एक खास हिस्सा मिल रहा था।। एनाको तो लोग बहुत ही नीची दृष्टिसे देख रहे थे। इन सब तिरस्कारों और धिक्कारोंका बदला कात्यायिनी और उसकी कन्यासे सहानुभूति दिखाकर लोग चुका रहे थे। सर्व साधारण का तो इस विवाहसे यही सम्बन्ध था; पर जिनका इनसे यथार्थ सम्बन्ध था, उन सबके मनकी अवस्था भिन्न-भिन्न प्रकारकी थी।

मिश्रजी सोच रहे थे, एनाके साथ भावी सुखभोगके स्वप्नों के सम्बन्धमे।

एना सोच रही थी, उसके लिये अपने प्रियजनों तकको त्याग देनेकी मिश्रजीकी उदारताके विषयमें।

एनाके माता-पिता सोच रहे थे आधुनिक ढंगकी शिक्षाके कुप्रभावके परिणामोंकी बात।

बेचारी कात्यायिनी सोच रही थीं, अपने अदृष्टके बुरे लिखोंके विधानपर।

उसे न तो मिश्रजी पर ही किसी तरहका क्षोभ था और न एनासे ही कोई शिकायत थी। वह तो अपने किये पूर्व जन्मके पापोंकाही दण्ड समझकर यहसब सहनेके लिये तैयारहो रही थीं। उनके मनमें यदि कोई कष्ट था, तो केवल नवजात बालिका माहे-

श्वरीके भविष्यका था।

एनाकी इच्छा पूर्ण हो गयी, मिश्रजीके साथ उसका विवाह हो गया। सुखभोगकी जो लालसा विवाह होनेके पहले उसके मनको चारों ओरसे घेरे हुए थी, विवाह होनेके बाद वह बड़ी तेजीसे तिरोहित होने लगी। एनाको विश्वास था कि कात्यायिनी के अलग होते ही मिश्रजी मेरे—केवल मेरे ही हो जायेंगे, पर ऐसा नहीं हुआ। इधर मिश्रजीको जो श्रद्धा और भक्ति कात्यायिनीसे मिल रही थी, उसका शतांश भी एनासे नहीं मिलता। पहले मिश्रजी कात्यायिनीकी इस श्रद्धाको पूरा समझ नहीं सके थे, इसकी कदर तो अब एनाने उन्हें करनी सिखायी है। यदि संसारमें झूठ न हो तो सत्यका कोई महत्व ही न रह जाये और यदि कड़वी चीज न हो तो मीठेको कौन पूछे? इसी तरह हिन्दू साध्वी नारीका महत्व तो विदेशी भावापन्न स्वेच्छाचारिणी रमणियां ही सिद्ध करती हैं।

आरम्भमें तो एनाकी उचित अनुचित सभी बातें मिश्रजीको अच्छी लगती थीं, पर कुछ ही दिन बाद वे कात्यायिनी कीसी श्रद्धा एनामें ढूंढ़ने लगे। इस ढूंढ़-खोजका यह परिणाम हुआ कि धीरे-धीरे उनमें अन्तर पड़ने लगा। एना अपने समाजके नियमानुसार अपने पुरुष मित्रोंसे अच्छी तरह मिलती-जुलती थी, उनके साथ नाटक-सिनेमा देखने जाती, टेनिस-हाकी खेलती,

राग-रंगकी पार्टियोंमे शामिल होती तथा हवाखोरीके लिये भी चली जाया करती थी।

बेचारे मिश्रजी घरमे चुपचाप बैठे अपने भाग्यको रोया करते और सोचते, क्या यह वही एना है, जो विवाहके पहले थी? उस समय इसे मेरे सिवा संसारमें और कुछ भी नहीं सूझता था, पर अब तो वह मेरी ओर आंख उठाकर देखना भी पसन्द नहीं करती; चौबीसों घण्टे मुझसे दूर-दूर भागी फिरती है। यदि थोडी देरके लिये घरमे आती भी है, तो माथा थामके बैठ जाती है। नाना प्रकारके बहाने बनाती है और मुफ्तमे मुझे परेशान करती रहती है।

यों ही दुःखसे दिन बीत रहे थे कि एक दिन सचमुच एना बीमार होकर घर लौटी। उसका चेहरा लाल हो रहा था, सिर-मे जोरोंका दर्द था। डाक्टर आया, उसने कहा—मियादी बुखारके लक्षण मालूम होते हैं। सावधानीसे काम लेना चाहिये। वह दवा दे गया, पर उससे कुछ लाभ नहीं हुआ। बुखार तेजही होता चला गया, यहांतक कि तीन दिनतक उसे अपने तन-बदन की भी सुध नहीं रही।

अन्तमे चौथे दिन उसके खूब जोरोंकी गोटी निकल आयी। चेचक निकलते ही उसके मां-बापने भी वहां आना बन्द कर दिया। उसके मित्र तो पहले ही रफू-चक्कर हो चुके थे। बेचारे

मिश्रजी जी-जानसे उसकी सेवामे लगे हुए थे। यद्यपि वे भी अकेले घबरा उठे थे, पर करते तो क्या करते? वे उसे अस्पताल अवश्य भेज सकते थे, पर एना किसी तरह भी अस्पताल नहीं जाना चाहती थी।

कात्यायिनीने जब उन लोगोंकी यह दुर्दशा देखी तब उससे चुप नहीं रहा गया। वह यहा चली आयी और एनाकी सेवा-सुश्रूषाका भार अपने ऊपर लेकर उसने मिश्रजीको इस विपत्ति-से छुट्टी दे दी।

वह दिन-रात एनाकी सेवा करती थी। अपना खाना-पीना छोड़कर वह उसकी चारपाईके पास आसन जमाके बैठ गई। लगातार पन्द्रह दिनोंकी मेहनतके बाद एना पथ्य पानेके योग्य हुई।

पण्डितजी एनाका यह भाव-परिवर्तन देखकर मन-ही-मन पुलकित हो रहे थे और एक अभावनीय सुखका अनुभव कर रहे थे। कुछ देर इसी तरहकी मौन भाषामें बातचीत होनेके बाद एनाने मुँह खोला और बहुत ही क्षीण स्वरमे बोली—महाराज, मैं एक भीख चाहती हूँ और आशा करती हूँ, कि आप मुझे निराश न करेंगे।

पण्डितजीने कहा—प्यारी एना, मेरे पास ऐसी कौनसी वस्तु बची हुई है, जो मैंने तुमसे अलग बचाकर रख छोड़ी है?

एना—अवश्य एक चीज आपने मुझसे अलग रखी है और वह चीज मुझपर विश्वास करना है। यह ठीक है, आप मुझे हृदयसे चाहते हैं, पर मेरा मन यह कह रहा है, कि मैंने आपको प्यार तो किया जिसका बदला भी आपसे पाया, पर मैंने कभी अपनेपर विश्वास करनेका आपको मौका नहीं दिया इसीसे वह मैं आपसे पा भी नहीं सकी। पर अब मैं अवश्य ही इसकी अधिकारिणी बननेका प्रयत्न करूँगी और यही भिक्षा मैं आपसे चाहती हूं।

एनाकी इस तरहकी सरल और पवित्र बाते सुनकर पंडित-जी गद्गद् होगये और उसके प्रति जो भी दुर्भाव उनके मनमें था, वह एकदम तिरोहित हो गया।

एनाने कहा—मैंने इसाई परिवारमे जन्म लिया और उन्हीं

के द्वारा मेरा लालन-पालन हुआ। युवा होनेपर यद्यपि आपका सहवास मुझे काफी प्राप्त हुआ, पर मेरा झुकाव अधिकांशरूपमें अपने समाजके लोगोंकी ओर ही रहा, जिसमे त्यागकी अपेक्षा भोगकोही प्रधानता दी जाती है। यदि मैं अचानक इस सांघातिक रोगसे पीड़ित न हो जाती, तो सम्भव है मेरी आखे कभी न खुलतीं और मैं उसी ओर बढ़ती चली जाती। पर इस बीमारीने मुझे एक ऐसा अवसर प्रदान किया कि जिससे मैं हिन्दूधर्मके उस महत्वपूर्ण त्यागका मूल्य समझ सकी जो खासकर हिन्दू देवियोंमें आज भी पूर्ण रूपसे विद्यमान है।

हम लोगोंने बहिन कात्यायिनीसे स्वार्थवश जो वर्ताव किया था, उसे देखते उन्हें हमारी भलाईके लिये अपनी जानको जोखिममे डालकर मेरी इस साघातिक बीमारीमें इस प्रकार की सेवा करनेकी बातका तो ध्यान भी नही किया जा सकता, उल्टा उनका यह चाहना उचित होता कि मैं यों ही अकेली तड़प-तड़पकर मर जाती; पर नहीं, उनके हृदयमें शुद्ध हिन्दू धर्मका प्रभाव वर्तमान था—जो दूसरोंको दुःखी देखना किसी अवस्थामे भी सहन नहीं कर सकता—फिर भला हमारे जैसे निकटस्थ परिजनोंका कष्ट वे कैसे सहन कर सकती थीं।

"पण्डितजी, मै आपसे क्या कहूँ? अपने प्राणोंके भयसे माता-पिता तकने मुझे त्याग दिया; फिर बन्धु-बान्धावोंकी

तो बात ही क्या, सिर्फ आप ही एक ऐसे मनुष्य थे, जो मेरे लिये अपने प्राणोंकी बाजी लगाये मेरे पास बैठे रहे। परन्तु धन्य है हिन्दूधर्म और उसका नारी-समाज जो नाना प्रकार की लांछना सहन करनेपर भी अपने पतिको देवतासे भी अधिक माननेकी शिक्षा देता है ऐसे हिन्दू धर्मको आदर्श माननेवाली कात्यायिनी देवी भला अपने पतिका ऐसा संकट देखकर भी कब चुप बैठी रह सकती थीं ?

मै आपसे क्या कहूँ, उन्होंने इस बीमारीमे मेरी जो सेवा की है वह शायद एक माता 'अपने प्यारे बच्चेकी भी नहीं कर सकती, फिर मेरी तरहकी एक सौतकी दूसरी सौतसे होनी तो असम्भव बात है।

❀ ❀ ❀

एना अब बिलकुल स्वस्थ हो चुकी है। अब उसके रहन-सहनका ढङ्ग एकबारगी ही बदल गया है। वह अब गिरजा घर नहीं जाती, ईसाई धर्मपर ही उसकी रुचि नहीं रही है, वह कात्यायिनीसे श्रीमद्‌भागवत-गीताका अध्ययन कर रही है। कात्यायिनी अब पण्डितजीके पास ही चली आयी हैं।

एनाने पहले-पहल जब कात्यायिनीसे एक साथ रहनेका प्रस्ताव किया, तो वह किसी हालतमें उसे स्वीकार नहीं करती थीं, पर पण्डितजीके आग्रहसे उसे यह स्वीकार करना पड़ा।

एना अब भारतीय महिलाओं की तरह रहने लगी है। उन्हींकी तरह खाना-पीना, उन्हींकी तरहके वस्त्र और उसी ढंगसे घर-गृहस्थीका काम चला रही है। यद्यपि उसके साथ मिलकर रहनेमे आरम्भमें कात्यायिनीको कई तरहकी अड़चने उठानी पड़ीं, पर एनाके स्वच्छ आचरणोंसे धीरे-धीरे वह बहुत कुछ उदार बन गयीं और अब उनकी गृहस्थीका एक ऐसा साधारण रूप हो गया जो बाहरसे देखनेवालोंको एक हिन्दू परिवारके सिवा और कुछ दिखाई नहीं पड़ता।

कात्यायिनी अब एना की सौत न होकर उसकी माताकी तरह घरमें रहती थीं। पण्डितजीके साथ भी उसका पति-पत्नी का व्यवहार न होकर एक साथीका-सा ही वर्ताव हो रहा था। माहेश्वरीको एना अपनी औरसजात पुत्रीकी तरह मानकर उसका लालन-पालन कर रही थी।

यद्यपि इस परिवारमे चार व्यक्ति थे। पर उन चारोंने परस्पर एक दूसरेको इतना अधिक समझ लिया था कि अब वे चार व्यक्ति होते हुए भी एकसे ही हो गये थे; एकको किसी तरहका सुख-दुख होनेसे उसका अनुभव उन चारोंको ही होता था।

पण्डितजी अपने अध्ययन-अध्यापनमें लगे हुए थे तो कात्यायिनी घर गृहस्थीका काम सम्हाले हुए थी। उसी समय एना माहेश्वरीके लालन-पालन और शिक्षा दीक्षामे अपना सारा समय

लगा रही थी। माहेश्वरी अब कात्यायिनीसे भी एनाके ही अधि-काधिक निकट होती जा रही थी।

एनाके माता-पिता भी एनाकी बीमारीके समयके अपने बर्तावसे इतने लज्जित हो गये थे कि अब उनका परस्परका सम्बन्ध एक दूरस्थ बन्धुकी तरह ही रह गया था। पर उनके प्रेममें कोई कमी नहीं होने पायी थी। इसका खास: कारण था एनाकी निश्छल उदारता।

एनाने कात्यायिनीसे अर्थ सहित गीता पढ़ डाली तथा उसका मर्म भी बहुत कुछ समझ लिया, साथ ही आद्योपान्त रामायण का भी अध्ययन कर लिया। धीरे-धीरे उसने महाभारत आदि अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थोंका भी अवलोकन किया। आजकल वह उपनिषदोंका अध्ययन कर रही है। जैसे-जैसे वह इन ग्रन्थोंको पढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उसका विश्वास हिन्दू सभ्यतापर दृढ़ होता जा रहा है। रात्रिके समय सब कामोंसे छुट्टी पाकर यह परिवार नित्य एक डेढ घण्टा धार्मिक ग्रन्थोंकी आलोचना प्रत्या-लोचनामें लगाता है। इस वार्तालापसे एनाका हिन्दू धर्मपर प्रगाढ़ विश्वास जमता जा रहा है। साथ ही माहेश्वरीके ऊपर भी इसका असर पड़े बिना न रहा। यद्यपि इस वार्तालापके बीचमें तो वह कुछ नहीं बोलती, पर एना जब उसे पढ़ाने बैठती है तब वह प्रायः इन बातोंकी भी पूछ-ताछ करती रहती है, जिस-

से उसके मानसिक विकासका बहुत कुछ पता चल जाता है।

जो परिवार चारों ओरसे अशान्त हो रहा था, वह एक कुशल गृहदेवी—श्रीमती कात्यायिनीकी—हिन्दू धर्ममे प्रगाढ़ श्रद्धाके कारण पूर्ण सुखका अनुभव करने लगा।

छठा अध्याय

सुखके दिन जाते देर नहीं लगती। मिश्रजीके सुखी परिवार के दिन भी चलती हुई रेलगाडीके बगलके वृक्षोंकी तरह पीछेकी ओर दौड़ते चले जाते थे।

माहेश्वरी अब अपनी उमरके १४ साल पूरे करके पन्द्रहवेंमे पाँव रख चुकी थी। उसकी आरंभिक शिक्षा समाप्त हो चुकी थी। वह कालेजमें पढ़ रही थी। यद्यपि मिश्रजीके घरके भीतर पूर्ण हिन्दू परिपाटीके अनुसार ही कार्य चल रहा था। पर बाहर आज भी लोग इन्हे इसाई ही समझ रहे थे; क्योंकि उनकी चाल ढाल और पहनावा सब अंग्रेजी ढङ्गका ही था। फर्क सिर्फ इतना था कि एना गाउन और ऊँची एडीके जूते न पहनकर स्लीपर और साड़ी ही व्यवहार करती थी। कात्यायिनी और माहेश्वरी-का भी यही वेश-भूषा था।

यद्यपि आचरणमें ये लोग शुद्ध हिन्दू थे। पर समाज इन्हें अब भी अपनेसे दूर ही समझता था। उधर इसाइयोंसे भी इनका मेल नहीं खाता था। क्योंकि उनके सामाजिक नियमोंको

ये कतई नहीं मानते थे। इसीसे इनकी सामाजिक अवस्था बहुत ही नाजुक हो रही थी। पर यह परिवार इनकी बिलकुल परवाह नहीं करता था। यदि इसमें कभी कुछ व्याघात होता था तो वह माहेश्वरीके विवाहके विषयकी चिन्ता थी जिसका एना बहुत थोडेमे समाधान कर देती थी।

इसी तरह और भी तीन साल बीत गये। अब माहेश्वरी बी० ए० पास करके कानून पढ रही है। यों तो माहेश्वरी बाल्यकालसे ही बहुत सुन्दर थी, पर अब युवावस्था प्राप्त करके तो वह सुन्दरताकी मूर्त्ति ही बन गयी। साधारणतया पढी-लिखी लडकियाँ अपने आपको दूसरोंसे बहुत ऊँचा समझने लगती हैं, फिर यदि परमात्माने उन्हे रूप भी दे दिया हो तो उनके पैर जमीनपर नहीं टिकते, पर माहेश्वरीमे यह बात नहीं थी। उसमे विद्या और रूप दोनों एक साथ रहनेपर भी वह बिलकुल निरभिमान थी। सादगीकी साक्षात् मूर्त्ति थी। उसका चेहरा इतना भोला-भाला था कि युवती हो जानेपर भी वह एक नन्हीं-सी बालिका ही दिखाई देती थी। फिर भी हर समय उसका हँसता हुआ मुख तो लोगोंको और भी अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। उसका अपनी सहपाठिनोंके साथ ही नहीं, सहपाठियोंके साथ भी काफी मेल-जोल था। मिस्टर घोस्ट या महाशय घसीटूसे तो मेल-जोल और भी अधिक बढ़ रहा था।

माहेश्वरी यह बात पहलेसे ही जानती थी कि मिस्टर घोस्ट का जन्म एक नीची जातिमे हुआ है। पर जिस वातावरणमे वह इतनी बडी हुई है, उसकी शिक्षा-दीक्षाके प्रभावसे इस तरहकी बातोंका उसके मनपर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ सकता। वह उनके गुणोंपर लट्टू हो रही है। कालेज भरके छात्रोंमे उसे मि० घोस्टके जोड़का कोई नजर ही नहीं आता था। यद्यपि उसका रग कुछ काला है पर हुआ करे, इससे क्या बनता बिगड़ता है। उस काले रंगमे एक ऐसी लुनाई और प्रतिभा दिखाई दे रही है कि जो गोरे रंगमे भी बहुत कम रहती है। जो उसे देखता है उसका ध्यान उसके काले रंगपर न जाकर उसके चेहरेकी आभा-पर ही अधिक जाता है।

मिस्टर घोस्ट और मिस माहेश्वरीकी मित्रता दिन-दिन बढ रही थी। वे बराबर अवसर मिलनेपर एक दूसरेके पास निसं-कोच आते-जाते थे। घण्टों इधर उधरकी बातें करते रहते थे।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि बोर्डिङ्गकी अन्य छात्राएँ भी मिस्टर घोस्टको अपना एक खास हितू समझती थीं। इस-लिये उन दोनोंके इस वार्तालापके बीचमे प्रायः अन्य बालिकाएँ भी आ जाया करती थीं। इस तरह यह एक मण्डली सी बन जाती थी। इस मण्डलीमें सिर्फ पठन-पाठनकी ही चर्चा नहीं होती थी, बल्कि अन्य सामयिक बातोंपर भी खूब बहस-मुबा-

हसा होता रहता था। पर जो कुछ होता था, वह सब विनोद-पूर्ण ढगसे। कभी कटुता नहीं आने पाती थी। इस मण्डलीमें सिर्फ एक ऐसी बालिका थी जो बीच बीचमें कुछ गड़बड़ मचा दिया करती थी। उसका नाम सुशीला था।

मिस सुशीला एक धनी परिवारकी कन्या थी। रग-रूप भी कुछ बुरा नहीं था। पढने-लिखनेमे भी खूब तेज थी। साधारणतः उसका स्वभाव भी अच्छा था पर न जाने क्यों। मिस्टर घोस्ट और मिस माहेश्वरीकी मित्रता उसे अच्छी नहीं लगती थी। वह हर समय इसी उधेड़-बुनमें लगी रहती थी कि किस तरह इन दोनोंमें बिगाड कराया जाय।

एक दिनकी बात है। सरस्वती नामकी एक बालिकाने मि० घोस्टसे बाजारसे कुछ चीजे लानेके लिये अनुरोध किया था। साथ ही माहेश्वरीने भी कुछ फरमाइश की थी। दैवयोगसे सरस्वतीकी चीजे तो आ गयीं पर माहेश्वरीकी नहीं आयीं। जिसका खास कारण उस समय उस वस्तुका चेष्टा करनेपर भी न मिल सकना ही था।

सध्या समय जब इन सबकी मजलिस जमी, तब सुशीलाने माहेश्वरीकी चीज न लानेके कारण मिस्टर घोस्टसे इस तरहसे बातें कीं, कि उनको सुनकर हक-नाहक माहेश्वरीके मनमें मि० घोस्टके प्रति कुछ दुर्भावना उपस्थित हो। एक बार तो

माहेश्वरीका मन कुछ बिगड़ा भी, पर मिस्टर घोस्टके सरल भावसे उसका निराकरण कर देनेसे वह बात गयी-आई हो गयी।

इसी तरह सुशीला बीच-बीचमें उनके मनोंमें मैल पैदा करनेका प्रयत्न करती रहती थी।

इस कालेजमें जितने बालक बालिकाएँ पढ़ रहे थे, उनमें सभी इसाई या ब्राह्मसमाजी नही थे, उनमें पुराने बिचारके हिन्दू बालकोंकी संख्या भी काफी थी, पर बोर्डिंगके नियमानुसार वहां जाति-पाँति या छूआछूतका कोई भेद-भाव नहीं था। इसलिये यहाँ उन्हीं हिन्दू परिवारोंके बालक रहते थे जो इन बातोंसे परहेज नही रखते थे।

मिस सुशीलाके पिता ब्राह्मसमाजी थे और हाईकोर्टके एक माननीय जज थे, उन्होने बैरिस्टरी करते समय काफी रुपये इकट्ठे कर लिये थे, अब भी उनको अच्छा वेतन मिल रहा था। इसलिये सुशीलाका लालन-पालन बहुत लाड-प्यारमें ही हुआ था। अपने माता-पिताकी एकलौती कन्या होनेके कारण वह और भी स्वाधीन प्रकृतिकी बन गयी थी।

मिस्टर घोस्टके गुणोंपर रीझकर वह उनकी तरफ आकृष्टित होती चली जा रही थी; पर यह सब वह मन-ही-मन कर रही थी न तो कभी उसने अपना यह भाव शब्दोंमें व्यक्त किया न

अपने किसी काम-से ही प्रकट होने दिया। हां, इसी भावनाके वशीभूत होकर वह माहेश्वरीसे अवश्य डाह करने लगी थी, क्योंकि मिस्टर घोस्ट और मिस माहेश्वरीका प्रेम व्यवहार बहुत कुछ खुल्लमखुल्ला ही हो रहा था।

सुशीला सयानी हो चुकी है। उसके माता पिताकी भी यह इच्छा है कि अब उसे किसी सत्पात्रके हाथ सौंपकर वे लोग निश्चिन्त हो जाय। यद्यपि जजसाहब पक्के ब्राह्मसमाजी हैं, तथापि अपने समाजकी बहुत-सी विदेशी भावना पूर्ण निरर्थक रीति-रस्मोंसे वे ऊबसे गये हैं। उन्हे सबसे अधिक जो बात अखरती है, वह सयाने अविवाहित लड़के-लडकियोंका अबाध रूपसे एकान्तमें मिलना-जुलना है। इसी विचारसे वे अपने यहा बिना किसी खास मौकेके हरएकको नहीं आने देते थे।

सातवां अध्याय

सुशीलाको इस तरह युवकोंसे बचानेकी गरजसे ही वे उसे कालेज के होस्टलमे रखते, पर लडके और लडकियोंका बोर्डिङ्ग पास ही पास रहनेके कारण अध्यक्ष लोगोंकी दृष्टिमें जो युवक चरित्रवान विदित होते, उन्हे समय-समयपर जाने-आने दिया जाता। ऐसे युवकोंमे एक मिस्टर घोस्ट भी थे।

गर्मियोंकी छुट्टीके कारण कालेज बन्द हो चुका है। सुशीला आजकल कलकत्तेमे ही अपने घरपर है। एक दिन उसने मिस्टर घोस्टकी सच्चरित्रताका बखान करके अपने पितासे उन्हे अपने घर आमन्त्रित करनेका अनुरोध किया। जज साहबने उसका कहना मानके उन्हें अपने यहां भोजनके लिये कहला भेजा। सन्ध्या समय मि० घोस्ट अपने सीधे-सादे स्वभावके साथ बिल्कुल साधारण वस्त्रोंमें ही वहां आ मौजूद हुए। मामूली शिष्टाचारके बाद सुशीलाने उनका अपने माता-पितासे परिचय कराया, मिस्टर घोस्टने बहुत शीघ्र ही उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर लिया। जज साहब उनके उत्तम व्यवहार और विद्वता

को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। जितनी देर वे उनके यहा रहे उनके आचरणमे उन्हे ऐसी एक भी बात दिखाई नहीं दी जो उनके चरित्रकी महत्तामे जरा भी शङ्का उत्पन्न करे।

रातको बहुत देर-बाद जज साहबने बड़ी प्रसन्नतासे उन्हे विदा किया और जबतक वे कलकत्ते मे रहे बीच-बीचमे अपने यहा आते रहनेका अनुरोध किया।

× × × ×

मिस्टर घोस्ट अपनी कानूनकी पढाई पूरी करके घर लौट आये हैं। पादरी साहबकी सिफारिशसे वे डिप्टी बना दिये गये है। वेतन भी उन्हे काफी मिल रहा है।

सुखियाकी बहुत दिनोंकी आश आज पूरीहुई है,जबसे उसका घसीटू कलकत्ते कानून पढने चला गया, तबसे सरकारसे उसे जो सहायता मिलती थी वह अधिकाश उसकी पढ़ाईमें ही खर्च-हो जाया करती थी। उसमेंसे सुखियाके लिये बहुत थोड़ा बचता था, पर सुखियाके ऐसा लम्बा-चौड़ा खर्च ही क्या था? वह अकेली थी, सब काम धन्धा अपने हाथसे कर लेती थी। इस-लिये उस थोड़ेसे मेंही उसका काम चल जाता था वैसे तो उसने पहले कुछ बचा भी लिया था।

मिस्टर घोस्ट अब हाकिम हो चुका था, इसलिये उसको अपने पदके अनुसार ही अपना रहन-सहन बनाना पड़ा।

उसने शहरके बाहर एक छोटा-सा बंगला लिया, जिसके चारों ओर फुलवाड़ी लगी हुई थी। एक टमटम खरीदी, माली, सईस तथा अन्य नौकर-चाकरोंका भी प्रबन्ध किया। सारांश एक डिप्टी साहबकी मान-मर्यादाके अनुसार उसे सारा ठाट-बाट रचना पड़ा।

पाठक अनुमान कर सकते हैं कि जो मनुष्य जन्मसे पावों-तले कुचला जाता रहा हो, यदि उसे अपने अनुमानसे बहुत अधिक मान मिल जाये तो उसके आनन्दका ठिकाना नहीं रहता। सुखिया अब वह चमारिन सुखिया नहीं है। लड़केके बहुत समझाने-बुझानेसे वह सभ्य-समाजकेसे वस्त्र पहनने लगी है। आरम्भमें तो उसे यह भेष बनाते समय अपने आपपर बहुत लज्जा मालूम होती थी। पर मिस्टर घोस्टके यह कहनेसे कि वह एक हाकिमकी मा है, यदि उसके पद और गौरवके अनुसार उसकी माताका रहन-सहन नहीं होगा तो लोगोंकी दृष्टिमें उसको बहुत नीचा बनकर रहना पड़ेगा, इसलिये वह अच्छे साफ कपड़े पहनने लगी थी।

मिस्टर घोस्ट लाख हाकिम हो गया था, पर अब भी वह अपनी असलियतको नहीं भूला था। वह जानता था, यह पद-मर्यादा मुझे बहुत महँगे दामोंमें मिली है। यदि मैं अपना प्यारा धर्म नहीं छोड देता तो इस स्थानतक पहुंचना मेरे लिये कठिन

ही नहीं असम्भव था।

यद्यपि वह इसाई धर्म कबूल कर चुका था और लोग उसे इसाई ही समझते थे, पर उसकी इस धर्ममे तिलमात्र भी आस्था नहीं थी। यों तो यह धर्म स्वीकार कर लेनेके कुछ दिन बादसे ही उसको इसका खोखलापन मालूम हो गया था, पर मिस माहेश्वरीके साथकी धार्मिक चर्चाने उसे पक्का हिन्दू बना दिया था। अन्य नाना प्रकारके वाद-विवादोंके साथ-साथ माहेश्वरी-से धार्मिक विषयकी भी काफी चर्चा होती रहती थी। श्रीमती कात्यायिनी देवीके हिन्दू धर्मके सारगर्भित उपदेशोंसे मिस माहेश्वरीके संस्कार इतने दृढ़ हो चुके थे कि मिस्टर घोस्टके काफी खण्डन-मण्डन करनेके बाद भी उसीकी विजय होती थी, इस-लिये मिस्टर घोस्टको अपनी माताकी कही हुई पुरानी धार्मिक कहानियोंकी स्मृति बराबर ताजी बनी रहती और वह धीरे-धीरे हिन्दू-धर्मका पक्का अनुयायी बन गया था।

घर लौटनेके बाद मिस्टर घोस्टने अपना बाहरी आडम्बर अपनी वर्तमान मर्यादाके अनुसार जब सब तरहसे ठीक कर लिया, तब उसने हिन्दू धर्मका मनोयोग-पूर्वक अध्ययन करना आरम्भ किया। सबसे पहले उसने स्मृतियोंको पढ़ा और अपने अदालती फैसलोंमें अंग्रेजी कानूनकी मर्यादा रखते हुए उसने हिन्दू स्मृतियोंको ही अपने फैसलोंका आधार बना लिया।

आजकलके चालू अदालती नियमोंके अनुसार ही वह सब कार्यवाही करता था। पर फैसला देते समय उसका ध्यान असामी और फरयादीकी वास्तविक नीयतपर ही अधिक रहता था। यदि उसे यह विश्वास हो जाता कि वादी अपने गवाहों या सबूतोंके जोरसे प्रतिवादीको ठगना चाहता है तो वह वकीलों की बातोंको इस तरह काट देता था कि असली बात साफ-साफ दिखलाई देने लगती थी। उसी तरह प्रतिवादीकी धाँधलीको भी वह तर्कके द्वारा काटकर वादीका पक्ष साफ-साफ प्रकट कर देता था।

मिस्टर घोस्टकी इस नीतिसे आरम्भमें तो कुछ कड़ी आलोचनाएं हुईं, पर जब ऊंची अदालतोंमें जाकर उसके फैसले ही ठीक समझे गये तो उसकी वहां पूरी धाक जम गई। पहले जहां अपना पक्ष समर्थन करनेमें वादी-प्रतिवादीके वकीलोंको घण्टों बहस करनी पड़ती थी, वहां अब थोड़ेसे वाद-विवादके बादही मामलेकी असलियत प्रकट हो जाती थी।

मुकदमा लड़नेवाले फरीकोंमे भी इस नीतिका काफी असर पड़ा। कुछ दिनों बाद वहां झूठे मुकदमोंकी संख्या बहुत घट गई। जो लोग झूठी गवाहियोंके जोरसे झूठेको सच्चा और सच्चेको झूठा बनाकर अपनी दाल-रोटी चलाते थे, उनका रोजगार एक दमसे मारा गया।

आठवां अध्याय

मिस्टर घोस्ट हाईकोर्टके जज बनाके कलकत्ता भेज दिये गये। वे अलीपुरमें एक बगला किरायेपर लेकर अपनी माँके साथ वहीं रहने लगे। सुखियाकी यह इच्छा प्रबल हो उठी कि अब घसीटूको विवाह करके मेरे सामने बहूको ले आना चाहिये। पहले तो वह दबी जबानसे ही कहा करती थी पर अब सब बाते खुलासा होने लगीं।

सुखिया एक दिन मनमें दृढ़ सकल्प करके सध्याके समय कोठीके बाहरके बगीचे मे बेटेकी कुर्सी के सामने अपनी कुर्सी सरकाकर बैठती हुई गम्भीरता पूर्वक इस विषयकी बात छेडकर बोली—देखो घसीटू, अब तुम बच्चे नहीं हो, भगवानकी कृपासे मेरे मनकी और तो सब साध पूरी हो गयी। अब जो एक साध और बाकी है उसे भी पूरी कर दो। तुम एक अच्छी सी लड़की देखकर विवाह कर लो।

घसीटू—मां, मैं भी अब सब तरफसे निश्चिन्त हो गया। तुम्हारी इस आज्ञाकाभी शीघ्र ही पालन करनेका प्रयत्न

करूँगा।

सुखिया—उस दिन वह लड़की जो अपनी माँके साथ तुम्हें बधाई देनेके लिये आयी थी, उसका अच्छासा नाम था—क्या!

घसीटू—क्या सुशीलाकी बात कह रही हो।

सुखिया—हाँ, हाँ, उसका यही नाम था—वह तो बड़ी अच्छी लड़की है। उसकी माका भी कुछ ऐसा ही रुख मालूम हो रहा था।

घसीटू—माँ वे लोग ठहरे बड़े आदमी, अब तो उनका रुख अनुकूल मालूम दे रहा है, पर विवाह हो जानेके बाद सारे घरमें अशान्ति मच जायगी।

सुखिया—क्यों, अशान्ति क्यों मच जायगी? वे तो दोनों मां-बेटी बहुत ही भले स्वभावकी मालूम दे रही थीं।

घसीटू—नहीं मा, तुम जैसा समझती हो सुशीला वैसी शान्त लडकी नहीं है। इस समय वह किसी मतलबसे ही ऐसी सीधी-सादी बनी हुई है। मैं उसे बहुत दिनोंसे जानता हूँ। वह बड़ी नटखट है।

सुखिया—बेटा, तुम कहते हो तो ठीक ही होगा। मैं क्या जानूँ मैं तो उसका सुन्दर चेहरा और मीठी-मीठी बातें सुनकर उसे भली कह रही थी।

घसीटू—अच्छी माँ, इस विषयको अब हम यहीं खत्म करना चाहिये क्योंकि अब सवा छः बज चुके हैं। श्रीमती एना और माहेश्वरीसे साढ़े छः बजे आनेका समय निश्चित किया हुआ है। इसलिये अब रसोइयेको आज्ञा दो कि उनके चाय-पानीका प्रबन्ध कर दे। मैं भी उनके बैठनेके लिये बैठकखाना ठीक करा देता हूँ।

इतना कहकर मिस्टर घोस्टने नौकरको बुलाकर सारी बाते समझा दी। उधर सुखियाने रसोइयेको चाय तथा खाने-पीनेका प्रबन्ध करनेका आदेश दे दिया।

ठीक साढ़े छः बजे श्रीमती एना मिस माहेश्वरीके साथ आ पहुंची। एना तो अपने सीधे सादे वेशमे ही थी, पर आज मिस-माहेश्वरीका वेश-भूषा देखने ही योग्य था। यह बात नहीं थी कि वह बहुत भडकीले वस्त्र पहिनकर आई थी। उसके वस्त्र तो बिलकुल साधारण ही थे। पर उसके भरे हुए सुन्दर शरीरपर वे इतने भले लग रहे थे कि देखनेवालोंका मन स्वतः ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता था।

सुखिया हाईकोर्टके एक जजकी माता होनेके कारण प्रायः उसके यहाँ सभ्य समाजके भाँति-भाँतिके लोग आया करते थे। उनमें महिलाएँ भी रहती थीं। उन महिलाओंमें अधिकांश अपने बनावटी वेश-भूषाके फेरमें ही पड़ी मालुम होती थीं। सबके मुँह

पाउडरसे रँगे हुए, बाल नाना प्रकारसे सँवारे हुए, इतर तेलसे सुवासित वस्त्रोंकी तो बात ही मत पूछिये। नयेसे-नये डिजाइन जो कल ही बाजारमें आये हैं, उनके शरीरपर रहते थे। सुखिया इनकी चटक-मटकको बहुत पसन्द नहीं करती थी। उसे उनकी सब बातें दिखावटी जँचती यहाँ तक कि उनकी हँसीतक उसे सोलहों आने बनावटी मालूम होती। पर आज इन दोनों महिलाओंको वह उन सबसे भिन्न रूपमें देख रही है, न इनके मुँहपर पाउडर पुता हुआ है और न और किसी तरहका बनावटीपन ही है। दोनोंके ही स्त्री स्वभाव-सुलभ नेत्रोंमें लज्जा नाच रही है। जब बात करती है तब उनका प्रत्येक शब्द मानो हृदयके अन्तस्तलसे छूकर निकल रहा हो; प्रसङ्गवश जब कभी वे हँसती हैं तो मानो मुँहसे फूल झड़ पड़े हों। खासकर मिस माहेश्वरी की ओर तो वह और भी अधिक आकर्षित हो गयी थी। क्योंकि उसका चेहरा इतना भोला-भाला और सुन्दर था कि उसे देखकर कोई भी यह अनुमान नहीं कर सकता कि यह इतने ऊँचे दर्जेकी विदुषी है।

मिस्टर घोस्ट अपनी मासे मिस माहेश्वरीकी प्रायः चर्चा किया करता था। जिसमें उसकी विद्या, बुद्धि, स्वभाव, सरलता आदिकी काफी प्रशंसा रहती थी। आज उन सुनी हुई बातोंको वह अपनी आंखोंके सामने हूबहू देख रही थी।

कार्तिकका महीना था। सूर्य्यास्तके बादसे ही बाहर बगीचे-मे कुछ ठण्ड-सी मालूम पड़ने लगी थी। मिस्टर घोस्टने मिस माहेश्वरीको सम्बोधन करके कहा—अब बाहर ओस पडनेका समय हो गया है। हम लोगोंको भीतर चलना चाहिये। सब यही चाहते थे सिर्फ किसीके कहने भरकी देर थी। इधर नौकरने भी भोजन तैयार होनेकी सूचना दी।

सब कोठीके भीतर बैठक खानेमें चले गये। सबने आनन्द-पूर्वक भोजन किया। बादमें बहुत देरतक नाना प्रकारकी आलोचना-प्रत्यालोचना होती रही। अन्तमे लगभग ९ बजे दोनों महिलाओंने विदा ली। मिस्टर घोस्ट उन्हें दरवाजेतक पहुंचा आये।

नवाँ अध्याय

ब्रिटिश साम्राज्यके दूसरे नम्बरके शहर कलकत्तेकी भारतमे ही नहीं, सारे संसारमे ख्याति है। वह महलोंका शहर कहलाता है। उसमे चौड़ी और लम्बी-लम्बी सड़कें हैं, जो तारकोलकी ढली हुई शीशेकी तरह चमकती हैं। असख्य ऊ ची-ऊंची अट्टालिकाए विजलीकी रोशनीसे आलोकित रहती हैं। राजपथ रात-दिन मनुष्योंसे इस प्रकार भरे रहते है कि चलनेवालोंके कन्धे-से-कन्धा भिड़े बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता। व्यापार-का तो कहना ही क्या? करोडोंका नित्य वारा न्यारा होता रहता है।

एक ओर आसमानसे वाते करनेवाले जहाँ सैकड़ों बड़े-बडे जहाज माल उतार और चढ़ा रहे हैं। वहाँ दूसरी ओर विशाल-काय रेले सैकडों डिब्बोंमे भरकर माल ला और ले जा रही हैं। रास्तेके दोनों ओर हजारों दूकाने खुली हुई है, जिनमे भिन्न-भिन्न प्रकारके सब तरहके माल सजे हुए हैं। प्रत्येक दूकानमे इतने ग्राहक दिखाई दे रहे हैं कि दूकानदारोंको सर ऊँचा करने-

की फुर्सत नहीं है। ऐसा मालूम हो रहा है कि मानों सोने-चाँदी की नदी बह रही है। इस अमरपुरीको दूरसे देखनेवालोंको ऐसा ही मालूम होता है मानो यहाँ सभी कुबेरके समान धनी-ही धनी बसते हैं। पर इसी शहरमे ऐसे भी स्थान मौजूद हैं, जहाँ मनुष्योंकी तो कौन कहे, पशु भी रहना पसन्द नहीं करेंगे। ऐसे ही स्थानोंमेंसे एक जगह पाठकोंको हमारे साथ चलना होगा। यों तो इस तरहके नरक-कुण्ड इस विशाल नगरीके चारों ओर ही वर्त्तमान हैं। पर इस समय हमे जहाँ जाना है वह बीच शहर से करीब एक माइल पूरबकी ओर है। यह स्थान सियालदहसे डायमण्ड हारबर जानेवाली रेल लाइनके ठीक नीचे पश्चिम-की ओर है। साधारण भाषामे इसे लोग बस्ती कहते हैं।

ऐसी बस्तियाँ प्रायः धनाढ्य जमींदारोंकी बसायी होती हैं, जो जमीनका लगान लेकर रहनेवालोंको अपने घर बनाकर रहने देते हैं।

इन बस्तियोंमें दो तरहके लोग रहते हैं। एक तो वे जो अपना घर खडा करके आपही उसमें रहते हैं। दूसरे वे जो भाडा उप-जानेके लिये कच्चे घर बनवा देते हैं जिनमें कई कोठरियाँ रहती हैं। प्रत्येक कोठरीमे एक-एक परिवार तीन-चार रुपया मासिक भाड़ा देकर रहता है।

इन बस्तियोंमें न तो पूरी रोशनी ही रहती है, न सफाईका

ही उचित प्रबन्ध रहता। किसीमे तो एक छोटा सा जल कल रहता है, जो पूरा पीने भरका भी पानी नहीं दे सकता। जलार्थियोंको दो-दो घण्टे वहाँ अपने नम्बरके लिये बाट जोहनी पड़ती है। तिस पर भी बादमे आनेवालोंको बहुत बार योंही लौट जाना पड़ता है। क्योंकि कारपोरेशनका पानीका कल दिन भर नहीं चलता। इन बस्तियोंके जलका आधार एक छोटा सा तालाब या डोबा रहता है, जो इतना गन्दा होता है कि मनुष्योंकी तो कौन कहे पशु भी उसमें पानी पीते सकुचाते हैं। पर लाचार इन मनुष्य नामधारी पशुओंको इसीसे अपनी आवश्यकता पूरी करनी पड़ती है।

यहाँकी कारपोरेशनको करोड़ों रुपये सालका टैक्स मिलता है। एकसे एक विद्वान् इसके कौंसिलर होते हैं,पर इन नरकतुल्य स्थानोंकी ओर वे आँख उठाकर भी नहीं देखते, फिर भला इन बस्तियोंके सर्वे-सर्वा मालिक जमींदार ही क्यों ध्यान देने लगे। उन्हे तो खजानेसे मतलब है। प्रजा चाहे मरे चाहे जीये उसकी वे क्यों परवाह करने लगे।

इन बस्तियोंके रहनेवाले अधिकांश गरीब लोग हैं। जो दिन-भर मेहनत करके चार छः आने कमाकर लाते हैं। सो भी रोज नहीं, कभी काम मिल गया तो ले आये, नहीं मिला तो यों ही लौटना पड़ा। जिस दिन पैसे मिल जाते हैं, उस दिन खूब ताड़ी

शराब उड़ाते हैं। जिस दिन पैसे नहीं मिलते उस दिन फाका करते हैं। इनमें कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें हफ्ता या मासिक वेतन मिलता है। ये लोग वेतन मिलने पर दो-चार दिन तो धन्ना सेठकी तरह खूब खोते-लुटाते हैं। बादमें काबुलियों द्वारा मोटे ब्याजपर रुपये उधार लेकर बाकी दिन बड़ी कठिनाईसे बिताते हैं।

हाँ, तो इसी बस्तीमें धनिया और उसकी स्त्री नथनी एक छोटा-सा घर भाड़ेपर लेकर रहते हैं। ये दोनों प्राणी उस बस्तीके पासकी ही एक चटकलमें काम करते हैं। धनियाको साढ़े तीन रुपये और नथनीको अढ़ाई रुपया हफ्ता उस चटकलसे मिलता है। साधारण अवस्थामें छः रुपया हफ्ता कुछ कम नहीं है। पर धनिया इतना अधिक नशा करता है कि हफ्ता पूरा होनेके दो दिन पहले ही उसके पास दाल-तरकारी खरीदनेके लिये भी एक पैसा नहीं बचने पाता।

दो दिन बाद ही हफ्तेके छः रुपये मिलेंगे इस आशापर वह काबुलियोंसे कुछ उधार लेकर अपना दैनिक काम चला लेता है; पर इन काबुलियोंके पंजेमें जो एक बार फँस जाता है फिर असलकी तो कौन कहे, ब्याजके पैसे भी नहीं चुका सकता। वे तो द्रौपदीके चीरकी तरह बढ़ते ही चले जाते हैं।

— —

दसवाँ अध्याय

नथनी के बच्चा होने वाला है, इसलिये अब वह अपने कामपर नहीं जा सकती। अकेले धनियाकी मजूरीसे घरका ही काम चलना कठिन था फिर ऊपरसे काबुलियों का डंडा तो हर समय सरपर तना ही हुआ था।

धनियाने अपनी परिस्थितिको समझा, उसे अपने कियेपर बहुत पश्चाताप हुआ। उसने अपनी बुरी आदतों को छोड़नेका प्रयत्न भी आरम्भ कर दिया पर वह कर्जमें इतना अधिक डूब चुका था, कि उसके लाख चेष्टा करनेपर भी इस आफतसे उसका पिण्ड नहीं छूटता था।

रविवारका दिन था। आज चटकल बन्द रहनेसे धनियाको कामपर नहीं जाना था। कल मजूरी का हफ्ता मिला था। उसके हाथमे पैसे थे। यदि अन्य समय होता तो आज वह यार दोस्तों-के साथ किसी ताड़ीखानेमें बैठा ताड़ी उड़ाता होता। पर अब वह ऐसा नहीं करता। उसे तो यह चिन्ता लग रही थी कि चाहे जैसे भी हो कर्ज चुका कर वह भले आदमियोंकी तरह अपना

जीवन बितावे। वह यह सब बातें सोच ही रहा था कि मियाँ करीम बख्श लट्ठ लिये उसके दरवाजेपर आ धमके।

मियाँ साहबसे उसने सिर्फ दस रुपये कर्ज लिये थे, जिसके बदलेमें दसकी जगह वह बीस रुपये दे चुका था, पर अब भी असल दस रुपये के सिवा साढे सात रुपये व्याजके भी उसे देने थे।

आगा साहबने आते ही डाटकर कहा। डाटकर कहा ही नहीं, साथ ही अपने हाथ की लकडीको भी जोर से जमीनपर पटका, जिसकी आवाज मात्र से गर्भवती नथनीके ही नहीं, उस हट्टे-कट्टे धनिया तकके प्राणकाँप गये। उसने कहा—तू रोज-रोज घुमाता है, आज हम अपना सब रुपया लेकर यहाँसे जायेगा।

धनिया पहले आगा साहबसे बहुत दबकर बात किया करता था, पर आज इस लाठीकी धमकके बाद न जाने कहाँसे उसमें साहस आ गया। उसने भी थोडा कड़ा होकर कहा—इतनी धौंस दिखानेकी कोई बात नहीं है। यों तो मैं तुम्हारे दस रुपयोंके बदले उससे दुगुना दे चुका हूँ, पर तिसपर भी जो कुछ तुम पावना बता रहे हो, मैं उसको पाई-पाई चुकाने को तैयार हूं। इस समय मेरी स्त्री गर्भवती होनेके कारण कामपर नहीं जा सकती। इसलिये उसकी मजूरी बन्द हो रही है, तिस-

पर भी मैं दो रुपये अभी दे रहा हूँ, इतना ही अगले हफ्तेमें दे दूँगा और इसी तरह बहुत शीघ्र तुम्हारा देना चुका दूँगा। यह कह कर झनसे धनियाने टेंटसे दो रुपये निकालकर उसके सामने फेंक दिये।

मियाँ साहबको यह कभी आशा नहीं थी कि इस तरह स्त्री की परवश अवस्थामें भी वह उसे रुपया दे सकेगा। वह तो उसे दबा हुआ समझकर ही धौंस जमाने आया था।

उसने सोचा यदि धनिया इस तरह दो रुपये सप्ताह देकर दो-अढाई महीनेमे उसका हिसाब साफ कर देगा, तो उसकी तो एक सोनेका अंडा देनेवाली बतक ही मर जायगी।

रुपया लौटाते हुए करीमबख्शने कहा—नहीं भाई मैं ऐसा निर्दयी नहीं हूँ जो तुम्हारे कष्टके समय तुम्हें दबाऊँ। तुम इन रुपयोंको अपने ही पास रहने दो। इस समय तुम्हारी स्त्रीको शीघ्र ही बच्चा होनेवाला है। इससे तुम्हे खर्च-बर्च करनेके लिये इनकी सख्त जरूरत पड़ेगी, पर धनियाने उसकी इन चिकनी-चुपडी बातोंपर जरा भी ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह इन मियाँ साहब को अबतक खूब अच्छी तरह पहचान चुका था।

आगा साहब जब अपने शिकारको किसी तरह भी फन्देमें नहीं फँसा सके तब रुपये उठाकर अपने रास्ते लगे। धनिया इस बलासे छुटकारा पाकर जब नथनीके पास आया तो वह

कहने लगी—आज रामू की मा आयी थी, वह कह रही थी तुम्हारी मौसीका लडका जज साहब हो गया हैं, आजकल दोनों मा-बेटा यहीं अलीपुरमे कोठी लेकर रहते है। लोग उनकी बहुत बड़ाई करते हैं, क्या तुम इनसे नहीं मिलोगी ?

मैंने कहा—बहिन वे ठहरे बडे आदमी हम गरीबोंकी उन्हे क्यों याद रहने लगी ? मैं वहाँ जाऊँ और वे निरादर करके घरमें ही न जाने दे तो फिर वहाँसे लौटना भी भार हो जाय।

वह कहने लगी—नहीं वे ऐसे आदमी नहीं हैं। आज चार पाँच दिनकी बात है कि उनके गॉवका एक आदमी उनके यहाँ कुछ सामान लेकर गया था। वह एक काठका सामान बेचने-वाली कम्पनीमें मुटियाका काम करता है। कम्पनीके यहाँसे जज साहबने कुछ मेज कुर्सियाँ खरीदी थी। वही लेकर वह गया था।

जब सामान रखकर वह लौट रहा था। उस समय कोठी के बाहर बगीचेमे तुम्हारी मौसी टहल रही थी। उसकी नजर उसपर पड़ गई। उसने उसी समय उसका नाम लेकर बुलाया—सरजू तुम यहाँ कहां ? उसने भी उन्हे पहिचाना। हाथ जोड-कर कहने लगा—चाची मैं यहाँ मजूरी करनेके लिये दो सालसे आया हुआ हूँ, पर तुम यहाँ कैसे आयीं ?

तुम्हारी मौसीने संक्षेपमें उससे कहा—लड़का पढ़-लिखकर

हाकिम हो गया है। उसीके साथ यहाँ रहती हूँ।

रामूकी माँ कहती थी—तुम्हारी मौसीने सरजूको उस दिन वहाँ रख लिया और जज साहबके अदालतसे लौट आनेतक उसे नहीं जाने दिया।

सन्ध्या समय जब जज साहब आये तो उसका परिचय पाकर उन्होंने भी उसका बहुत आदर किया और अपने साथ बैठाकर उसे खिलाया-पिलाया। रामूकी माँ कहने लगी—यह सब बातें मैंने सरजूसे सुनी है।

नथनीकी बात सुनके धनियाने कहा—कोई हरज नहीं। जब वे तुम्हारी सगी मौसी हैं तब तुम्हें उनसे अवश्य मिलना चाहिये।

पतिकी सम्मति पाकर नथनीकी अपनी मौसीसे मिलनेकी इच्छा और भी प्रबल हो गई। यद्यपि उसके शीघ्र ही बच्चा होनेवाला था और उसके घरसे अलीपुर प्रायः दो मील दूर था; पर इसकी उसने कुछ भी परवाह नहीं की और दूसरे दिन सूर्य निकलनेके पहले ही वह उनसे मिलनेके लिये घरसे निकल पड़ी।

ग्यारहवाँ अध्याय

मि० घोस्टको हाईकोर्टके जज बननेकी बधाई देनेके लिये जिस दिन सुशीला अपनी माके साथ उनके बंगलेपर गई थी और उसे बातों ही बातोंमे मिस माहेश्वरीके प्रति उनके असीम अनुरागका पता लगा था। उस दिनसे उसके स्वभावमे जमीन आसमानका अन्तर पड गया था। पहले उसका अनुमान था कि मिस माहेश्वरी सरीखी एक दरिद्र कन्याको वह अपने पिता की अतुल सम्पत्तिके बलपर अवश्य पराजित कर सकेगी। पर उसकी यह आशा दुराशामात्र सिद्ध हुई। मिस्टर घोस्टकी बातों से उसे पता चल गया कि प्रेम धनसे नहीं खरीदा जा सकता, उसे प्राप्त करनेके लिये किसी और ही वस्तुकी आवश्यकता होती है।

सुशीला सोचने लगी—वह और कौनसी वस्तु है जिसके जोरसे मनुष्यको अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है। अवश्य ही धन तो वह वस्तु नहीं है, न रूप ही वह वस्तु है, बनाव शृंगार भी वह वस्तु नहीं है, चिकनी-चुपड़ी बाते भी वह

वस्तु नहीं है। फिर माहेश्वरीमें ऐसी क्या विशेषता है जिससे मिस्टर घोस्ट उसकी ओर इतने झुके हुए हैं।

बहुत सोचनेपर भी सुशीला कुछ समझ न सकी। सुशीला की माता सरला देवी यद्यपि ब्रह्म-समाजी पिताकी पुत्री और ब्रह्मसमाजी पतिकी पत्नी थी। पर धार्मिक विचारोंमें आज भी उसका विश्वास प्राचीन हिन्दू-धर्मपर विशेष रूपसे जमा हुआ था। ब्राह्मधर्म उसे धर्म न जचकर एक आवश्यकता पूर्तिका साधनमात्र मालूम देता था। हो सकता है इसके प्रवर्तकोंमें आरम्भमें कुछ धार्मिक भावनाएँ रही हों,पर आज तो यह रूढ़ी मात्र बन गया है।

जो पढ़े-लिखे स्वतन्त्र मिजाजके मनुष्य उच्च शिक्षाके लिये विदेशोंमें जाकर इसाई बालिकाओंको पत्नीके रूपमें ग्रहण कर बैठते हैं और यहां लौटनेपर जब उन्हें अपने समाजमें जगह नहीं मिलती,तब अधिकांशमें वही लोग वाध्य होकर ब्रह्म समाज को स्वीकार कर लेते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो बाहरी टीप-टापके मोहमें पड़कर इन ब्रह्म-समाजियोंकी ओर झुक जाते हैं या जवान लड़कियोंके प्रेममें पड़कर इधर चले आते हैं। नहीं तो पुराने घरानोंमें परस्परके विवाह सम्बन्धसे ही इसकी स्थिति बनी हुई है। अन्यथा यह आर्य समाजकी तरह बहुत अंशोंमें विस्तृत हिन्दू धर्ममें मिल चुका है।

लड़कीकी विवाह योग्य अवस्था बीती चली जा रही है और अभीतक विवाहका कुछ भी रंग-ढंग नहीं है यह देखकर एक दिन उन्होंने सुशीलासे कुछ विशेष आग्रहके साथ पूछा—क्योंरी ! अब जन्मभर कुंवारी ही बैठी रहेगी ?

सुशीला—माताकी यह बात सुनकर कुछ लज्जित होकर बोली नहीं मा अब मेरा मन भी इस तरह उद्देश्यहीन जीवन बितानेका नहीं है। पर क्या करूं, अभीतक मनको स्थिर नहीं कर सकी हूँ।

माता—क्यों, सो क्यों ? मिस्टर घोस्टको अभीतक राजी नहीं कर पाई क्या ? वह लड़का तो बहुत भला है, तथा अब तो उसकी सामाजिक स्थिति भी ऊंची हो गई है।

सुशीला—नहीं मां, वे मिस माहेश्वरीकी ओर विशेष रूपसे आकर्षित हो रहे हैं। इसलिये उनसे अब कुछ आशा नहीं है।

माता—तो डाक्टर मुकर्जीसे तुम्हारा मेल नहीं मिलता क्या ? वह भी अच्छा लड़का है, उसकी प्रैक्टिश भी चल निकली है। सुन्दरतामें तो सैकड़ोंमें एक है। बेचारा रोज यहां आता है, कल भी आया था, पर तुम तो उससे रुख भी नहीं मिलाती।

सुशीला—नहीं मां, वह रात-दिन शराबके नशेमें चूर रहता है। बाहरसे वह जितना सुन्दर है, भीतरसे उतना ही काला है। उसे मुझसे तनिक भी प्रेम नहीं है। वह तो पिताजीके धनके

लोभसे ही मेरे साथ विवाह करना चाहता है।

माता—तो वह बागबाजारवाला जनार्दन घोष भी तो बुरा नहीं है। आजकल वह एक शुगर मिलमें चीफ इंजिनियरका काम कर रहा है। उसके पिताके पास पैसे भी खूब हैं और वह अपने पिताका एकलौता लड़का है।

सुशीला—हां मां, वह बुरा नहीं है, पर मिस्टर घोषकी तरह वह भी कमला बोसपर लट्टू हो रहा है। उनका तो विवाह होना भी निश्चित हो चुका है।

"तो क्या और लड़कोंका अकाल पड़ गया है?" सरला देवी कुछ व्यग्र होकर बोलीं—मैं तो देखती हूँ, जहां रास्ते घाटमें तुम निकलती हो दर्जनों छोकरे तुम्हारी जूतियां सीधी करनेको तैयार दिखाई देते हैं।

सुशीला—पर वे सब उद्देश्यहीन हैं। कोई मेरे रूपका गाहक है, कोई तुम्हारे धनका, कोई मेरी विद्या-बुद्धिको विशेषता देता है, कोई मेरे बनाव-शृङ्गारपर ही लट्टू है। मेरा मन उनमेंसे किसीको स्वीकार नहीं करता।

माता—तो अन्तमे एकको तो चुनना ही होगा। अब और इस तरह चुपचाप बैठे रहनेसे काम नहीं चलेगा। जब तुम्हारे पिताके साथ मेरा विवाह हुआ था। उस समय हमलोगोंने तो एक दूसरेको अच्छी तरह देखा भी नहीं था, मामाजीने तुम्हारे

दादाजीसे बातें कीं और विवाह तय होगया। आज उस विवाहको हुए पचीस-तीस साल हो गये, पर हमलोगोंमें तो एक दफा भी मतभेद नहीं हुआ। फिर तुम इस तरह हाट-बाजारमें क्यों लड़कोंको ढूँढती फिर रही हो?

सुशीला—माताजी आप लोगोंने ही हमें ऐसा करनेको बाध्य किया है। यदि पिताजी मुझे इतनी उच्च शिक्षा नहीं दिलाते, पढे-लिखे लडके-लड़कियोंके साथ अधिक मिलने-जुलनेका अवसर नहीं देते, तो आप जिसको मेरा हाथ थमा देते मैं उसीके पीछे चली जाती, पर अब तो हमारा भी एक अलग समाज बन गया है। जिसमें सैकड़ों ही नहीं, हजारों लड़के-लड़कियाँ शामिल हैं।

माता—परन्तु इतनी बडी संख्या होनेपर भी अपने मनके मेलका एक लड़का चुननेमे तुम्हे कई साल लग गये। आरम्भमे मनकी जब यह अवस्था है तो आगे चलकर तुम लोगोंको कैसे सुख प्राप्त हो सकता है। यह मन तो पानीकी तरह तरल है। यदि इसे किसी प्रकारकी चौहद्दीके भीतर अटकाकर रखा जाता है तब तो इसमेंसे एक बूंद भी इधर-उधर नहीं हो सकती, परन्तु जहाँ चौहद्दी हटाई कि फिर यह एक जगह स्थिर करना दुष्कर ही नहीं, असम्भव है।

सुशीला—माँ, आपका यह कहना बहुत ही ठीक है। आज मैं जितने युवकोंके साथ मिलती-जुलती हूँ। प्रायः सभीमें एक न

एक दोष देखती हूं। इसलिये कहीं भी मन नहीं ठहरता, यदि कहीं कुछ ठहरता भी है तो वह अपना मन पहलेसे ही कहीं फँसा चुका होता है या और किसी तरहको सामाजिक अड़चन आ पड़ती है। इसलिये अब मैं इस बखेड़ेमे न पड़कर आपपर ही यह भार सौंपती हूं। आप जिसको ठीक समझेंगी मैं उसे ही स्वीकार कर लूँगी।

माता—बेटी हम भी तो जो कुछ करेंगे तुम्हारी भलाई सोचकर ही करेंगे। इसलिये तुम निश्चिन्त रहो, इसमें तुम्हें सुख ही मिलेगा।

बारहवां अध्याय

पाँच-सात दिनसे कात्यायिनी देवीको साधारण सा ज्वर हो रहा है। इतनेपर ही खाना-पीना छोडकर एना दिन भर उनकी सेवामें लगी रहती है। वे उसे बहुत समझाती हैं कि यह कोई डरनेवाली बीमारी नहीं है। यह तो शरदी-गर्मी लगकर यों ही चढ़ जानेवाला बुखार है। दो-चार दिन पथ्य-परहेज करनेसे ही आराम हो जायगा। पर एना इन सब बातोंपर तनिक भी ध्यान नहीं देती; वह तो अपनी ही धुनमे लगी हुई है।

पण्डितजीने भी एनाको समझाया। माहेश्वरीने भी वही बात कही। जब घरभरके लोग एक ही बात कहने लगे तो उसे कुछ सन्तोष हुआ।

एक दिन एना कात्यायिनीकी रोग शैयाके पास बैठी थी। कुछ इधर-उधरकी बात चल रही थी। कात्यायिनीने बीचमे ही बातका रुख पलटके कहा—एना बहिन! माहेश्वरी अब विवाह के योग्य हो गई है। उसका अब शीघ्र विवाह करके उसे पतिकी अनुगामिनी बना देना ही उचित है।

एना—बडी बहिन ! मैं भी यही सोच रही हूँ। आजकलका समय बेढंगा चल रहा है, न जाने कब किसका मन फिर जाय। आज तो मिस्टर वोस्ट, माहेश्वरीके साथ विवाह करनेकी निज मे ही उत्सुकता दिखा रहे है। इधर माहेश्वरी भी उनपर सब कुछ न्यौछावर किये निश्चिन्त बैठी है। इसलिये पडितजीको भेजकर शीघ्र ही इस कामको पूरा कर लेना चाहिये।

कात्यायिनी—ठीक तो है एना! मेरा शरीर भी अब वैसा नहीं रहा, जब देखो कुछ न कुछ अड़ंगा लगा ही रहता है। इस-लिये मेरे बैठे-बैठे ही यह शुभ काम सम्पन्न हो जाना उचित है।

इस तरह दोनोंकी सलाह हो जानेके बाद एना पण्डितजीको भी वहीं पकड लाई और सबने मिलके यही तय किया कि पडित-जी उनके पास जाकर शीघ्र ही इस कामको ठीक कर ले।

रातके आठ बजे पण्डितजी खा-पीकर मिस्टर वोस्टके बगले-पर जा हाजिर हुए। उस समय दोनों मा-बेटा बैठक-खानेमे ही बैठे थे। सामाजिक शिष्टाचारके बाद असल बातका सिलसिला छिड़ा। मिस्टर वोस्टने इस विषयमे खुद कुछ न कह कर अपनी मा को ही इस बारेमे बात करनेका मौका दिया।

पण्डितजीने सुखियाकी तरफ मुखातिब होके कहा—देवीजी, यह तो आप जानती ही हैं, जजसाहब और मेरी लडकी परस्पर विवाह सम्बन्धमे आबद्ध होनेको तैयार हैं। यह तो इन लोगोंकी

शिष्टता है कि हमलोगोंके मुँहसे कहलाकर ही विवाह करना उचित समझते हैं। ऐसी अवस्थामें अब आपकी आज्ञा मिलते ही मैं इस कार्यकी तैयारीमें लग जाऊँगा।

सुखिया—महाशयजी आप ठीक कह रहे हैं। आपकी पुत्रीकी योग्यता और गुणोंको देखकर मैं तो क्या कोई भी स्त्री उसको अपनी पुत्रवधू बनानेमे अपना सौभाग्य समझेगी। परन्तु इसमे एक बात ऐसी है जिसे विवाहके पहले हमलोगोंको भली-भाँति विचार लेना चाहिये। यह तो आप जानते ही हैं कि मेरा बेटा इसाई धर्मका अनुयायी हो चुका था। परन्तु इस समय उसे इस धर्ममें तनिक भी विश्वास नही है। वह पुनः अपने पुराने धर्ममें आ जाना चाहता है। उसने पण्डितोंसे पूछ-ताछ भी की है। आजकल जन्मके इसाईयोंको भी शुद्ध करके हिन्दू बना लिया जाता है। फिर कुछ दिनों के भटके हुए अपने भाईको पुनः अपनेमे मिला लेनेमें कौन सी बाधा है। इसलिये हमलोग शीघ्र ही एक शुद्धि यज्ञ करके अपने खोये हुए धर्मकी प्राप्ति करने जा रहे हैं।

पंडितजी—देवीजी आप लोगोंका यह विचार बहुत ही सुन्दर है। हमारे यहाँ भी इस विषय में काफी परिवर्तन हो गया है। माहेश्वरी की छोटी मा जन्मकी इसाई है। पर तब भी उनकी उस धर्मपर बिलकुल श्रद्धा नहीं रही। वे भी हिन्दू धर्ममें

दीक्षित होनेका विचार कर रही हैं। रही मेरी बात सो मैंने तो एनाके लिये ही इसाई धर्म स्वीकार किया था। नहीं तो मैं विवाह के बाद सिर्फ एक बारको छोड़कर सो भी एना की खातिर के लिये, कभी गिरजा तक नहीं गया।

सुखिया—यह तो बहुत ही प्रसन्नता की बात है। विवाह की पकाईमे कोई बाधा नहीं है। आपने जाति-पाँति के विषय-मे तो पहले ही से सब कुछ सोच समझ लिया होगा, यदि इस विषयमें और कुछ विचार करनेकी आवश्यकता हो तो, वह भी सब पहले ही कर लेना चाहिये। बालकों को इतना सोचने समझनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। वे तो मनके मेलको ही सब कुछ समझते हैं, परन्तु हमलोगोंको तो सभी तरहका आगा-पीछा सोचके ही आगे बढ़ना चाहिये।

पंडितजी—देवीजी मैंने तो सब कुछ सोच लिया है। जब आपकी आज्ञा मिल गई है तो अब इसमें कोई बाधा-विघ्न नहीं रहा। आप विवाहकी तारीख निश्चित कर दीजिये। बस मैं नि-श्चिन्त हो जाऊँ।

सुखिया—आगामी अक्षय तृतिया को विवाह का दिन रखिये। इस बीचमे हमलोग शुद्धि का आयोजन कर लेते हैं। यदि आप भी उसी समय इस यज्ञमें शामिल हो जायँ तो सब ठीक हो जाय।

पंडितजी घर जाकर इस विषयका उचित उत्तर देने की बात कह कर बहुत रात गये उनसे बिदा हो सन्तुष्ट मनसे घरके लिये रवाना हुए।

तेरहवाँ अध्याय

मिस्टर घोस्ट अपनी आफिस मे बैठे कुछ कागज पत्र देख रहे थे कि उनके नौकर ने आकर उनके सामने एक पत्र रख दिया। पत्र उन्हीं के नाम का था एक ब्राह्मण महाशय उनसे मिलनेके लिये समय चाहते थे।

मिस्टर घोस्टने नौकरको आज्ञा दी कि 'जाओ महाराज जी को आदर सहित लिवा लाओ।' कुछ देर बाद नौकर दो व्यक्तियों को उनके कमरे मे पहुँचा कर चला गया।

मिस्टर घोस्टने आँखें उठाकर उनकी ओर देखा।

अरे यह तो गुरुजी महाराज हैं। आइये, महाराज! आपने यहाँ आकर मुझपर बड़ा एहसान किया। उठकर उनके पाँवोंमें दंडवत की तथा आदर सहित सामने की कुर्सियोंपर बैठा दिया और बड़ी नम्रताके साथ आनेका कारण पूछा, गुरुजी बोले—सरकार! आपकी अदालतमें एक पेशकार की जगह खाली सुनके आया हूं। यह लड़का गत साल बी० ए० पास करके घरमें यों ही हाथ पर हाथ धरे बैठा है। मैंने जब सुना कि

आप इतने ऊँचे पदपर पहुँच गये हैं, तब इसे आपके पास ले कर आया हूँ।

मि० घोस्ट—कोई हरज नहीं वह काम तो मेरे ही हाथमें है। अभी तक किसीकी नियुक्ति नहीं हुई है। मैं अवश्य इन्हे जगह दूँगा।

गुरुजी—भगवान आपको लाट साहब बनावे। मैंने तो आप को अपनी पाठशालामें जगह न देकर आपके साथ बुरा सलूक किया था और आज आपने मुझपर यह कृपा की। मेरे उस बर्तावसे मैं कितना लज्जित हूं, यह बात मै आपको शब्दों द्वारा नहीं बता सकता। परन्तु आज मेरी उस पाठशालामें छूत-अछूतका कुछ भी भेद नहीं है अब वहाँ सभी वर्णोंके बालकों-को समान रूपसे शिक्षा मिल रही है।

मि० घोस्ट—यह सुनकर बडा आनंद हुआ। गुरुजी महाराज! जिस तरह प्यासे को जल पिलाने में वर्ण-भेद नहीं देखा जाता, उसी तरह विद्या देते समय भी जाति-पाँति नहीं देखना चाहिये, क्योंकि आप तो ज्ञानके भण्डार हैं। सब जानते हैं जो इसमें गोते लगायेंगे वेही उसका फल पायेंगे। क्या गंगा अपनेमे स्नान कर-नेवालोंके विषयमे नीच-ऊँचका विचार करती हैं? यदि वह ऐसा करने लगे तो हम नीचों के उद्धारका कोई उपाय ही बाकी न रह जाय।

गुरुजी—सरकार अब मैं अपनी उस भूलका व्याज सहित प्रायश्चित कर रहा हूँ, तथा अपने इस बर्तावसे मुझे काफी सन्तोष भी हो रहा है। यही नहीं मैं तो अब इसाई या मुसलमान जो भी हिन्दू धर्ममें आना चाहता है उन्हे शास्त्र-विधिसे शुद्ध करके धर्ममे मिला लेता हूँ। अबतक सैकडों परिवारोंकी शुद्धि करा चुका हूं।

मि० घोस्ट—अच्छी बात है, महाराज! अब यहां भी दो परिवारोंकी शुद्धि करा डालिये, कहिये! कब मुहूर्त निकालते हैं ?

गुरुजी—सरकार इस काममें मुहूर्तकी कोई बाधा नहीं है। जिस दिन आपकी इच्छा हो पहले दिन २४ घण्टेका उपवास करके दूसरे दिन विधि सहित हवन करके शुद्ध कर लिया जायगा। बस यही तो एक साधारणसी विधि है।

चैत वदी चल रही थी। चैत सुदी ९ अर्थात् रामनवमीका दिन शुद्धिका दिन स्थिर कर दिया गया। मिस्टर घोस्टने अपनी मा से गुरुजीको मिलाया। पण्डितजीको देखकर सुखिया बहुत ही प्रसन्न हुई। उसने पूर्ण भक्ति भावसे उनके चरणोंमें दण्डवत की तथा अपने पासके घरमें उनके रहनेका प्रबन्ध कर दिया।

दूसरे दिनसे गुरुजी महाराजके लड़केको उनके पेशकारका काम भी मिल गया। इस तरह मिस्टर घोस्टने अपकार करने-वालेके साथ भी उपकार करके उन दोनों पिता पुत्रको अपने अनुकूल बना लिया।

चौहत्तर

चौदहवाँ अध्याय

नथनी घरसे चलकर उठते-बैठते बडी मुश्किलसे अपनी मौसीके घर पहुँची। जज साहबका अरदली वर्दी डाँटे दरवाजे पर पहरा दे रहा था। कुछ देरतक तो उससे पूछनेकी उसकी हिम्मत नही हुई। बादमे हिम्मत करके उसने उससे पूछा—जज साहबका बङ्गला यही है? अरदलीने उसके मैले-कुचैले कपडोंको देखकर, भिखमगी समझकर, झिडकते हुए कहा—हा बङ्गला यह है तो क्या? तुम अपना रास्ता लो।

बेचारी नथनी एक बार तो डांट खाकर सहमसी गयी। पर कुछ देर बाद फिर हिम्मत करके बोली—भाई मेरी मौसी यहा रहती हैं, मैं उन्हींसे मिलने आई हूँ। अरदलीने फिर उसी रूखे ढंगसे कहा—चल यहांसे जज साहबकी माताजीको छोडकर यहाँ और कोई स्त्री नहीं रहती, तुम्हारी मौसी-औसीको यहाॅ कहा जगह मिल सकती है?

नथनी—भाई! जज साहबकी मा ही मेरी मौसी हैं, जरा उन्हे खबर कर दो।

अरदली—चल, दूर हट, जज साहबकी माताजी और वह तुम्हारी मौसी, झूठी कहीं की। क्यों नाहक तकरार कर रही है? जा अपना रास्ता ले।

वह दो तीन बार वैसे ही कहती गई और अरदली उसे फटकार ही बताता रहा। इतनेमें सुखिया घूमती हुई उधर आ निकली। दूरसे इन दोनोंकी बाते सुनके उसने नथनीको ध्यानसे देखा और फौरन पहिचान गई।

उसने अपने नौकरको भेजकर नथनीको भीतर बुला लिया। नथनी सुखियाके पास जाकर फूट-फूटके रोने लगी—सुखियाने बड़ी कठिनतासे उसे चुप कराया तथा उसके नहाने-धोनेका प्रबन्ध कर दिया। उसे एक अच्छी साड़ी पहिनाई तथा बादमें मि० वोस्टसे उसे मिलाया।

यद्यपि वह उसकी सगी मौसीका लड़का था परन्तु संस्कार दोषसे नथनीको उसके सामने जानेमे डरसा मालूम होता था।

नथनीकी माँ को मरे बहुत दिन हो गये थे। एक बार जब नथनी ७ सालकी थी, तभी उसने अपनी मौसीको देखा था, परन्तु आज भी वह उसे मजेमें पहिचान गयी। खूनकी कोई ऐसी ही तासीर है। जो अपनोंको हजारोंमें पहिचान लेता है।

दोनों बहिन-भाई बड़े प्रेमसे मिले। घरकी सब बाते पूछी। नथनीने बिना किसी तरहके संकोचके अपनी सारी दुःख कहानी

कह सुनायी। मि० घोस्टको सूदखोर आगोंके-अत्याचारपर बहुत क्रोध आया, पर उस समय वे उनका कर ही क्या सकते थे।

जो भी हो अपना आदमी भेजकर उन्होंने उसी समय धनिया या धनुषलालको बुलवा लिया। अच्छे वस्त्र देकर उसे अपने ही यहाँ रख लिया।

धनिया एक मेहनती आदमी था। अपना घर समझके वह सारे कामोंको बडे परिश्रमके साथ करने लगा, इधर नथनीके आ जानेसे सुखियाको भी पूरा सहारा मिल गया। सारा घर भरा हुआ सा मालूम देने लगा।

धनियाके मुँहसे आगोंके अत्याचारकी पूरी बाते सुनके, उन्होंने निश्चय किया कि इधरके कामोंसे छुट्टी मिलते ही वे निजमे उन राक्षसोंके हाथोंसे गरीबोंकी रक्षा करेंगे।

पन्द्रहवाँ अध्याय

कल रामनवमी है, मि० घोस्टका शुद्धि-यज्ञ कल ही सम्पन्न होगा। पण्डितजीने शुद्धिकी सारी सामग्री जुटा ली है। स्थानीय विद्वान ही नहीं, काशीसे भी दो-तीन पण्डित बुलाये गये हैं। बड़े विधि-विधानसे कार्य हो रहा है।

एक ओर बहुतसे पण्डित बैठे जप होम कर रहे हैं। दूसरी ओर वेदोंकी ऋचाओंसे स्वस्ति पाठ हो रहा है। बीचमें एक बड़ा भारी हवनकुण्ड बनाया गया है,। जिसमें शास्त्रकी विधिके अनुसार आहुतियां दी जा रही हैं। मिस्टर घोस्ट आज २४ घण्टेके उपासे हैं तथा मुण्डन आदिकी सारी क्रियाएं हो चुकी हैं।

दूसरे दिन भोरमें अन्य क्रियाओंके साथ-साथ उनका नाम भी बदलकर मिस्टर घोस्टसे महाशय घासीराम वर्मा हो गया है। अब हम भी आगेसे इनको इसी नामसे लिखेंगे।

एक ओर शुद्धिका काम सम्पन्न हुआ, दूसरी ओर उसी बंगलेके बगलमें एक खुली जगहमे श्रीरामचन्द्रजीका मन्दिर बनवानेकी नींव रखी गई और उसके पूजन आदिका सारा भार पंडित

जीको ही सौंप दिया गया।

कहना नहीं होगा, महाशय घासीरामजीके सभी परिचित आदमी इस उत्सवमें सम्मिलित हुए थे। जिनमें कात्यायिनी देवी आदिकी प्रधानता रहनी स्वाभाविक ही थी।

शुद्धिकार्यके बाद महाशय घासीरामका घर एक आस्तिक हिन्दूकी तरहका हो गया। नियमित रूपसे भगवानकी पूजा, कथा, उत्सव होने लगे। कोई भी अतिथि वहा आकर विमुख नहीं जाने पाता। सुखिया देवीने तो अपना यह नियम-सा बना लिया था कि बिना दस-पांचको खिलाये, वह कभी आप भोजन नहीं करती थी। नथनीने भी अपनेको बहुत कुछ उन्हींकी तरहका बना लिया था। धनिया भी, श्री धनीलाल हो अब खासे तर्क-शास्त्री बन गये थे। महाशय घासीरामके भीतरी और बाहरी सभी कामोंमें उनकी बुद्धिका ही चमत्कार दिखाई देता था।

श्रीमती नथनीको यहां आकर एक पुत्र-रत्न हुआ। जो सारे घरके लिये एक अवलम्ब-सा सिद्ध हो गया। सम्भव है, यदि उसका जन्म उसी अस्वास्थ्यकर गन्दी बस्तीमे हुआ होता तो वह अपनी बिरादरीके अन्य बालकोंकी तरह भद्दे डील-डौलवाला ही होता, पर जज साहबके बंगलेकी खुली हवामें पैदा होने और रहनेसे वह एक स्वस्थ और सुन्दर बालक दिखाई दे रहा था।

हमलोग, उच्च वर्ण कहे जानेवाले लोग यही समझे बैठे हैं कि

भगवानने रूप-रंग जो कुछ अच्छी चीजें बनाई हैं, हमारे लिये ही रिजर्व करके रख छोड़ी हैं और सब तरहकी बुरी बातें गरीबों, नीची जातिके बालकोंको दे डाली हैं। पर यह समझनेवाले भूल कर रहे हैं। भगवानके घरमें कुछ भी भेद-भाव नहीं है। वहां तो वही मिट्टी एक ऊंची जातिवालेके लिये है और वही नीची कहलानेवाली जातियोंके लिये है। यह तो हमारे यहांकी रहन-सहन और परिस्थितियोंके भेदके कारण ही फरक दिखाई दे रहा है।

वही लड़का नथनीके पेटसे पैदा होकर काला-कलूटा, मैला-कुचैला बन जाता और वही आज सुन्दर, साफ-सुथरा दिखाई दे रहा है। यदि हमारे गरीब कहलानेवाले भाइयोंके रहन-सहन को सुधारा जा सके तो आज उनके काले और गन्दे कहे जानेवाले बालक सुन्दर और स्वच्छ कहलानेके अधिकारी बन जायं।

यद्यपि धनीलालकी जज साहबसे किसी अंशमें भी तुलना नहीं की जा सकती, पर उनके सरल स्वभावके कारण बाहरसे आनेवालोंको वह उनका छोटा भाई ही मालूम देता और उसका लड़का जिसका नाम जज साहबने बड़ी साधके साथ रामदास रखा था, उनका अपना लडका-सा लगता। रामदास अभी बहुत छोटा था, पर अभीसे वह होनहार मालूम देने लगा था। जो कोई उसे गोदमे लेता वह हँसता हुआ उसके पास चला जाता,

रोनेका तो वह नाम भी नहीं जानता था। यदि समयपर दूध न मिलता तो अपनी माके पास जानेकी चेष्टा करने लगता। बस, यही उसका रोना समझिये या आग्रह, जो भी आप समझें।

सोलहवाँ अध्याय

पं० मोहनलालजीने भी अपनी और अपने परिवारकी शुद्धि करानेका विचार करके यज्ञ करानेकी व्यवस्था ले ली। वही जज साहबके गुरूजी ही इस यज्ञके भी प्रधान आचार्य नियुक्त हुए। उसी विधिके अनुसार सारा कार्य सम्पन्न हुआ। माहेश्वरीकी विमाता एनाका शुद्ध होनेके बाद आनन्दी बाई नाम रखा गया। श्रीमती कात्यायिनी देवी तथा माहेश्वरीके बारेमें तो कुछ शुद्ध-अशुद्धका प्रश्न था ही नहीं, न उनके घरमें ही किसी तरहके परिवर्तनकी आवश्यकता थी। यह तो सिर्फ एक नियमका पालन करना था सो शास्त्रकी विधिके अनुसार कर लिया गया।

दोनों परिवारोंकी शुद्धि हो जानेके बाद महाशय घासीराम और कुमारी माहेश्वरीके विवाह की चर्चा चली। अच्छा लग्न देखकर विवाहका दिन निश्चित कर दिया गया। दोनों ओरसे तैयारियाँ होने लगीं। जैसे-जैसे विवाहके दिन पास आने लगे, कुमारी माहेश्वरीका जज साहब के यहाँ आना-जाना कम होने लगा। जो माहेश्वरी अपने भावी पतिके साथ अब तक किसी

प्रकारका भी संकोच नहीं रखती थी अब उसकी इस तरहकी लज्जा देखकर लोगोंको आश्चय होता था। पर इसमे आश्चर्यकी कोई बात नहीं थी, यह मनुष्यका स्वभाव ही है कि जब तक किसी वस्तुको अपनी समझनेका अधिकार नहीं हो जाता, तब तक तो उसे अपनी बनानेके लिये नाना प्रकारका प्रयत्न करना पड़ता है। परन्तु जब वह चीज अपनी हो जाती है या होनेका निश्चय हो जाता है, तब उसे अपनी कहने या दिखानेमे कुछ सकोच होने लगता है।

जो भी हो, विवाहका निश्चित दिन आ पहुँचा। आज विवाह के उपलक्षमे मित्रोंका प्रीतिभोज है। यद्यपि महाशय घासीराम और कुमारी माहेश्वरी दोनों ही शुद्धिसे पहले समाज बहिष्कृत समझे जाते थे। पर आज उनके यहाँ सभी तरहके लोग दीख रहे हैं, क्या बडे-बड़े पडित और क्या बड़े बड़े सेठ साहूकार, सभी इनके यहाँ भोजन करके अपनेको धन्य समझ रहे हैं। फिर चाहे इसका कारण शुद्धि महायज्ञ हो या उनका हाईकोर्टका जज बन जाना हो। पर कुछ दिन पहले तक जो लोग जज साहबकी श्रेणीके लोगोंके यहाँ पानी पीना भी पाप समझते थे वे ही यहाँ बाहें ऊँची कर लम्बे-लम्बे हाथ चलाते हुए दिखाई दे रहे थे। यह सब लक्ष्मीका खेल है। यह लक्ष्मी जो भी कुछ न करा दे वह थोडा है। लक्ष्मीका नाता सबसे

बड़ा नाता है, इसमे जाति-पाँतिकी कोई अड़चन नहीं रहती।

इस अवसरपर कुमारी माहेश्वरीकी प्राय. सभी सहेलियाँ आईं। कुमारी सुशीला भी पधारी, इन थोड़े दिनोंमे ही सुशीलामे काफी परिवर्त्तन हो गया। वह पहलेकी सी चचलता अब उसमे नहीं रही, न बालकोंकासा चुलबुलापन ही था, अब वह एकदम शान्त प्रकृतिकी बन गई थी।

बात यह हुई कि जिस दिन सुशीलाकी माताने उसके पति निर्वाचन का भार अपने ऊपर ले लिया, उसी दिनसे उसके मन की वृत्तियां एक केन्द्रमें जमा होने लगीं। पहले तो वह अपनी बुद्धिके अनुसार आज इसको कल उसको अपना साथी बनाने-का विचार करती रहती थी। जिससे उसका मन बहुत ही चञ्चल रहता था। यही कारण था कि उसकी सारी हलचल ही चंचल-तापूर्ण दिखाई देती थी। परन्तु अब वह अपनी ओरसे किसी-पर मनको नहीं डुलाती। इसलिये कोई उसके विचारोंके बीचमें आ भी नहीं सकता।

सुशीलाकी माता जमाना देखी हुई महिला है। इसलिये इस काममें उन्होंने ढिलाई नहीं की। अपनी बुद्धिके अनुसार एक अच्छे सुपात्रको चुनते उन्हे क्या देरी लगती, उनके पास काफी पैसे थे। सुशीला भी पढ़ी-लिखी सुन्दर लडकी थी। फिर एक अच्छे लड़केको इससे अधिक और चाहिये ही क्या? यह तो

सुशीलाकी निजकी चचलता ही उसे एक निर्णयपर नहीं पहुँचने देती थी। वह आज इसको पसन्द करती, कल एक दूसरेको पसन्द कर बैठती, परसों उसमे उसे कोई दोष दिखाई देने लगता इसलिये तीसरेकी खोज करने लगती। इसी तरह सैकडों नव-युवकोंको उसने पसन्द किया और छोड दिया। अवश्य ही इस बड़ी संख्यामे बहुतसे अच्छे लडके भी थे। जो किसी गंभीर दृष्टि के सामने पड़कर अवश्य ही सफलीभूत हो सकते थे। बस सुशीलाकी माने उन्हीं भले लडकोंमेंसे एकको चुनकर उसके हाथ में सुशीलाको सौंप दिया तथा कुछ दिन बाद ही उन दोनोंको व्याह सूत्रमें बाँधकर एक कर दिया। यही सुशीलाके विवाहकी कथा है।

महाशय घासीराम और कुमारि माहेश्वरीके विवाहके सारे कार्य वैदिक रीतिसे सम्पन्न किये गये। अन्तमें सानन्द मित्रोंको भोज दिया गया और कन्या विदा कर दी गई।

सत्ररहवाँ अध्याय

माहेश्वरीदेवीके आनेसे महाशय घासीरामके घरकी रौनक दूनी हो गई। लोगोंका तो खयाल था कि विद्वान जजकी विदुषी पत्नीके आनेसे अपने अन्य सुधारक साथियोंकी तरह घरका सारा वातावरण अङ्गरेजी ढंगका हो जायगा। पर उनकी यह धारणा गलत सिद्ध हुई। माहेश्वरी देवीने अपने चौके-चूल्हेको बिलकुल हिन्दू ढगका रखा, यद्यपि उसके यहाँ हिन्दूमात्र सब एक श्रेणीमे माने जाते थे, पर खान-पान बिलकुल निरामिष होता था। उनके यहाँ पुराने विचारोंके मेहमानोंके लिये भी अलग प्रबन्ध था। जहा उच्च कहे जानेवाले वर्णके लोगोंको भोजन आदि करनेमे कुछ आपत्ति नहीं थी।

विवाहके समय भी शहरके सभी विचारोंके लोगोंने जज साहबके यहा भोजन किया था। उस समय भी हलवाई आदिका सब प्रबन्ध स्वतंत्ररूपसे किया गया था और खिलानेवाले लोग भी उच्च कहलानेवाली जातिके ही थे। इसलिये अलग चौकेका प्रबन्ध रहनेसे ऐसी अवस्थामे भी जजसाहबके किसी विचारके

भी मेहमानोंको अड़चनका सामना नहीं करना पड़ता था।

इस तरह चौके चूल्हेका प्रबन्ध कर लेनेके बाद माहेश्वरीका ध्यान सबसे पहले अपनी सासको आराम पहुँचानेकी ओर गया, अबतक घरके भीतरी सारे कामोंका प्रबन्ध सुखिया देवीको ही करना पड़ता था, पर अब उसके जिम्मे सिर्फ भगवान्‌की सेवा और मेहमानोंकी देख भालका ही काम रह गया।

मन्दिर और मन्दिरके चौकेका भार पंडितजीपर छोड़ दिया गया जो एक सहायक रसोइया रखके पूरा करने लगे।

अपने चौकेका भार श्रीमती नाथरानीको दिया तथा उसे अपनी सगी ननदकी तरह मान देकर माहेश्वरी उससे काम लेने लगी।

महाशय घासीराम या जज साहबके प्राइवेट सेक्रेटरीका काम श्रीधनीलाल उर्फ जमाई बाबूके जिम्मे पड़ा— आपको बाजार से छोटीसे छोटी चीज खरीद लानेसे लेकर, जज साहबके वेतन के रुपयों तकका हिसाब रखना पड़ता था। लोगोंको आपकी यह योग्यता देखकर बड़ा ही आश्चर्य होता था कि जो आदमी कल-तक एक साधारण कुलीका काम करता था, वह आज इतनी भारी जिम्मेदारीके कामको कैसे पूरा करता है।

इसका कारण है। मनुष्यमात्रमे ऐसी कोई न कोई शक्ति अवश्य छिपी रहती है। जिसको प्रोत्साहन मिलनेसे उसके द्वारा

बहुत चमत्कारिक कार्य होने लगते हैं, जिसकी किसीको सम्भावना भी नहीं होती। इसके लिये यदि उदाहरण देखने हों तो प्राचीन और आधुनिक इतिहासके पन्ने उलटनेसेही प्रचुर प्रमाण मिल जायेंगे एक कपर्दकहीन सामान्य वैश्यपुत्र सुयोग पाते ही करोड़ोंकी सम्पत्ति इकट्ठी कर लेता है। एक साधारण सिपाही बड़े भारी देशका मालिक बन बैठता है। एक निरक्षर भट्टाचार्य इञ्जिनमें कोयला झोंकनेवाला कुली समय पाकर एक बड़ी से बड़ी मिल चलानेवाला इञ्जीनियर बन जाता है। कहांतक गिनाया जाय, जिधर भी आप आंख उठाकर देखेंगे आपको इस तरहके अगणित उदाहरण दिखाई देंगे।

धनियांसे धनीलाल बननेमें उसको इसी तरहका सुयोगप्राप्त हो गया था। जज साहबने अपने आत्मीयकी तरह उसका विश्वास करके उसे आगे बढ़नेका अवसर प्रदान किया। उसीके उत्तरमें धनियाने अपनेको धनीलाल बनने योग्य सिद्धकर दिखाया, फिर तो विश्वाससे विश्वास आपही बढ़ जाता है।

सुखिया देवी नीच और गरीब घरमे जनमी थी। उसी तरह के घरमें व्याही गई थी। वैसाही उसका पड़ोस था। पर एक सच्चे ब्राह्मणके—फिर चाहे वह बहुत ही कम लिखा-पढ़ा क्यों न था। एक ही शब्दने उसका भविष्य एक दमसे बदल दिया, परन्तु उसका विश्वास दृढ़ रहनेसे नाना प्रकारके कष्ट सहकर भी उसने

अपने आपको ऊँचा उठाया, अपनी सन्तानको ऊँचे उठाया तथा अपनी जाति और देशको भी ऊँचा उठाया।

अपनी परिस्थितिपर ध्यान देकर उसने गरीबोंके लिये सहानुभूति करना सीखा, जिनको सहारेकी आवश्यकता रहती है उन्हें सहारा दिया तथा उनके दोषोंको भुलाकर उनके गुणोंको प्रोत्साहन दिया। जिसके फलस्वरूप आज नथनी, नाथरानी बननेके योग्य हो गई।

सुखिया देवीका पूर्ण सहयोग पाकर भी आरम्भमें नथनी किसी कामसे हाथ लगाते सकुचाती थी, पर किसी ओरसे किसी तरहकी बाधा न मिलनेसे वह बराबर आगे बढ़ती चली गयी। ऐसीही परिस्थितिमें भगवानने उसकी कोखसे रामदास जैसा सबको मोहनेवाला पुत्र उत्पन्न कर दिया। फिर तो वह अपने आपही आगे बढने लगी, पर तो भी उसे अभी यह घर अपनासा नहीं लग रहा था। वह जो कुछ करती थी एक ईमानदार नौकरकी तरह, सब कुछ मालिकका काम समझकर ही कर रही थी।

चतुर माहेश्वरीने नाथरानीके इस भावको ताड़ लिया। माहेश्वरी धनीलाल और नाथरानीको अपने कुटुम्बके ही आदमी समझकर उनसे बर्ताव कर रही थी और वह चाहती थी कि मेरे बर्तावसे ही नाथरानी मेरे इस भावको समझ जाय, पर इन दोनों पति-पत्नियोंकी विद्या, बुद्धि, उच्च धारणा आदि देखकर

भोजनमें हाथ लगा रही हूं। यह मैं कितना बड़ा पाप कमा रही हूँ, पर सच कहती हूँ आपके भयसे मैं कुछ बोलती नहीं।

माहे०—बहिन, यहा तुम भूल कर रही हो, ऊंचा-नीचा या बडा-छोटा मानना यह मनकी दुर्बलता या अभिमानका कारण है। हम हिन्दू तो अपनेमें किसीको बड़ाऔर किसीको छोटा मानते हैं, पर वही छोटा कहा जानेवाला हिन्दू जब दूसरा धर्म स्वीकार कर लेता है। इसाई या मुसलमान बन जाता है। तब हम उसे बड़ा मानने लगते हैं। यही तो हमारी दुर्बलताका चिह्न है।

अपने भाईको ही ले लो—वे इसाई हो गये, पढ़कर हाकिम हो गये। जब वे हिन्दू थे, नीच समझे जाते थे। पर इसाई हो जानेपर वही उन्हे नीच समझनेवाले हिन्दू ही उनकी कृपाके भिखारी दिखाई देने लगे। पर जमाना पलट गया है, आज हिन्दू धर्मका वास्तविक रूप लोगोंकी समझमें आ गया है। इस-लिये अब वे अपने भीतर इस तरहकी बुराईको कतई स्थान देने-को तैयार नहीं हैं। फिर ऐसा क्या कारण है कि तुम हमारे इस काममें सहायता नहीं करती?

नाथ०—देवीजी अब मैंने आपका आशय अच्छी तरह समझ लिया है। मैं ऐसा ही प्रयत्न करूंगी कि आपके पासतक पहुँच सकूं। पर कपडेका पुराना दाग छटते २ छूटेगा—इसके लिये आप अधीर न हों।

अठारहवां अध्याय

सुशीलाके पतिका नाम रामचरण है। वह विलायतसे बैरिस्टरी पास कर आया है। पहले एक बार सुशीलासे वह मिल चुका था। बैरिस्टर होकर भी वह धोती कुरतेकी पोशाक धारण करता है। इसी दोषसे सुशीलाने उसको रिजेक्टकर दिया था, पर असलमें रामचरण एक योग्य लड़का है। अन्य अपने साथियोंको पतनके गहरे गढ़ेमें गिरते देखकर भी उसने अपनेको विलायतमें रहते समय बहुत संभालकर रखा। साथियोंका यह खयाल था कि यहा बिना भ्रष्ट हुए, बैरिस्टरकी सनद मिल ही नहीं सकती। पर रामचरणने यह सिद्ध करके दिखा दिया कि लोगोंकी यह धारणा बिलकुल गलत है, वह वहां बड़े ही संयमसे रहता था। यार दोस्तोंके साथ सब जगह आता जाता था। पर अपनी मर्यादा रक्षाका बराबर ध्यान रखते हुए।

रामचरणके पिताके पास धनकी कमी नहीं थी। वे उसको मनचाही रकम बराबर भेजते रहते थे, पर उसका खर्च इतना नियमित था कि एक गरीब आदमीको जितना व्यय करना

चाहिये, उससे बहुत थोड़ेमे ही उसका काम चल जाता था।

एक दिन एक बड़ा भारी डीनर था। अन्य मित्रोंके साथ रामचरण भी उसमें शामिल हुआ था। चार-चार आदमियोंके लिये एक-एक टेबिल पर प्रबन्ध किया गया था। उसके तीन साथियोंमें एक तो एक मजदूर नेता, दूसरे एक हिन्दुस्तान फिरता सिविलियन और तीसरे एक जर्मन सज्जन थे। बातों ही बातोंमे सिविलियन साहब कहने लगे कि हम लोगोंके ससर्गसे अब हिन्दुस्तानमें योरोपीय ढङ्गका ही विशेष अनुकरण होने लगा है।

मजदूर नेता—हां, यही मैं भी देख रहा हूँ। यहाँ हिन्दुस्तानियों द्वारा दी जानेवाली पार्टियोंमें अक्सर सम्मिलित होता रहता हूं। यहाँ जितने भी हिन्दुस्तानी आते है सब हमारे ही रङ्गमे रंगे हुए मालूम होते हैं।

रामचरण—नहीं, महाशयजी भारतके विषयमें ऐसी धारणा करके आप भूल कर रहे हैं। आपके यहां जो लोग आते हैं या इन सिविलियन महोदयका भारतमे जिन लोगोंसे सम्पर्क रहा है, वे अवश्य इस सभ्यताका अनुकरण करते दिखाई दे रहे हैं, पर इनकी संख्या है कितनी? वहा तो सौमें निन्यानवेकी कौन कहे हजारमें नौ सौ निन्नानवे अभी आपकी इस सभ्यतासे परिचित भी नहीं हुए हैं। यही नहीं, हजारमे एक जो आपकी नयी सभ्यतामे रगे दिखाई देते हैं, वे भी अपने घरमें जाकर हमलोगों

-की तरह ही हो जाते हैं।

जर्मन सज्जन—हां, मैं इन महाशयकी बातका समर्थन करता हूँ। मुझे कुछ दिनोंतक एक मिशनके साथ भारतमें रहकर काम करना पड़ा था, तब मैंने वहाकी परिस्थिति इनके कहनेके अनुसार ही पायी।

सिविलियन—मैं इस बातको कैसे मानूं? मेरा जब-जब इन लोगोंके साथ सम्पर्क पड़ा है, तब-तब मैंने इन लोगोंको हमारे जैसा सूट पहिने और हमारे जैसा भोजन करते पाया है।

जर्मन—हा, ऐसा होना सम्भव है। क्योंकि आपलोगोंका उन्हीं चन्द आदमियोंसे काम पडता है, जो अपने स्वार्थके लिये इस तरहकी भेष-भूषा स्वीकार कर चुके हैं।

रामचरण—आप मुझे ही लीजिये, आप लोगोंके साथ एक ही टेबलपर बैठकर मैं भोजन कर रहा हूँ। पर मैं अपने ढङ्गका आहार ही कर रहा हूँ तथा मेरा पहनावा भी हमारी भारतीय पद्धतिका ही है। फिर आप लोगोंने तो मुझे इसे छोड़नेको बाध्य नहीं किया। इसी तरह यदि मेरे अन्य भाई भी अपनी मर्यादाके भीतर रहें तो उन्हे इसमें क्या कठिनाई पड़ सकती है।

इस तरहकी बातोंसे उन सबपर भारतका अच्छा प्रभाव पड़ा यदि हमारे अन्य भाई भी इसी तरहसे अपने आचरणोंको शुद्ध बनाये रखें तो हमारा बहुत कुछ उपकार हो सकता है।

आदिसे अन्ततक अपने पुराने ढंगसे रहकर जब रामचरण बैरिस्टर बनके देशको लौटा तो वह अपनी भारतीय पोशाकमें ही रहता था, न कि दूसरोंकी तरह नकली साहब सजकर—ऐसे ही समय सुशीलाके साथ उसका परिचय हुआ था, पर उस समय सुशीला नई सभ्यताके रंगमें रंगी हुई थी। उसे एक सीधा-सादा युवक कैसे पसन्द आता ? पर जमाना देखी हुई सुशीलाकी मातासे रामचरणकी विशेषता कैसे छिपी रह सकती थी ? उन्होंने दो-एक बारकी बात-चीतमें ही उसके अन्तःकरणकी थाह पा ली तथा सुशीलाके लिये उसे ही उपयुक्त पात्र समझा।

माताने अपने चुनावकी बात पुत्रीतक पहुँचा दी तथा दो-चार दिनका परस्परमें मिलने-जुलनेका उनको अवसर भी दे दिया। यद्यपि रामचरणको सुशीला पहलेसे जानती थी पर उस समयकी सुशीला और आज-कलकी सुशीलामें रात-दिनका अन्तर पड़ गया था। उस समय वह पारखी बनी हुई युवकोंको परखती फिरती थी और आज वह माताके दिये हुए रत्नको अपने अन्तः-करणकी आखोंसे देखने की चेष्टा कर रही थी।

पहले अस्वीकार कर देना उसकी इच्छापर निर्भर करता था, परन्तु अब माताको इसका कारण बताना था, जो ऊपरी बातोंसे कुछ भी नहीं समझा जा सकता था। असलमें रामचरण बहुत ही योग्य नवयुवक था। इसलिये बहुत थोड़े परिश्रमसे ही सुशीला

को उसके गुणोंका पता चल गया और अपनी माताके सुन्दर चुनावको उसने स्वीकार कर लिया।

यथा समय दोनोंका विवाह हो गया। पतिके इच्छानुसार सुशीला भी बिलकुल साधारण ढंगसे रहने लगी, तथा दोनों रात-दिन इसी धुनमें रहने लगे कि वे अपने गरीब देशवासियोंको किस प्रकार लाभ पहुंचा सकते है।

उन्नीसवाँ अध्याय

सुशीला और माहेश्वरीकी मित्रता दिनोदिन बढ़ रही थी। इधर घसीटूराम और रामचरणका सम्पर्क भी खूब घना होता चला जा रहा था।

सुशीलाके पिताका देहान्त हो जानेसे सुशीलाकी माता काशी चली गई। वह अपने पिताकी अतुल सम्पत्तिकी एक मात्र अधिकारिणी बन गई। जज साहबकी मित्रता और अपनी योग्यताके कारण रामचरणकी बैरिस्टरी खूब जोरोंसे चलने लगी थी। उनके घरका खर्च बहुत ही साधारण था, इससे जो कमाते थे उसका चौथाई भाग भी व्यय नहीं हो पाता था, इसलिये अपने पिताकी सम्पत्ति में सुशीलको हाथ लगानेकी कोई आवश्यकता नहीं थी।

एक दिन जज साहब तथा माहेश्वरी और बैरिस्टर साहब तथा सुशीला भोजनोपरान्त एक साथ बैठे हुए बातें कर रहे थे। इन दोनों परिवारोंमें अबतक ऐसी घनिष्ठता स्थापित हो गई थी कि सप्ताह में कम-से-कम दो बार कभी सुशीलाके यहाँ तो

कभी माहेश्वरीके यहाँ इनका भोजन होता रहता था।

आज ये सब सुशीलाके बँगलेपर इकट्ठे हुए है। सुशीलाने बातका सिलसिला चलाया। वह कहने लगी—जजसाहब उस दिन धनीलालके साथ जिस गरीब बस्तीको हमलोग देखने गये थे और आपने कहा था कि विवाह-शादीका काम पूरा हो जाने-के बाद उस काममें हाथ लगाया जायगा, सो अब तो आप दोनों महानुभाव हम दोनोंको पूर्णरूपसे अपने काबूमें कर चुके, अब उस काममे हाथ लगानेमे ढील क्यों हो रही है?

जजसाहब—बहिन सुशीला! हम लोगोंने तुमपर अधि-कार जमाया है या तुम लोगोंने हमें बिना पैसे मोल ले लिया है। इसका निर्णय तो कोई दूसरा ही कर सकता है, पर जो भी हो, चाहे हम बिना दाम बिके हों या तुमको मुफ्तमे पा गये हों, दोनों बातें ही हमारा गौरव बढाती हैं। इसलिये जिस बात में तुम दोनों सहेलियोंको सतोष होता हो वही हमें स्वीकार है।

माहेश्वरी—नहीं महाशयजी मुझे मेरे महादेवको प्राप्त कर-नेमे एक लम्बे अर्सेतक कठिन तपस्या करनी पडी है। इसलिये अधिक मूल्य चुकानेकी बातको ही महत्व दिया जाना चाहिये।

रामचरण—और मुझे भी आपकी सहेलीको प्राप्त करनेमें पूजा-पाठका काफी सहारा लेना पडा। आप दोनों प्राणी तो

ब्याहके बहुत पहले ही एकताके सूत्रमें बँध चुके थे, इसलिये चाहे आपमेसे किसीको कुछ तपस्या करनी पड़ी हो पर वह एक निश्चित बातके लिये थी। पर मेरे विषयमें यह बात नहीं थी। मेरी देवीने तो मेरी पूजाको आरम्भमें ही अस्वीकार कर दिया था। इसलिये यहाँ जो कुछ आराधना करनी पड़ी है वह एक तरफा होनेके कारण उसको बहुत अधिक महत्व देना चाहिये।

सुशीला—पर उस पूजाकी अस्वीकृतिसे देवीजीको जो दण्ड चुकाना पड़ा है यदि उसका हिसाब लगाया जाय तो देवी और पुजारी दोनों ही उस मूल्यके बट्टेमें बह जायँ, पर आज तो देवी-देवताओंसे भी पुजारियोंका ही अधिक महत्व सिद्ध हो रहा है।

इसी तरह हास्य-विनोदकी बातें चल रही थीं, माहेश्वरीने याद दिलाया कि सुशीलाने अपने पिताकी सम्पत्तिका जो ट्रस्ट बनाने की बात कही थी उसके विषय में भी आज तय करना है न, इसलिये अब उसी विषयकी बाते होनी चाहिये।

सुशीलाने कहा—मेरी इच्छा है कि इस रकमके व्याजसे अछूत कहे जानेवाले भाइयोंको ऊँचा उठाने का काम किया जाय। उस दिन जजसाहबने भी इस विषयमे कुछ काम करनेका वादा किया था, फिर अब इसमे विलम्ब न होना चाहिये।

जजसाहबने कहा—श्रीरामचरणजीने हिसाब लगाकर बत-

लाया है कि इस पूँजीसे दस हजार रुपये मासिक हम मजे में व्यय कर सकते हैं। इतना खर्च करनेके बाद भी मूल सम्पत्ति में कुछ बढ़नेकी ही गुंजाइश रहेगी। इसके सिवा उनकी यह भी इच्छा है कि इस सारी सम्पत्तिका एक ट्रस्ट बना दिया जाय जिसके ट्रस्टी हम चारों व्यक्ति रहे और इसकी रजिस्टरी सरकारसे करा ली जाय।

इस तरह इस ट्रस्टके आरम्भिक कार्यको पूरा करके आगेके लिये किस ढंगसे काम करना चाहिये। इसीपर वाद विवाद होने लगा। अन्तमें सबकी यही राय ठहरी कि एक बार चल कर इन लोगोंके रहन-सहन तथा इनकी अन्य सारी परिस्थितियोंका अध्ययन करनेके बाद आगेका कार्यक्रम ठीक किया जाय।

बीसवाँ अध्याय

आज श्रीमान धनीलालकी अध्यक्षतामे अछूतोंका भाग्य निर्णय करनेके लिये एक कमीशन उनकी बस्तियोंका निरीक्षण करने निकला है। इसमे मन्त्रीका कार्य अर्थात् पूछी हुई बातोंका दर्ज करना तो रामचरणजीके जिम्मे दिया गया। जजसाहबको प्रश्न करनेका भार और दोनों महिलाओंको जिरह करनेका भार सौंपा गया।

सबसे पहले बस्ती में प्रवेश करते ही उन्होंने जो दृश्य देखा वह पानीकी नलपरकी भीड थी। एक छोटी-सी नल थी और पानी भरनेवालियाँ अपने बड़े-बड़े घड़े और कलसे लिये खड़ी थीं। यद्यपि सबने अपनी बारी ठीक कर ली थी, तो भी किसी-किसी-की ज्यादतीके कारण वहाँ कुछ गड़बड़ी मच जाती थी। हल्ला मचनेके अन्य और कई कारणोंके साथ यह प्रधान कारण था।

श्री धनीलाल पहले इसी बस्तीमे रहा करते थे, इसलिये प्रायः सभी उनके परिचित थे। पहले तो उनके नये रूपको देखकर किसीने उन्हे नहीं पहिचाना, क्योंकि उस समय तो वे एक फटी

मैली धोती और एक बीसियों पैबन्द लगी हुई बण्डी पहिना करते थे और आज खाकी देशी कमीजपर एक हाफपैण्ट डाटे हुए थे। चेहरा भी पहलेका-सा रूखा-सूखा और गाल चिपके हुए न होकर चमचमाता हुआ गोल-मटोल हो गया था। पर जब उन्होंने पाँचूकी माँको सम्बोधित कर कहा कि भाभी क्या गोलमाल है? देखो ये लोग तुम्हारी बस्ती देखने आये हैं, सब गोलमाल बन्द करके जो ये पूछें उसका ठीक-ठीक उत्तर दो।

तब पाँचूकी माँने कहा—धनीलाल तुम्हारा चेहरा तो इतना बदल गया है कि जब तक तुम्हारी बोली नहीं सुनी, मैं तो बिलकुल पहिचान ही नहीं सकी। मैंने सुना है कोई तुम्हारे साले हाकिम हो गये हैं, आजकल तुम दोनों प्राणी वहीं रहते हो।

धनीलाल—हाँ भाभी, यही तो जज साहब हैं, आज तुम लोगोंकी दुःख-सुखकी बाते अपनी आँखोंसे देखने आये हैं—और रामचरणजीकी ओर इशारा करके कहा—ये यहाँके एक बडे भारी बैरिस्टर और इन जज साहबके घनिष्ठ मित्र हैं। माहेश्वरी और सुशीलाको दिखाकर—ये दोनों विदुषी महिलाएँ इनकी धर्मपत्नियाँ हैं।

पाँचूकी माँने उन सबका परिचय पाकर हाथ जोडके उनको प्रणाम किया—अवश्य ही इन सबकी बात-चीतसे वहाँका हल्ला-गुल्ला एकदम बन्द हो गया था। वह बोली—महात्मा

गाँधीने हम लोगोंकी सभाल करनेको कहा है, शायद इसीलिये लोग इधर आते हैं। बहुतसी बातें पूछते हैं, बड़ी-बड़ी आशाएं दिलाते हैं, पर हम लोगोंका तो अभी कुछ भी सकट नहीं टला है। इस पानीकी कलकी बात ही लीजिये, घण्टे भर खड़े रहनेके बाद कहीं एक कलसी पानी मिलता है। सो भी देर होनेसे नहीं मिलता, पर आज तक किसीने यह दुःख दूर नहीं किया।

जज साहबने पूछा—क्यों भाई! जब इस कलका पानी नहीं मिलता तो आपलोगोंका काम कैसे चलता है?

पासके एक पोखरेको जिसमें गरमीकी मौसमके कारण बहुत कम जल बाकी रह गया था और जो थोड़ा-सा था, वह भी इतनी अधिक दुर्गन्ध दे रहा था कि मनुष्यकी तो कौन कहे, पशु भी उसमें मुँह देना पसन्द नहीं करेगा—पाँचूकी माँने उसे दिखाकर कहा इसी पोखरेका जल पीना पड़ता है।

जज साहबने पूछा—क्यों इस तरहका गन्दा पानी क्यों पीती हो? पासके किसी दूसरे नलसे भी तो पानी ला सकती हो?

पाँचूकी माँ—हम अछूतोंको अपने घरमें कोई काहे जाने देगा?

जजसाहब—तो पासकी किसी दूसरी बस्तीमें जाकर भी तो पानी ला सकती हो?

पाँचूकी माँ—सभी बस्तियोंका यही हाल है, एक छोटी सी

नल और सैकड़ों आदमी पानी भरने वाले, वहाँ भी बाकी लोगों को ऐसे ही गन्दे पोखरोंसे अपना काम चलाना पडता है।

सुशीलाने जिरह्की—क्यों भाई! इस कलसीके पानीसे आपका काम चल जाता है?

पाँचूकी माँ—नहीं बीबीजी इससे तो पीनेभरका भी काम नहीं चलता; बरतन-भांडे तो हर हालतमे ही इसी पोखरेमें धोने पडते हैं।

मारेश्वरीने पूछा—तो क्या इस मैले जलसे बरतन साफ हो जाते है?

पाँचूकी माँ—साफ तो नहीं होते पर कपड़ेसे पोंछ-पांछकर काम चला लेते हैं।

माहेश्वरी—क्या कपडा साफ होता है।

पाँचूकी मा—"कपडा साफ कहाँसे होगा, वह भी इस मैले जलकी तरह ही गन्दा रहता है, पर एक बार तो साफ हो ही जाता है।

सुशीला—माई! एक बार वह कपड़ा हमलोगोंको दिखा सकोगी?

पांचूकी मां—दिखा क्यों नहीं सकूंगी? पर उसे देखके आप क्या करेगी, वह आपके छूने लायक नहीं है।

सुशीला—वाह! हमलोगोंके तो छूने लायक नहीं और

आप लोग उसीसे खानेकी थाली साफ करके उस थालीमें खाती हैं ? हमें उसे एक बार अवश्य दिखावें ।

पांचूकी मांकी कलसी जलसे भर चुकी थी, इसलिये वह अपनी कलसी उठाकर आगे-आगे चली और कमीशनके पाचों सदस्य उसके पीछे-पीछे ।

पाँचूकी माँने अपने घरमेसे एक चमचम करती हुई थाली और एक मैला-कुचैला कपड़ा उनके सामने ला रखा, सुशीलाने अपने पाससे एक अनुवीक्षण यन्त्र निकालकर उन दोनों चीजों की परीक्षा की, कपड़ेमे तो छोटे-छोटे हजारों जीव रेंगते हुए दिखाई दिये, जो यदि पानी सूख गया होता तो उसीमें भर गये होते, परन्तु उसका उपयोग किये बहुत देर नहीं हुई थी इसलिये भींगा था। इससे वे सब रेंगते हुए दिखाई दे रहे थे ।

थालीपर जब यन्त्रको रखा तो उसपर भी महीन-महीन बहुत सी मिट्टीकी रेखाएँ दिखाई दीं । सुशीलाने दोनों चीजें उस यन्त्र द्वारा पांचूकी मांको भी दिखाई तथा पासमें बैठी हुई अन्य महिलाओंको भी दिखलाई । पर वे सब यह खराबी कैसे दूरकर सकती थीं ? उन्हें तो मजबूरीकी हालतमे ही ऐसा करना पड़ रहा था ।

उस पोखरे पर जाकर उन सबने वहाँकी अवस्था और पानी का निरीक्षण किया तो वे अवाक हो गये, किनारेपर असंख्य

जीव दिखाई दे रहे थे, पानी भी इतना गन्दा था कि पीनेकी बात तो दूर, उसमे हाथ देते भी डर-सा लगता था, फिर यदि उस पानीको पीने वाले आये दिन मलेरियामे लिप्त रहे या हैजे और प्लेग आदि संक्रामक रोगोंके शिकार बनें तो कौनसी नई बात है।

उन्होंने इन सारी बातोंको देखकर अगले रविवारको फिर आनेका वादा किया और रवाना हो गये।

सबसे पहले उन सबने अपनी रिपोर्ट तैयार करके उसकी एक कापी तो कारपोरेशनको, एक उस जमीनके मालिकको तथा एक सरकारको भेज दी।

उनका विचार समाचारपत्रोंमें भी इस विषयकी चर्चा करने का था, पर पहले जाब्ते की कार्यवाही कर ली जाय। यदि लाभ न हो तो सर्व साधारणमें इस विषयका आन्दोलन किया जाय, यही तय हुआ था।

इक्कीसवां अध्याय

जब जमीन्दार महाशयके पास कमीशनकी रिपोर्ट पहुँची तो उनके देवता ही कूच कर गये, क्योंकि जितने आदमियोंको वे बस्तीमें बसाये हुए थे उनकी आवश्यकतानुसार कारपोरेशनसे पानी दिलाना उनका कर्तव्य था, पर वे जल टैक्स बहुत कम देते थे। इसलिये कारपोरेशन पूरा पानी नहीं देता था। अतएव उसी दिन उन्होंने बड़ी कल लगानेके लिये कारपोरेशनमें अर्जी दाखिल कर दी।

इधर कारपोरेशनमे इनकी रिपोर्ट जाते ही स्वास्थ्य विभागके अफसरोंके कान खड़े हो गये। क्योंकि बस्तियोंकी स्वास्थ्य रक्षाकी जिम्मेदारी उन्हींपर थी। पर उन्होंने अपने इस कर्तव्यपर आजसे पहले कभी ध्यान ही नहीं दिया था। इसलिये अफसरोंने भी अपने नीचेके कर्मचारियोंपर दबाव डाला।

हाईकोर्टके एक जजसाहबकी सहीकी हुई रिपोर्टपर सरकारी केन्द्रमें भी काफी हलचल मच गयी। वहां भी इधरसे उधर टेली-

फोन दौड़ने लगे। फिर तो जमीन्दार साहबकी पानीकी अर्जीपर तत्त्वण ध्यान जानेमें कोई बाधा आ ही नहीं सकती थी। चार-पांच दिनके अन्दर ही उस बस्तीमें पहलेसे दुगुने मोटे एक नहीं दो-दो नल लग गये और बस्तीवालोंके लिये सिर्फ पीनेभर-को ही नहीं,कपड़े और बर्तन साफ करनेको भी पूरा पानी मिलने लगा। अब पानीकी नलपर भी पहलेकी तरह भीड़ नहीं लगी रहती। क्योंकि दो नल हो जानेसे अब आधे लोग ही एक नल-पर आते है। दूसरे मोटी नल हो जानेसे कलसी फौरन भर जाती है, इसलिये अब भीड़-भड़का नहीं रहता।

आज रविवारका दिन है। धनीलाल अपने चारों साथियोंके साथ फिर उस बस्तीमे आये हैं। आज सारी बस्तीको एक जगह इकट्ठी करके उनसे कुछ सलाह करनेकी बात है। इसलिये बस्ती-की एक ओर एक बड़के पेड़के नीचे बस्तीवालोंने वहाँकी जगह-को गोबर-मिट्टीसे लीप-पोतकर साफ सुथरी बना दी है तथा वहां अपनी कम्बलें बिछाकर बैठने लायक स्थान कर दिया है।

ठीक समयपर सब लोग उपस्थित हुए। आज इन्होंने उस बस्तीमें काफी परिवर्तन देखा। पहले दिन जहाँ कूड़े करकटका ढेर लगा हुआ था, उसका आज नामोनिशान भी दिखाई नहीं देता था, सब मकान लीप-पोतकर साफ-सुथरे बना लिये गये थे बस्तीका रूप ही बदला हुआ-सा मालूम दे रहा था। कलपर तो

एक चिड़ीका बच्चा भी दिखाई नहीं दिया।

ये लोग जैसे ही सभा स्थानके पास पहुँचे तो इन्होंने क्या देखा कि उस स्थानके बगलमें ही कुछ जवान लड़के बैठे जुआ खेल रहे हैं, यद्यपि जुआ खेलना कानूनन अपराध है, पर उन्हें न तो कानूनका ही कुछ भय है, और न जज या बैरिस्टर साहबकी ही परवाह है। वे तो अपने काममे इस तरह जुटे हुए हैं मानो उस सभासे यह अधिक आवश्यक है।

सभा इकट्ठी हुई, बस्तीमे सैकड़ों आदमी होते हुए भी बड़ी कठिनतासे वहाँ दस-पन्द्रह आदमी आयेथे। रामचरणजीने उन्हे सम्बोधन करके कहा—भाइयो, हम लोग तो आपको कुछ ऐसी बाते कहने आये हैं जिनसे आप अपनी वर्तमान स्थितिसे कुछ आगे बढे पर देखा जा रहा है कि आपमेंसे बहुत कम इसकी परवाह करते है। हमने आते समय देखा आपकी बस्तीके बाहरवाली ताड़ीकी दूकानमें काफी भीड़ हो रही है। वह उधर बीस-पचीस जवान बैठे जुआ खेल रहे हैं, इस घरके दूसरी ओर कई स्त्रियोंको झगड़ते छोड़ आये हैं, यदि आपलोग इसी तरह दुर्व्यसनोंमे फँसे रहेंगे तो भला कोई दूसरा आपकी क्या मदद कर सकता है।

बैरिस्टर साहबकी बाते सुनके उस बस्तीके मुखिया निहोरीलाल भगतने हाथ जोड़के कहा—सरकार आपके एकबार यहाँ आनेसे ही हमे जो लाभ पहुँचा है उसका हम बखान नहीं कर

सकते, परन्तु हमलोग इतने नीचे गिर चुके हैं कि अपनी इन आदतोंको जिनसे हमारी यह दुर्गति हुई है छोड़ना नहीं चाहते। पर आपलोग इसका कुछ विचार नहीं करें। आपके सामने जो ये थोड़ेसे आदमी बैठे दिखाई देते है, यदि इनको ही आप कुछ अच्छा रास्ता बता सकें तो वे सब भी दो दिन आगे और पीछे आपके पास दौड आवेंगे।

निहोरी भगतकी बाते सुनके सुशीलाने कहा—सरदारका यह कहना बहुत ठीक है, यदि इन भाइयोंके साथ यहाकी हमारी वहिनें भी सहयोग दें तो इतने ही लोग बहुत कुछ करके दिखा सकते हैं।

निहोरी०—देवीजी ! हमारे यहाँकी स्त्रियाँ तो आपके द्वारा जलकलका प्रबन्ध हो जानेसे ही आपकी चेरी बन गयी हैं। इस आगनके पीछेकी ओर वे सब बैठी हुई हैं। आपलोगोंके सामने आते उन्हें लज्जा प्रतीत हो रही है। इसीसे वे सब वहां बैठी हैं।

भगतकी यह बात सुनके माहेश्वरी और सुशीला दोनों जनी वहाँ चली गयीं और उन सबको समझा-बुझाकर लिवा लाईं। अब तो वह छोटासा स्थान ठसाठस भर गया।

जज साहबने खड़े होकर कहना आरम्भ किया—प्यारी बहनों और भाइयो ! यह तो आप जानते ही हैं कि मैं भी आपकी ही विरादरीका एक आदमी हूँ और मेरे ये बहनोई धनीलाल

तो कलतक आप लोगोंके साथ ही रहते थे, फिर हम तो हजारों रुपये महीना कमावें और मौजसे रहे और आप लोग संसारमें जितनी भी यातनाएँ हैं, उन सबको सहे इसका कारण और कुछ नहीं है, यह सब आपकी नासमझीका ही दोष है।

आपने देखा होगा कि गत सप्ताह तक आपको इसी गन्दे तालाबका जल पीना पड़ रहा था, पर आपकी उचित मागको अधिकारियोंके सामने रखते ही आपका यह दुःख कुछ दिनोंमें ही दूर हो गया। इसी तरह कुछ ऐसे भी काम है जो आप अपनी ही चेष्टासे ठीक कर सकते हैं। जिनमे किसी दूसरेका मुँह देखने की आवश्यकता नहीं। आप काबुलियोंसे रुपये उधार लेनेकी बातको ही ले लीजिये। यदि आप उनसे उधार लेकर फालतू कामोंमे खर्च नहीं करें तो आपकी गाढ़ी कमाईमेंसे व्याजके रूपमें हजारों रुपये महीना उनकी पाकेटोंमे क्यों चले जायँ?

शायद आपलोग जानते होंगे बहिन सुशीलाके पिताकी अतुल सम्पत्ति इनको प्राप्त हुई है, परन्तु इनके पति बैरिस्टर साहब इतना अधिक कमा लेते हैं कि इन्हें इस सम्पत्तिकी कोई आवश्यकता नहीं। इसीलिये इन्होंने उस रकमके व्याजसे गरीबों की सहायता करनेके लिये एक फंड खोला है। इनकी इच्छा है कि आप सबके कर्जको उस फंडसे चुका दिया जाय और किसी-से व्याज न लेकर सिर्फ मूलधन ही लौटा लिया जाय।

यह बात उन गरीबोंके बहुत काम की थी, क्योंकि उनमेंसे प्राय: सबके सब इस रोगके रोगी थे। उन्होंने इसके लिये उनके प्रति बहुत ही कृतज्ञता प्रकट करते हुए इस भारी कष्टसे उद्धार करने की प्रार्थना की।

जजसाहबने कहा—आपलोग अपने-अपने देनेका हिसाब सरदारको समझा दें, हमलोग अगले रविवारको आकर इस विषयपर पूरा विचार करेंगे।

बाईसवां अध्याय

श्रीयुत घसीट्टूरामके साथ माहेश्वरीका विवाह हो जानेके बाद पंडितजी तथा उनकी दोनों पत्नियोंका भार बहुत कुछ हल्का हो गया। पण्डितजी जो कमाकर लाते थे उससे उन तीनोंका निर्वाह हो कर भी कुछ रुपये बच जाते थे; इन रुपयोंका कैसे सदुपयोग किया जाय इस विषयमें वे लोग प्रायः बातें किया करते। आज भी भोजनके बाद जब वे आराम से बैठक खानेमें बैठे बरसातकी बहार लूट रहे थे, तब यह प्रश्न फिर उठा। श्रीमती एनाने कहा—पण्डितजी! आप उस दिन कह रहे थे कि यदि हम दोनों बालिकाओंको पढ़ाना स्वीकार करें तो आप उनके लिये एक कन्या पाठशाला खोल देंगे। मैंने दीदीसे आज्ञा प्राप्त कर ली है, यदि आप चाहें तो यह कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

पण्डितजीने कहा—अगले महीनेसे मेरी पेन्सन स्वीकार हो जायगी, इसलिये हम तीनों ही इस कामको आरम्भ करें तो और भी अच्छा हो।

एना—यह तो बड़ी खुशीकी बात है। आजकल बालिकाओं-

को जो शिक्षा दी जा रही है, वह आगे चलकर उनके कुछ भी काम नहीं आती। आप मुझे ही देख लीजिये, इतना पढ़ना-लिखना सब बेकार हो गया। भारतकी महिलाओंको नौकरी तो करना है नहीं और यह शिक्षा सिवा नौकरी दिलानेके और किसी भी काम नहीं आती। हाँ ज्ञानवृद्धिके लिये हम स्त्रियोंको भी शिक्षाकी आवश्यकता है, पर वह शिक्षा ऐसी होनी चाहिये, जो हमारे भविष्य जीवनको ऊँचा बनानेके काम आवे।

पण्डितजी—हाँ तुम्हारा यह कहना बहुत ठीक है। आज लगभग तीस सालसे भी अधिक मुझे इस स्कूलमे पढ़ाते हो गये, पर यहाँकी पढ़ी हुई लडकियोंमें आज दस-बीसको छोड़कर बाकी सबकी सब अपनी घर गृहस्थीमें ही लगी हुई हैं। मैं नहीं जानता इस तरहका उदाहरण आँखोंके सामने दिखलाई देते हुए भी लोग क्यों अपनी बालिकाओंका अमूल्य समय इस तरहकी शिक्षाके लिये व्यर्थमें बरबाद कर रहे हैं? मैं तो इतने दिनके अनुभवके बाद इस परिणामपर पहुंचा हूँ कि हमारी भारतीय महिलाओंके लिये तो हिन्दी भाषाके ज्ञानके साथ-साथ विदेशी भाषाकी थोड़ी जानकारी हो जाना ही यथेष्ट है। हां, जो बालिकाएँ डाक्टरी, वकालत या अन्य किसी तरहकी उच्च शिक्षा लेना चाहें वे भले ही इसमें अपना समय लगावें, नहीं तो उनके लिये अक्षर ज्ञानके साथ-साथ गृहस्थीके उपयोगी विषयोंकी उचित जानकारी प्राप्त

करना ही लाभदायक है।

एना—हां, दीदीने भी येही बातें बताकर स्कूल खोलनेकी सम्मति दी है। उनका कहना है कि बालिकाओंको उचित अक्षर ज्ञानके साथ-साथ पाक-विद्या, सिलाई,बुनना, सूईका काम, बच्चों-का पालन-पोषण तथा रोगियोंकी सेवा आदिकी शिक्षा देना ही उचित है। यदि बचपनसे ही उन्हें अपने भविष्य जीवन के उप-योगी अंगोंका पूर्ण ज्ञान करा दिया जाय तो वे अवश्य ही भली गृहिणी बन सकेंगी।

पण्डितजी—अच्छा तो परसों तुम्हारी वर्षगाँठके अवसर-पर तुम अपनी कुछ सहेलियोंको भी आमंत्रित कर दो। जिससे हम सब बैठकर इस विषयमे और भी भलीभाँति विचार कर सके। बेटी माहेश्वरी और सुशीला भी आजकल गरीब बस्तियों-के सुधारमे लग रही हैं। इसलिये वहाकी बालकाओंकी आवश्य-कताका भी उन दोनोंको काफी परिचय मिल गया होगा। इस-लिये परसों ही इसका निर्णय करना ठीक रहेगा।

तेईसवाँ अध्याय

श्रीमती एनाकी वर्ष-गाठके उपलक्ष्में एक भोज दिया गया है जिसका सारा आयोजन श्रीमती कात्यायिनी देवीने अपने हाथों किया है। भोजनकी सारी वस्तुएँ बहुत सादगीसे तैयारकी गई है। एनाके प्रायः चालीस मित्र और सहेलियोंको निमन्त्रण दिया गया है जिनमें अधिकाश उनकी सहपाठिनें हैं जो आज भिन्न-भिन्न घरोंकी शोभा वढ़ा रही हैं।

यथा समय सबके उपस्थित हो जानेके बाद आजके भोजन-का कार्य आरम्भ हुआ। सबने श्रीमती एनाके दीर्घ जीवनकी कामनाके साथ उस सीधे-सादे भोजनसे अपनी रसनाकी तृप्ति की। यद्यपि उनमेसे अधिकाश अन्य तरहके खाद्योंके ही आदी थे पर आजके भोजनने उन्हें अपने घरके सीधे-सादे खानेका अनुभव कराया।

जब उन्हें यह मालूम हुआ कि यह सारा सामान सिर्फ एक नौकरानीकी सहायतासे श्रीमती कात्यायिनी देवीने अपने हाथसे ही प्रस्तुत किया है तब तो उन्हें और भी आश्चर्य हुआ, क्योंकि

उनमेंसे कई तो ऐसी थीं जो अपने पतियोंकी सामर्थ्यके बाहर भी बिना रसोइयेके अपना काम नहीं चला सकती थीं। ऐसी देवियोंको सबसे पहले आज ही अपनी भूलका अनुभव हुआ।

भोजनोपरान्त वह मण्डली एक सभाके रूपमें परिवर्तित हो गयी, अपने लिये प्रकटकी गई शुभ-कामनाके बदलेमें श्रीमती एनाने उपस्थित सज्जनों और महिलाओंको धन्यवाद देते हुए कहा कि इस शुभ-अवसरपर मैं आपलोगोंसे एक विषयकी सलाह लेनेकी धृष्टता कर रही हूँ जिसके लिये आशा है आप सब क्षमा करेंगे।

यद्यपि हम सब उच्च शिक्षा प्राप्त हैं पर स्त्रियोंकी वर्तमान शिक्षाप्रणाली मुझे इतनी दोष पूर्ण मालूम हो रही है कि उसके विषयमें अपना विचार प्रकट किये बिना मुझसे नहीं रहा जाता।

मैं देख रही हूँ कि आपलोग जो अधिकांश मेरी सहपाठिने हैं आज इच्छापूर्वक अपने-अपने पतियोंके सहयोगसे अपनी गृहस्थी चला रही हैं। परन्तु क्या कभी आपने इस बातपर भी ध्यान दिया है कि आप इस गृहस्थरूपी गाड़ीके सञ्चालनमें क्या सहायता कर रही हैं।

जब गृहस्थीको एक गाडीका रूप दिया जा रहा है और उसके दोनों पहियोंको पत्नी और पुरुषका, तो यह बात निर्विवाद सिद्ध हो जाती है कि स्त्री और पुरुषको इस गृहस्थीमें समान

रूपसे सहायक होना चाहिये। पर हमलोग क्या इस बातको सत्य सिद्ध कर सकती हैं? मैं तो कहूंगी कि कदापि नहीं। कारण पुरुष समाज अपनी और हमारी रक्षाके लिये अपना हक पूर्ण रूपसे अदा कर रहा है पर हम स्त्रियां क्या ऐसा कर रही हैं? नहीं, हम अपना हक तो पूरा क्या करती हैं—उन्हें सहायता तो क्या देती हैं, उलटे उनकी कठिनाइयोंको और भी अधिक बढ़ा रही हैं।

जिस तरह पुरुषोंका काम मेहनत करके कमाना है वैसे ही हमारा काम मेहनत करके गृहस्थीके बोझेको सभालना है। पर हम बोझ सम्भालना तो दूर उसे और भी भारी कर रही हैं। हमें भोजन बनानेको रसोइया, सेवाके लिये दास, सैर करनेके लिये मोटर, बच्चोंके पालनेके लिये धाय चाहिये। सारांश हमारे हर काम दूसरोंकी सहायतापर ही निर्भर करते हैं। हम तो अपनेको सबसे ऊपर एक भोगकी देवी समझती हैं। यदि बेचारे पुरुषसे हमारी इन सेवाओंमें जरा भी त्रुटि बन गई तो फिर उस बेचारेका इस संसारमें कहीं भी ठिकाना नहीं है। यद्यपि मैं अङ्गरेज माता पिताकी पुत्री हूँ और उसी सभ्यताके अनुसार पाली-पोसी गई हूँ और मुझे शिक्षा भी उसी शैलीकी प्राप्त हुई है, पर मेरा जन्म इसी भारत-भूमिमे हुआ है और मैं अपनी मातृभूमि भारतको ही मानती हूँ। मैंने पढ़ते समय योरोपकी

सभ्यताको ही सबसे ऊँचा समझा था क्योंकि हमारे शिक्षकों ने हमें ऐसा ही समझाया था। उन्होंने भारतकी प्रत्येक बातको हेय समझनेकी ही हमें शिक्षा दी, पर बहिन कात्यायिनी देवीकी कृपासे मैंने हिन्दू धर्मके गूढ़ तत्वोंको जान पाया है। जो पद्धति यहाके महर्षियोंने अपने त्याग और परिश्रमसे प्रचलितकी है वह इतनी ठोस बुनियादपर चालूकी गई है कि सुदीर्घ कालसे उसपर नाना प्रकारके प्रहार होते रहनेपर भी आजतक वह उसी प्रकार अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं।

प्यारी बहनो! आज आप सब मेरी तरह इस पराई शिक्षा- के असारपनका भली-भांति अनुभव कर रही हो। आप यह भी अनुभव कर रही हो कि पुरानी पद्धतिके अनुसार हमारी शिक्षित बहिनोंको अपनी गृहस्थी चलानेमें जो आनन्द का अनुभव और सन्तोष प्राप्त होता है, वह हम नये ढंगकी शिक्षिताओंको नहीं होता। हमे सन्तोष हो भी कैसे? हम तो आरम्भसे ही विला-सिताके फेरमें इतनी पड़ जाती हैं कि अपने बनाव-शृंगार और इस नकली सभ्यताकी रक्षामे ही अपना सारा समय लगा देती हैं। यदि हमारे पुरुष हमारी इस खर्चीली मांगोंको पूरा करने योग्य कमाते रहें तो ठीक है, नहीं तो उन बेचारोंकी जो दुर्दशा हम करती हैं वह क्या तो वे जानते हैं, नहीं तो भगवानके सिवा उसका कोई गवाह नहीं है।

इसलिये हमने विचार किया है कि एक ऐसी पाठशाला खोलें जिसकी दस सालकी शिक्षासे हमारी बालिकाएं इस योग्य हो जाय कि आन्तरिक ज्ञानके साथ-साथ उन्हे एक गृहस्थीको सुन्दर रूपसे चलाने योग्य सभी बातोंका ज्ञान हो जाय। साथ ही उन्हे अपने प्राचीन गौरवपर गर्व करने योग्य प्राचीन शास्त्रोंके गूढ़ तत्वोंका परिचय भी हो जाय, जिससे वे अपने भविष्य जीवनमें स्थिर रूपसे अपने धर्मपर आरूढ रह सके।

श्रीमती एनाका यह सार गर्भित भाषण सुनके सबने इस [illegible]तिका अनुमोदन किया और तन, मन, धनसे इस नये आयो-जनमें उनकी सहायता करनेका बचन दिया।

इसके बाद कुछ इधर उधरकी बातें होकर यह समारोह सानन्द समाप्त हुआ।
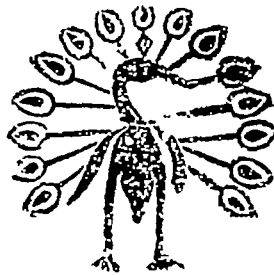
चौबीसवां अध्याय

एक अच्छा दिन देखकर "राष्ट्रीय कन्या पाठशाला" के नाम से बड़े समारोह पूर्वक यह पाठशाला खोल दी गई। इसकी पढ़ाईका क्रम खेल-कूदके साथ शिक्षा देनेका रखा गया। पांच सालकी हो जानेपर ही बालिकाएं इसमे भरतीकी जाती हैं।

आरम्भमें उन्हे काठपर लिखे हुए अक्षरोंसे वर्णमालाका ज्ञान कराया जाता है। उनकी गुड़िया, गेंद, गाड़ी, मोटर, घोड़े, हाथी, चूल्हा, तवा, कढ़ाई आदि भविष्यमें काम आने योग्य चीजें सब सुन्दर रंगसे रंगे हुए काठसे तैयार करायी गई है, जिनपर एक-एक अक्षर भी लिखा है। पहले उन्हें उस तसवीरका ज्ञान कराया जाता है, बादमें उसपर लिखे अक्षरोंका, यह सब खेलके द्वारा होता है। जैसे विमलाकी गुड़िया अपने घोड़ेपर चढकर कमलाकी गुडियाके यहां न्योता खाने गयी है। जिस समय वह वहां पहुँची कमलाकी गुड़िया एक टेबुलके सामने कुर्सी पर बैठी है। इस मुलाकातमें उन दोनों बालिकाओंको पांच अक्षरोंका ज्ञान करा दिया गया। बिमलाकी गुड़िया पर "क" लिखा है और उसके

घोडेपर "ख" उसी तरह उसकी कुर्सीपर "घ" तथा टेबुलपर "ड" इसी तरह सारे अक्षरोंके खिलौने बने हुए हैं और उन्हे नये-नये खेलके साथ नये-नये अक्षरोंका ज्ञान होता रहता है।

इसी तरह उनसे व्यायाम कराते समय भी कक्षाके हिसाबसे गीत तैयार करके उनसे खेलमे व्यायाम तो कराया ही जाता है उन्हे अक्षरोंका परिचय भी मिलता रहता है।

जब इस तरह वे वर्णमाला पूरी कर चुकती हैं, तब उन्हे दो-दो अक्षरोंके खेल बताये जाते हैं। जैसे कुर्सीपर एक गुड़िया बैठी है, कुर्सीपर घ अक्षर बना है और शान्ताकी गुड़ियापर "र" बना है, इस तरह शान्ताकी गुडिया कुर्सीपर बैठनेसे वह "घर" बन गया। इसके बाद एक "घरका' खिलौना बनाके भी "घर" समझाया जा सकता है, पर पहले एक-एक अक्षरको जोडना सिखानेके लिये अलग-अलग अक्षरोंसे काम लिया जाता है।

इस तरहकी पद्धतिसे उन्हें एक सालमे घरमें उपयोग होने योग्य प्राय: सभी वस्तुओंका ज्ञान करानेके साथ-साथ पूरी वर्ण-माला और मात्रा सहित संयुक्ताक्षरोंका पूरा ज्ञान भी करा दिया जाता है।

इस ढंगकी शिक्षासे लडकिया पाठशाला जानेसे तनिक भी नहीं घबरातीं, प्रत्युत चावसे जाती हैं।

इसके बाद दूसरे सालमें उन्हे संयुक्ताक्षरका ज्ञान कराके छोटे छोटे लेख पढ़नेका अभ्यास करा दिया जाता है, पर वे वाक्य और लेख सब उनके भविष्य जीवनके उपयोगमें आने योग्य ही होते हैं न कि आजकलके तरहके निरर्थक शब्दोंका जंजाल।

इस तरह दो सालकी शिक्षाके बाद उन्हे कलम दवात या स्लेट पेन्सिलसे लिखना सिखाया जाता है, जो बहुत जल्दी उन्हें आ जाता है। फिर तो पढ़ाईके साथ-साथ उन्हे रसोई बनाना, सिलाई करना, कपड़े साफ करना आदि गृहस्थीके उपयोगी सभी विषयोंका पूरा ज्ञान करा दिया जाता है।

इस तरहकी इस पाठशालाकी शिक्षा पद्धतिसे सारे शहरमें एक हलचल-सी मच गई है और उसकी बालिकाओंकी इन थोड़े से दिनोंकी योग्यताको देखकर सब दातों अंगुली काटने लगे और इसके सञ्चालकोंको वाहवाही देने लगे।

पच्चीसवां अध्याय

गत सप्ताहके निश्चयके अनुसार वह सुधारक मंडली समय पर बस्तीमें फिर उपस्थित हुई। आजकी उपस्थिति देखने योग्य थी, आज न तो वे अवारा लड़के ही जुवा खेलते दिखाई दिये और न बस्तीके बाहरवाली ताडीकी दूकान पर ही गत बारकी तरह भीड़ थी। आज तो सारी बस्तीकी बस्ती उस बड़के पेड़के नीचे आ उपस्थित हुई थी।

वहा एक ओर सब स्त्रिया चुपचाप बैठी थीं और दूसरी ओर सब मर्द अपना आसन जमाये हुए थे। जैसे ही यह मंडली वहां पहुँची सबने उठकर इनका अभिवादन किया, नियमानुसार कार्य आरम्भ किया गया।

सबसे पहले सरदारसे उस बस्तीके कर्जकी लिस्ट मागी गई जो सरदारने तुरन्त सामने ला रखी। सब मिलाकर उस बस्तीके बासिन्दोंपर आठ सौके लगभग काबुलियोंका पावना था। जो उस बस्तीके इधर-उधर चीलकी तरह हर समय मंडराते रहते थे।

जज साहबने धनीलालके द्वारा उन सबको बुलाया, जिनमें अधिकांश पांच-सात मिनटके भीतर ही वहा आ उपस्थित हुए, उन्होंने उन सबसे कहा कि जो तुम्हारा उचित पावना हो उसकी हमें एक लिस्ट बना दो, हम इसी समय भुगतान करा देते हैं।

यद्यपि इस तरह रुपया लेनेसे उनकी काफी हानि हो रही थी, उनका फलोंका पेड़ ही नष्ट हो रहा था। पर इस समय बिना हिसाब साफ किये उनका छुटकारा नहीं था, क्योंकि वे खूब अच्छी तरह जान गये थे कि यदि इस समय हम जरा भी गोल-माल करेंगे तो इसका परिणाम हमारे लिये बहुत भयकर होगा, अतः उन्होंने उसी समय अपने-अपने हिसाब उपस्थित कर दिये।

जज साहबने सब कागजपत्र रामचरणजीके सामने रखते हुए सबसे कहा कि देखो भाइयो इस समय आपका यह कर्ज बारिस्टर साहब इस शर्तपर चुका देते हैं कि आप इनके रुपये बिना किसी तरहके सूदके धीरे-धीरे किस्त करके चुका देंगे। सबने इस बातको सहर्ष स्वीकार कर लिया, क्योंकि काबुलियों-को उस बस्तीसे सैकड़ों रुपया महीना मिलते रहनेपर भी असल कर्जमेंसे कुछ भी नहीं कम होता था, सारी रकम सूदमें ही खप जाती थी।

उसी समय सुशीलाने अपनी जाकेटकी जेबमेसे नोटोंका एक बण्डल निकालके जज साहबके सामने फेंक दिया; उन्होंने राम-

चरणजीके कहनेके अनुसार उन सबको रुपये दे-देकर हैंडनोट वापिस ले लिये। इस तरह उन गरीबोंके दिलपर अपनी एक विशेष छाप छोड़कर यह मण्डली वहांसे विदा हुई।

जाते समय माहेश्वरीदेवीने उनको आशा दिलाई कि सामने के सप्ताह में वे उनको अच्छी खाद्य सामग्री प्राप्त हो सके इसके लिये एक दूकान खुलवानेका प्रबन्ध करनेपर विचार करेंगे।

इस तरह आजका काम समाप्त करके वे सब सीधे सुशीला देवीके घरकी ओर चल पडे, रास्तेमें जाते-जाते सुशीलाने कहा, इस तरह चींटीकी चालसे काम करनेपर तो अपने फंडका बहुत ही कम उपयोग कर सकेंगे।

इसपर जज साहबने कहा—आप घबराये नहीं, यह हमारा प्रयोगात्मक काम हो रहा है। जहां इसमें सफलता मिली कि हम यहांकी सारी बस्तियोंमें एक साथ ही कार्य आरम्भ कर देंगे।

———

छब्बीसवाँ अध्याय

अगले सप्ताहमें फिर यह मण्डली उस बस्तीमें जा उपस्थित हुई। इनके वहां पहुँचतेही झन-झन करके इनके सामने रुपयोंकी बिना मांगे ही बर्षा-सी होने लगी।

उस बस्तीके अधिकाश लोग पासकी एक जूटमिलमें काम करते थे। जहां हर सप्ताह मजूरीके पैसे मिल जाते थे, उन्होंने अपने मोदीका सप्ताह भरका हिसाब करके उसके पैसे चुका दिये बाकी जो बचे वे इनके सामने ला रखे।

इनके इस तरहके बर्तावसे इस सहायक मण्डलीका उत्साह दूना हो गया। अपने थोड़ेसे दिनके सहयोग से इन गरीबोंमे इतना अधिक परिवर्तन देखकर अपनेपर उनको भरोसा हो गया उन्होंने देखा कि इस थोड़े से अर्समे ही उस बस्तीकी बहुत गदगी दूर हो गई है। उनके मकान जो सालमें एक बार भी लीपे-पोते नहीं जाते थे वे अब गोबर मिट्टीसे लिपकर झकाझक बन गये हैं। उनके बदनके कपड़े जो इतने मैले रहते थे कि देखनेवालोंको उनके प्रति घृणा हुये बिना नहीं रहती अब वे सब धुलेधुलाये

साफ़ दिखाई देते थे। उनके बच्चे भी साफ-सुथरे दिखाई देते थे। सबसे भली बात तो यह थी कि उनमेंसे अधिकांशने एकदम ताड़ी पीना छोड़ दिया था, तथा खाली समयको जुआदि खेलकर बरबाद करने के बदले वे कुछ न कुछ काम ही करके बिताते थे।

जब उनसे इन सुधारोंके विषयमें पूछा गया तो वे कहने लगे आप तो सप्ताहमें एक बार आते हैं पर हमारे यह धनीलाल भाई रोज यहाँ आकर हमको समझाते-सिखाते रहते हैं इन सारी बातोंका श्रेय इन्हींको मिलना चाहिये।

जज साहबने धनीलालसे पूछा—भाई साहब आपको यह सब करनेका समय कहांसे मिल जाता है? मैं तो आपको बराबर अपने काममें जुटा हुआ पाता हूं, फिर आप यहाँ कब आते हैं?

धनीलाल बोले—जनाब मैं घूमनेके समय आजकल मैदान न जाकर इधर ही चला आता हूँ और इनको यह सब बाते बताता रहता हूं, असल बात तो यह है कि आप लोगोंके सद्व्यवहार-का इनपर इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि यह हम लोगोंके कहे अनुसार सब कुछ करनेको तैयार हो गये हैं।

यह बात नहीं है कि महात्माजीकी फैलाई हुई सद्भावना से प्रेरित होकर इनको ऊँचा उठानेके लिये इससे पहले किसी ने प्रयत्न ही नहीं किया था। नहीं, यहाँ कई महानुभाव आये और

उन्होंने सदभावनासे यहां काम भी किया। पर उस काम करनेमें वास्तविक काम करनेसे नाम पैदा करनेकी भावना कहीं अधिक थी। इसलिये उन्होंने नाम तो कमा लिया पर काम स्थायी न होनेसे यह लोग जहाँ थे वहीं रह गये। पर इस बार मेरी अवस्था देखकर इन्हें विश्वास हो गया है कि यदि हम चाहें तो इन्हींकी तरह हम भी ऊँचे उठ सकते हैं। बस इसी धारणाको मनमें रखकर यह लोग काम कर रहे हैं।

आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि इस बस्तीकी स्त्रियाँ जो दिनभर इधर-उधरकी बातोंको लेके परस्परमें झगड़ती रहती थीं वे आजकल नियमित रूपसे दोपहरका समय चर्खा चलानेमें लगा रही है,इन दस दिनोंमें ही इस काममें इन्होंने काफी उन्नति कर ली है।

मोती और गणेश यह दोनों युवक जो पहले दिन कहनेपर भी अपने तासोंके खेलको छोड़कर हमारी बाते सुनने तक नहीं आये थे। अब अपनी इच्छासे ओद्योगिक पाठशालामें जाकर कपड़ा बुननेका काम सीख रहे हैं, इनकी इच्छा है कि हम इस कामको अच्छी तरह सीखकर इस बस्तीका काता हुआ सारा सूत वस्त्रोंके रूपमें परिवर्तित कर देंगे।

मनसे काम सीखनेके कारण इस एक सप्ताहमें ही इन दोनोंने काफी उन्नति कर ली है। इनकी इच्छा है कि आप लोग यहाँ दो

करघे बैठा दे तो यह अपना काम आरम्भ कर दे ।

धनीलालकी बात सुनके श्री सुशीला देवीने जज साहबसे इसकी स्वीकृति दे देने का अनुरोध किया। जो उसी समय स्वीकार हो गया तथा धनीलालको इस कामको पूरा कर देनेका भार सौंपा गया। गोपाल भगतने अपनी झोपड़ीका एक हिस्सा इसके लिये खाली कर देनेकी बात स्वीकार की।

सत्ताईसवाँ अध्याय

चर्खे, कर्घेका अध्याय समाप्त होते ही श्री रामचरणजीने बात छेड़ी कि आजका हमारा कार्यक्रम यहाँ एक समन्वय समिति खोलनेका है। इसलिये अब इस मुख्य विषयको हाथ में लेना चाहिये। मेरी तो यह राय है कि इस कामको चालू करनेके लिये हमारे फण्डसे पाँच सौकी स्वीकृति दी जाय। इस रकमसे यहाँ एक दूकान खुलनी चाहिये जिसमें खाद्य पदार्थ आदि जो इस बस्ती मे खर्च होता है थोक भावपर खरीदकर रखा जाय और पड़ता दाम पर ही वह सबको बेंचा जाय। इसके लिये एक दूकानकी जगह चाहिये तथा एक युवक काम करनेवाला चाहिये जो थोडा पढ़ा-लिखा भी हो।

दूकानके लिये तो सरदारने अपने मकानके सामनेका हिस्सा देना स्वीकार किया तथा कामके लिये सुमारू भगतने हां की, जो कुछ लिखना-पढ़ना भी जानता था।

जज साहबने कहा—दूकान तो हम बिना भाड़ेकी स्वीकार कर लेते हैं। पर काम करनेवालेकी सेवाके बदले हमें वेतनके रूप

में कुछ अवश्य देना चाहिये,कारण यह एक दिनका काम नहीं है जो योंही ले लिया जाय,आखिर सुमारूराम नवयुवक है,उसे कुछ कमानेकी चिन्ता तो करनी ही होगी। इसलिये हम यह उचित समझते हैं कि आरम्भमें इन्हें दस रुपया मासिक दिया जाय बादमें काम बढ़नेपर उन्नति होती रहेगी।

इसपर रामचरणजीने कहा—हा यह बात बहुत ठीक है क्योंकि इसके पहले भी इस तरहकी एक दूकान खोली गयी थी और उसके कार्यकर्ता अवैतनिक ही रखे गये थे। पर कुछ दिनोंमें भी उन्होंने चोरी आदि करके उस कामको चौपट कर दिया था, इसलिये जजसाहबका कहना ही ठीक है।

सबको यह बात जँच गयी और इस दूकानका सामान जुटाने तथा अन्य कामोंको पूरा करनेका भार श्री धनीलालको सौंपा गया तथा अगले सप्ताहतक इसे पूरा करनेकी ताकीद कर दी गई।

इसके बाद मोहन मोचीने खड़े होकर हाथ जोड़के निवेदन किया कि इस बस्तीमे हम लोग आठ-दस आदमी जूता बनाने का काम करते हैं। हम यहाके चीना व्यापारियोंका ठेकेपर काम करते हैं। जिस जोड़ीको वे चार-साढ़े चार रुपयेमें बेचते हैं,उसमें एक रुपयेसे अधिकका सामान नहीं लगता पर हमे सिर्फ अठारह आना पैसा देते हैं। इस तरहकी जोड़ी तैयार करनेमें हमारे पूरे दो दिन लग जाते हैं, वह भी जब रात-दिन सिर तोड़ मेहनत करते

हैं तब, साथ ही इस तरहका काम भी तीसों दिन नहीं मिलता। कभी-कभी तो हफ्तों बेकार बैठे रह जाना पड़ता है। यदि हमे चमड़ा वगैरह सारा सामान मिल जाय तो हम कम-से-कम तीन रुपयेमे तो एक जोड़ा आसानीसे बेच लेगे। एक बात और भी है जब हम काम देने जाते हैं तो प्राय. आधा दिन हमारा बेकार चला जाता है। यदि घरमें रहकर उतनी देर हम काम करे तो चार छः आनेकी मजदूरी और अधिक कर सकते हैं।

सहायक मण्डलीने इस भाईकी दुःख कहानीको ध्यान-पूर्वक सुना और इस विषयमें अगले सप्ताह विचार करनेका वादा किया।

अट्ठाइसवाँ अध्याय

हमारी सुधार मण्डली यथा नियम आज फिर उस बस्तीमें दिखाई दे रही है। कुछ दिन पहले जहाँ आलस्य और गरीबीका साम्राज्य स्थापित हो रहा था वहाँ अब चारों ओर जीवन और प्रगति दिखाई दे रही है।

सहयोग समितिकी नयी दूकान इन थोड़े ही दिनोंमे काफी लोकप्रिय हो गई है। उसमें वस्तुएं बहुत ही देखभालकर लायी जाती हैं। इससे दाम तो उचित लगते ही हैं, चीजें भी बहुत अच्छी आती हैं। अबतक यहाँके निवासियोंको दाम तो अधिक देने पड़ते ही थे पर चीजें भी खराब से खराब खरीदनी पड़ती थीं। इसका कारण भी था, प्रायः सभी लोग दूकानदारोंसे उधार सौदा खरीदते थे इससे उन्हे मुँहमांगा दाम तो देना पड़ता था, साथ ही बाजारकी घटियासे घटिया चीज उनके पल्ले पड़ती थी। वजन और माप्में जो कम रहती थी वह अलग।

पहले तो यहाँकी सारी वस्तुएँ अच्छी देखकर खरीदी ही जाती थीं। बादमें उन्हें छाड़-पिछौड़के और भी अच्छी बना लिया

जाता था। दाम भी इतने जाँच-पड़ताल के रखे जाते थे जिससे दूकानका खर्चभर निकल आवे। इसका परिणाम यह हुआ कि उस बस्तीवालोंकी तो बात ही क्या आसपासके लोग भी वहींसे चीजें खरीदने लगे और वह दूकान खूब मजेमें चल निकली।

जब हमारी सुधारक मण्डली वहाँ पहुँची तो दूकानका प्रबन्ध और सफाई देखकर वह मुग्ध हो गयी। जब सुशीलाने इस दूकानदारकी प्रशंसा की तो वह झटसे बोला—देवीजी! यह सब करामात हमारे इन भगीलालजीकी ही है, इन्होंने ही यह सारी माया रची है।

माहेश्वरीके पूछनेपर उसने उत्तर दिया कि हमारी इस दूकानके द्वारा इस सप्ताहमें हमने प्रायः तीन रुपये मजदूरीके रूपमें बस्तीवालोंको दिये हैं। जिसमें माल-ढुलाई, अन्नकी छटाई, पिसाई, साफ कराई आदि सभी काम शामिल हैं।

इस दूकानकी प्रगति देखकर सबको पूर्ण सन्तोष हुआ तथा उन्हें और भी नित्यकी व्यवहार योग्य वस्तुओंके संग्रह करनेकी सलाह दी। बादमें उसी बड़के पेड़के नीचेवाले सभास्थानमें यह मण्डली आ उपस्थित हुई। जहाँ आज एक नया ही दृश्य दिखाई दे रहा था। एक ओर तो सब स्त्रियां चर्खा कात रही थीं और दूसरी ओर पुरुष समाज तकली चला रहा था। यह सुन्दर दृश्य बहुत ही सुहावना मालूम दे रहा था। पूछनेपर मालूम हुआ कि अब इस

बस्तीका एकभी आदमी सुस्तीसे अपना समय नहीं बिताता, वह अपना दैनिक काम तो मनोयोगपूर्वक करता ही है बादमें जब भी अवकाश मिलता है, वह इसी तरह कुछ-न-कुछ करता ही रहता है।

नियमित रूपसे सभाका कार्य आरम्भ हुआ। श्रीरामचरण-जीने उन भाइयोंसे बातें आरम्भ कीं जो जूता बनाते थे और जिन्होंने गत सप्ताह चमड़े आदिके लिये माँग पेश की थी। उनसे उत्तर प्रति-उत्तर करके इन्होंने उनकी सारी आवश्यकताओंको समझ लिया और उनका उचित प्रबन्ध भी कर दिया तथा उन्हें अच्छी तरह समझा दिया कि यदि उनके चीना खरीददार उचित दाम न लगायें तो वे अपना सारा माल इकट्ठा करते रहे, बादमे उसके बेचनेकी ठीक व्यवस्था कर दी जायगी।

स्त्रियोंकी ओर लक्ष्य करके सुशीला देवीने कहा कि प्यारी बहिनो। आपकी बस्ती और घरोंकी सफाई देखकर हमलोगोंको बहुत ही सन्तोष हुआ है, अब आपको अपने बच्चोंकी देख-रेख और उनके लालन-पालनपर भी विशेष ध्यान देना चाहिये। श्रीमतीजीने इस विषयकी कुछ मुख्य-मुख्य बातें समझायीं और भविष्यमें इस विषयपर कुछ विशेष ध्यान रखनेकी सलाह दी।

बस्तीके मुखिया 'भक्तजी' ने बालकोंकी शिक्षाके लिये एक पाठशाला स्थापित करनेकी मांग पेश की। उन्होंने कहा कि

यद्यपि यहांके पढ़ने योग्य सभी बालक पाठशालामें जा रहे है, पर वह पाठशाला बहुत दूर रहनेके कारण बालकोंका बहुतसा समय आने जानेमें ही व्यतीत हो जाता है तथा वहांकी पढ़ाईके विषयमें भी भाई धनीलालको सन्तोष नहीं है।

जज साहबने भक्तजीकी यह माग स्वीकार करनेके लिये अपनी मण्डलीसे सिफारिश की और वहाँ शीघ्र ही एक अध्यापक नियुक्त करके पाठशाला खोलनेका भार श्री धनीलालको सौंप दिया गया।

बादमें उन लड़कोंके अनुरोधसे करघाशालाका निरीक्षण किया गया। जहां दो करघे बैठे हुए थे जिन्हें उन लड़कोंने बडी सफलताके साथ उन्हें चलाकर दिखाया, जिसे देखकर सबको सन्तोष हुआ तथा धनीलालजी से कहा गया कि वे अन्य युवकोंको भी इस ओर आकर्षित करनेका प्रयत्न करे।

पहलेके निश्चयानुसार यहांका काम देख-सुनकर कुछ अन्य बस्तियोंको देखनेके लिये यह मण्डली चल पड़ी। जहां जाकर इन्होंने उनको भी बुरी अवस्थामें पाया जिस अवस्थामें इनके हाथमें लेनेके पहले वह बस्ती थी।

इनलोगोंके यहां पहुँचते ही लोग इन्हें घेरकर खडे हो गये और प्रार्थना करने लगे कि आप हमारी बस्तियोंको सुधारनेका काम भी हाथमे लीजिये।

जज साहबने कहा—भाई साहब ! यह सब तो आपलोग पर ही निर्भर करता है, जबतक आप अपने पावोंपर खडा होना स्वीकार नहीं करेंगे। तबतक हम अकेले इसमें क्या कर सकते हैं ? बस्तीके मुखियाने कहा हम जानते हैं आप हमारी कैसे सहायता कर सकते हैं। हमलोग तो पंगु हैं जबतक कोई सहारा देकर हमें नहीं उठाता हम उठ नहीं सकते।

मुखियाकी बात सत्य थी। श्री माहेश्वरी देवीने उन्हें आश्वासन दिया कि शीघ्र ही इन बस्तिओंका काम भी हाथमें लिया जायगा, परन्तु यह बात निश्चित है कि जबतक आपलोग निजमें उठना नहीं चाहेंगे तबतक कोई भी शक्ति आपको उठा नहीं सकेगी।

मुखियाने स्वीकार किया कि यह बात ठीक है। हमलोग तो आपका कार्यक्रम बहुत दिन पहलेसे ही देख-सुन रहे हैं और उस बस्तीका कायापलट हो जानेसे हमारी सबकी आंखें भी खुल चुकी हैं। कहां तो उस बस्तीके निवासी जो आज सुखकी नींद सो रहे हैं और कहा हमलोग जो रात दिन चिन्ताओंके मारे ही मरे जा रहे हैं।

श्रीरामचरणजीने मुखियासे कहा—आप अपनी बस्तीके देने-पावनेका हिसाब ठीक करें तथा जो लोग काम करना चाहें उन्हें भी तैयार करें, हम दूसरे सप्ताह यहां फिर आवेगे और यहांका काम भी आरम्भ कर दिया जायगा।

उनतीसवां अध्याय

दो साल बादकी बात है। हमारी सुधारक मंडलीने प्रायः दस ग्यारह बस्तियोंका जीर्णोद्धार कर लिया है। इस समय यह सभी बस्तिया साफ-सुथरी तथा हवा-पानीके हिसाबसे सुधर चुकी हैं। इन बस्तियोंके निवासियोंकी अवस्था भी बहुत कुछ उन्नत हो गयी है।

एक दिन जज साहबने श्रीरामचरणजीसे कहा—भाई साहब हमलोगोंके लगातार तीन सालके प्रयत्नसे कुल दस बस्तिया ही सुधर पायी हैं। यद्यपि हमारे परिश्रममें कोई त्रुटि नहीं है, पर यह चाल तो बहुत धीमी है। दूसरे जिन बस्तियोंका काम हमने हाथमें लिया है वह तो रास्तेपर आ गयी हैं, पर उनके पड़ोसकी बस्तियां आज भी उसी दशामे पड़ी हुई हैं। इसलिये यदि हमारी यह सेवा ठेठ ग्रामोंमें लगाई जाय तो मेरी समझमें अधिक लाभ होनेकी सम्भावना है।

श्रीरामचरणजी—हां, मैं भी यही सोच रहा हूँ कि हम लोग इस गन्दे वातावरणसे निकलकर गांवोंकी ओर चलें तो वहा

बहुत अधिक काम हो सकता।

श्रीमती सुशीलाने कहा—मैंने तो इस बातका बहुत पहले ही अनुभव कर लिया था, आखिर जिनमे हम काम कर रहे हैं, वे यहाके रहनेवाले तो हैं नहीं, वे तो अभावोंके फेरमें पड़कर यहां आ बसे हैं, आखिर इन सबके घर भी गांवोंमे ही हैं। फिर यह यहां करते ही क्या हैं। इनमे अधिकांश तो किसी न किसी मिल वा कारखानेके पुरजे बनके काम कर रहे हैं, जिसका परिणाम एक दिन मरके इस जीवन लीलाको समाप्त कर देना है। न तो इसमें इनका अपना ही कल्याण है और न इससे देशको ही कुछ लाभ पहुँचता है।

श्रीमती माहेश्वरी देवीने कहा—उस दिन माताजी भी कह रही थीं कि हमलोग यहा जी-जानसे पढा रहे हैं, लडके-लड-कियोंने इस तरहकी शिक्षासे काफी दिलचस्पी भी दिखाई है तथा उनका काम भो हुआ है। पर जितना परिश्रम हम कर रहे हैं उसको देखते परिणाम बहुत ही कम निकल रहा है। यदि यही काम गावोंमें किया जाता तो इसका प्रभाव बहुत व्यापक पड़ता, इसलिये इससे तो यही अच्छा है कि हमलोग गांवमें ही चलकर रहें।

श्रीधनीलालने कहा—मेरा भी मन यहांसे बहुत उचट गया है। मुझे तो यहां सब कुछ बनावटी दिखाई दे रहा है। मैं देख

रहा हूं जिन लोगोंको हमने आगे बढ़ाया है वे आज आर्थिक दृष्टिसे बहुत अच्छे हो गये हैं, पर जैसे-जैसे उनके पास पैसे बढ़ रहे हैं, वैसे-वैसे ही उनकी आवश्यकता भी बढ रही है। इससे यही मालूम देता है कि जिस दिन हम लोग उनको सम्भालना छोड़ देंगे वे बहुत शीघ्र अपनी उसी पुरानी दयनीय दशापर पहुंच जायगे। ठीक उसी तरह जिस तरह किसी भारी वस्तुसे दबाई हुई कोई स्प्रिंग बोझा हटाते ही अपने पूर्व स्थानपर आ जाती है। यदि यही काम हमलोगोंने गांवोंमे किया होता तो आज हमारे गांवोंकी आजकी-सी दुरवस्था नहीं रहती।

जज साहब—हम लोगोंकी बातचीतसे यही मालूम होता है कि अब हमें अपना कार्यक्षेत्र गावोंमे बनाना उचित है। क्यों रामचरणजी यही आपका भी मत है न ?

रामच०—हाँ भाई साहब ! मैं भी यही सोच रहा हूं कि हमारी इस अतुल सम्पत्तिका यहां तो कुछ उपयोग नहीं हो रहा है और गाँववाले बिना अन्नके तड़प-तड़पके प्राण दे रहे हैं।

सुशीला—पर क्या आप इन महलोंको छोड़कर, इन बिजली के पखे और रोशनीका मोह छोड़कर वहां सीधा-सादा जीवन व्ययीत करनेको तैयार हैं ?

रामच०—यदि हमारी अधिष्ठात्री देवीजी वहाके लिये तैयार हो गयी हों तो हमें इसमें कुछ भी उज्र नहीं है।

माहेश्वरी—यदि देवताओंकी वहां स्वर्ग बैसर्नेकी इच्छा हो चुकी होगी तो फिर देवियां क्यों पीछे रहेगीं, उनका स्थान तो सबसे आगे ही रहता है ।

जज साहब—मैं तो कई दिनसे इस विषयपर विचार कर रहा था। मुझे तो अपना यह जीवन व्यर्थसा लग रहा है। हम तो यहां बैठकर मौज उड़ायें और हमारे ही भाई इस प्रकार दुःखोंके गड्ढेमें पड़े सड़ते रहें। अबतक जितने रुपये बैंकमें जमा कर चुके हैं। उसके सूदसे ही गृहस्थीका काम चल जायगा, इसलिये मैं तो नौकरीसे इस्तीफा देकर गांवमे चलकर रहना ही अधिक पसन्द करता हूँ।

सुशीला—खर्च-बर्चकी आपने अच्छी कही, फिर यह इतना धन जो आपको सौंपा गया है, वह किस दिनके लिये है ? पर क्या बैरिस्टर साहब भी अपनी बहस करनेकी आदतको छोड़ देना चाहते हैं ?

रामच०—क्यों नहीं। अवश्य ही मैं अदालतमें बहस करना तो छोड़ दूंगा पर कहीं इसका यह तो मतलब नहीं लगाया जाता है कि इस इकरारनामेंसे मेरे अन्य किसी तरहकी बहस करनेपर एक सौ चवालीस धारा लग जायगी।

सुशीला—नहीं साहब! आप गांवोंमें चलकर किसानोंसे तथा कर्मचारियोंसे खूब बहसकर सकेंगे। इसके सिवा यदि लोग

आपको अपना प्रतिनिधि मानें तो आप कांग्रेस और कौंसिलों-में भी जाकर खूब बहस कर सकेंगे।

इसी तरहका हास्य-विनोद करते हुए ही यह बात तय कर ली गई कि पूजाकी छुट्टियोंके पहले ही अपने-अपने कामको ठीक करके यहांसे डेरा डण्डा उठाके गांव में चलकर रहा जाय।

श्रीधनीलालको कुछ दिन पहले ही गांवमें भेज दिया गया तथा समझा दिया गया कि वहां जाकर उन्हें क्या-क्या प्रबन्ध करना होगा। श्रीमती सुखिया देवी भी उनके साथ गयीं और वहां जाकर वर्षों से बन्द पड़े हुए अपने घर-द्वारकी सुध ली। वहां घर द्वारमें रखा ही क्या था, कच्ची मिट्टीकी दिवालें सब गिर गई थीं, अगल-बगलकी खुली जमीन पड़ोसियोंने दखल कर रखी थी; जो दो-चार बीघा खेत था वह भी दूसरे ही जोत-बो रहे थे।

यदि गांववालोंको यह मालूम न होता कि सुखिया देवीका लड़का घसीटू राम एक बड़ा भारी हाकिम है और उसके पास लाखोंकी सम्पति भी है तो वे उनका घर द्वार कभी वापस न देते, पर इस समय तो सुखिया देवीके आते ही उन्होंने उनका सब खाली कर दिया तथा उनके साथ बहुत ही भलमनसाहतसे पेश आये।

श्रीधनीलालने खेतकी जमीनको ठीक कराके उसमें ही

कुछ ऊँची कुरसी देकर कई झोपड़ियां तैयार करायी जिनके चारों ओर बरण्डेकी तरह् जगह् रखके हवा-पानीका पूरा सुभीता रखा गया तथा आस पास कुछ फुलवाड़ी भी लगा दी गयी, रास्ता घाट भी बहुत होशियारीसे ठीक करा दिया गया। एक ओर रसोई घर तथा दूसरी ओर गोशाला तैयार करायी गयी। जमीनके एक कोनेमे एक सुन्दर कुआ खुदवाकर उसके ऊपर पक्का चबूतरा बंधा दिया गया, जिससे रास्ते चलते हुए आदमी भी मजेमें उसका उपयोग कर सकें। सारांश ग्राम जीवनमें बहुत थोडे खर्च में आसानीसे जितना सुभीता प्राप्त किया जा सकता है उतना सुभीता वहां कर लिया गया।

तीसवाँ अध्याय

जज साहबकी सारी पार्टी यथा समय शहरकी जगह जमीन कीर्व्यवस्था करके गावमें आ गयी है। साथमें पण्डितजी,कात्या-यिनी देवी तथा श्रीमती एना भी आयी हैं। पण्डितजीके रहनेका प्रबन्ध तो सबके साथ ही किया गया है। पर उनकी पाठशाला जमीनके दूसरे किनारे सड़ककी ओर बनवायी गयी है, यद्यपि पाठशाला देहातके योग्य ही तैयार की गई है पर देखनेमें इतनी सुन्दर बनी है कि वह पक्की बनायी जानेपर शायद ही ऐसी भली लगती।

यहां आकर सब अपने-अपने योग्य घरोंमें बस गये तथा यही निश्चय किया कि यथा सम्भव नौकरोंसे काम न लेकर अपने हाथों ही अपना काम चलाया जाय। समयके लिहा-जसे दूसरोंसे काम लिये बिना अडचन उपस्थित होती हो, सिर्फ ऐसे ही काम उनको सौंपे जायं।

आरम्भमें तो प्रायः सबको ही कुछ कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा, पर बहुत थोड़े दिनोंमें ही अभ्यास हो, जानेपर सब

काम नियमित रूपसे चलने लगे । कामकी व्यवस्था हो जानेपर अब इन सबको इतना अधिक समय मिलने लगा कि विना कामके इनका जी उचटने लगा ।

वह गांव कोई पचास-साठ घरका था । इनमे सभी श्रेणीके लोग थे । पर थे सबके सब गरीब, जैसे कि आजकल औसतन हमारे सब ग्रामवासी होते हैं । वैसे ही गांवके साहूकारके कर्ज-दार, जमींदारके दबेल, परस्परके ईर्षा-द्वेषके कारण वकील मुखतारोंके शिकार तथा अपनी झूठी शानको बनाये रखनेके इच्छुक यह सब भी थे ।

सबसे पहले जज साहब और रामचरणजी उस गावके जमीं-दारसे मिले तथा उसका भाव जाननेकी चेष्टा की । उसकी वातों-से यह स्पष्ट मालूम हो गया कि यदि उसको समयपर लगान मिलता रहे तो वह अन्य सारे सुभीते देने को तैयार है ।

इन्होंने उसके बकाया लगानकी लिस्ट मागी जो कुछ दिन बाद इनके पास पहुँच गयी, वह बहुत अधिक नहीं थी ; क्योंकि उसमें फालतू एक भी मद नहीं जोडी गयी थी । जमींदार महा-शयने भी समझ लिया था कि अनुचित ढगका एक पैसा भी मिलेगा तो है नहीं फिर नाहक क्यों टंटा खड़ा किया जाय ।

किसानोंसे पूछनेपर वह लिस्ट सही प्रमाणित हुई । उसके अनुसार लगभग बारह सौ रुपये उसके बाकी निकलते थे । जज

साहबने ग्रामवासियोंसे कहा कि श्रीरामचरणजी आपलोगोंका यह बकाया इस शर्तपर चुका देनेको तैयार हैं कि आप इनके यह रुपये यथा अवकाश चुका दें।

किसानोंको इससे अधिक क्या चाहिये था। उन्होंने कृतज्ञता पूर्वक उनकी यह बात मान ली। जमींदारका बकाया पाई-पाई चुका दिया गया। ग्रामवासियोंने सुखकी साँस ली।

इसके बाद महाजनोंकी बारी आयी। महाजन कई थे। गांवका मोदी तो था ही इसके बाद सुखारी शुक्ल तथा रामधनीकी मां भी यह काम किया करती थी। इन सबके हिसाब भी किये गये इनमें सिवा मोदीके अन्य दोनों महाजन सिर्फ हैण्डनोटोंपर रुपये उधार देते थे जो एक हैण्डनोटके कई बार रुपये वसूल करके भी उसे खतम नहीं करते थे।

इन लोगोंसे काफी मुठभेड़ करनी पडी, पर अन्तमें असल बात उन्हे स्वीकार करनी पडी और उचित सूद सहित जो उनका पावना था वह सब पाई-पाई चुका दिया गया। जो एक हजारसे अधिक नहीं था।

इस तरह इन दोनों बलाओंसे उस ग्रामको मुक्त करके यह मण्डली ग्रामोन्नतिके असल काममें लगी। यदि इस तरह इन्होंने मुक्तहस्तसे रुपये न लगाये होते तो सम्भव हैं गांववाले इनकी ओर इतने शीघ्र आकर्षित न होते, पर अब तो वे इनके

इतने अधिक अनुयायी बन गये कि जो यह कहते थे वह सबको मजूर था।

गांवको ऋणमुक्त करनेके बाद दूसरा काम इन्होंने यह उठाया कि एक-एक किसानके जो कई जगह छोटे-छोटे खेत थे उन्हे अदल-बदलके सबके खेतोंके एक-एक प्लाट बनाने आरम्भ किये। यद्यपि यह काम बहुत कठिन था, कोई भी अपने छोटेसे छोटे टुकड़ेको भी बदलना नहीं चाहता था, पर इस तरहके भिन्न-भिन्न स्थानोंके खेतोंके टुकडोंसे जो उनकी असीम हानि हो रही थी उसे जब उन्होंने विस्तारसे समझाकर कहा तो वे सब राजी हो गये।

इनलोगोंने बहुत समझ-बूझकर हलके भारीका विचार करके सबके अलग-अलग प्लाट बना दिये तथा उसीके अनुसार मेढ़ बना दी गयी। खेतोंमें आनेजानेकी पटरिया छोड़ देनेपर भी सबको अपने पुराने खेतोंके रकबोंसे कुछ न कुछ अधिक ही जमीन प्राप्त हुई, क्योंकि छोटे-छोटे खेतोंको दूसरेके खेतोंसे अलग करनेमें बहुत अधिक मेढें बनी हुई थीं और उनमे काफी जगह बरबाद हो रही थी, पर अब सिर्फ एक मेढ बन जानेसे सबको सुभीता हो गया।

इकतीसवाँ अध्याय

जेठकी भीषण तपनके बाद आषाढ़ लगते ही कुछ छींटाछांटी हो जानेसे किसान लोग खेतोंकी जुताईमे लग गये। जिनके पास अपने बैल थे उनको तो कोई असुविधा नहीं थी, पर कुछ लोग ऐसे भी थे जिनके पास बैल नहीं थे, वे दूसरोंसे बैल लेकर काम चलाते थे, पर जबतक उनका अपना काम पूरा नहीं हो जाता। उन्हे बैल कहासे मिलें। इसलिये तबतक इन्हे खाली हाथ बैठे रहकर अवसर खोना पड़ता था।

इनलोगोंकी कठिनाईको समझकर तीन-चार जोडी नये बैल खरीदे गये तथा उनको काममे लानेवालों पर एक साधारण सा कर लगा दिया गया, जिससे आगे चलकर कुछ दिनों बाद उनकी रकम वसूल हो जाय और वे बैल फिर उन्हीं लोगोंकी सम्मिलित सम्पत्ति बन जायं। इस कार्यसे जिनके पास बैल नहीं थे उनका भी काम चालू हो गया और ठीक समयपर सब खेत जोतजात कर तैयार कर लिये गये।

अब अच्छे बीयेका प्रश्न सामने आया। कुछ चतुर ग्राम-

निवासियोंके पास तो अपना अच्छा बीज सुरक्षित था, पर कुछ गरीबोंने बीज भी खा-पी डाला था। इनके लिये धनीलालजीने आस-पासके ग्रामोंमे दौड-धूप करके अच्छे बीजका प्रबन्ध कर दिया।

इस सुधारक मंडलीने गांवके कूडे-करकट तथा गुहालोंकी बुहारनको उचित जगहपर इकट्ठा करनेका पहलेसे ही प्रबन्ध कर दिया था, जिससे दो लाभ हुए, गावकी सफाई भी हो गई थी और खेतोंके लिये काफी खाद भी मिल गयी। यद्यपि यह पर्याप्त मात्रामे नहीं थी पर तो भी पहलेसे बहुत अधिक थी।

खेतोंमे खाद देकर दूसरी जुताई खतम होते-होते भगवानने एक अच्छी बारिस और कर दी जिससे किसानोंके आनन्दका ठिकाना नहीं रहा। सब बोनेके काममें जुट गये और यथासमय अपनी-अपनी बोयनी खतम कर ली।

सुधारक मंडली भी चुप नहीं बैठी थी, वह इन सबको तो उचित सलाह देती ही थी, साथ ही अपने अनुभव प्राप्त करनेवाले खेतकी कुछ जमीन तैयार करके, बहुत अधिक बढ़नेवाली घासोंकी जड़ें लगा रही थी, जो उन्होंने सरकारी अनुभवकारी खेतोंमेंसे मंगायी थी।

खेतोंको जोतकर खाद देकर ऐसा स्वच्छ बना लिया गया था कि जिसे देखते ही यह इच्छा होती थी कि उसपर बिना

बिछावनके ही लेट लगाई जाय।

श्रीमती माहेश्वरी और सुशीलाने तो कतार बांधकर समानान्तरपर घासकी जड़ें रोपनेका काम लिया था,एवं जज साहब और बारिष्टर साहब जमीनको बराबर कर रहे थे। श्रीघनीलाल कुंएंसे पानी लाकर उन नयी जड़ोंकी सिंचाई कर रहे थे।

गांवकी गायोंको बरदानेके लिये कोई अच्छा सांड़ नहीं था, बिलकुल मामूली साड़ोंसे काम लिया जाता था। जिससे न तो गायोंके पूरा दूध ही होता था और न अच्छे बैल ही मिलते थे। इसलिये एक डिब्बेमें सात बढ़िया गायें और एक सांड़ पञ्जाबके हरियाने जिलेसे मँगाया गया।

प्रत्येक गायोंके आठ-दस सेरके लगभग दूध था तथा उसके बच्चे भी अच्छी जातके थे। इसलिये उन्हें साँड और बैल बनानेकी गरजसे आरम्भमें हीं उनकी अच्छी तरह देख-भाल की जाने लगी।

गांवमें जिसे गाय बरदानी होती वह वहाँ आकर खुशीसे साँडका उपयोग कर सकता था। उसे सिर्फ उस दिनकी साँडकी खुराकी भर देनी पड़ती थी। इससे उसका आधेसे अधिक खर्च गाँवसे ही निकल आता था।

घटिया दर्जेके जितने साँड़ गाँवमें थे उन्हें दूसरे कामोंमें लगा दिया गया। जिसके फल स्वरूप आगे चलकर जो गायें दो

अढाई सेरसे अधिक दूध नहीं देती थीं वे ही चार-पाँच सेर दूध देने लगीं तथा उनके बच्चे भी खूब मजबूत निकलने लगे।

उस गाँवमें जहाँ गृहस्थोंको घी की तरह दूध बर्तना पडता था वहाँ अब दूधकी नदियाँसी बहने लगीं। गायोंके जब दूध बढ़ गया तो उन्हें खुराकी भी अधिक मिलने लगी। इसी तरह गायोंसे मनुष्योंको और बदलेमें मनुष्योंसे गायोंको लाभ पहुंचने लगा।

इस सालका दसहरा और दिवाली दोनों ही त्योंहार बड़े हर्षके साथ मनाये गये क्योंकि खेतोंमे फसल बहुत अच्छी हुई थी तथा पहलेकी तरह अब उनके खेतोंपर किसी पावनेदारकी दृष्टि नहीं लगी हुई थी। जो हरसाल फसल तैयार होते न होते गीधकी तरह उसपर नजर गड़ा देते थे।

दिवालीके बाद खेत कटने आरम्भ हुए और गाँवके प्रत्येक गृहस्थके कोठे अन्न और चारेसे परिपूर्ण हो गये। जिन किसानों के बदनपर सिवा हड्डियोंके कहीं मांस दिखाई ही नहीं देता था वे सब अब हट्टे-कट्टे दिखाई देते थे। वे ही नहीं उनके पशु भी खूब तगडे हो रहे थे, गावकी सुन्दरता सराहनीय हो गयी थी।

सुधारक मडलीने एक सहकार समितिका सङ्गठन किया जिसमें वे वस्तुएं जो गृहस्थोंके साल भरकी आवश्यकतासे अधिक थीं बाजार भाव पर खरीद लीं तथा उसका मूल्य सबको

चुका दिया। उसी मूल्यमेसे सबने जमीन्दारका लगान भी चुका दिया और अपनी आवश्यकताकी अन्य वस्तुओंको भी खरीद लिया। इस तरह एक ही फसलकी कमाईसे सारी बस्तीको साल भरका पूरा सामान मिल गया।

अब रबीकी फसलकी तैयारी होने लगी। सबने अपने-अपने खेतोंमे भरपूर खाद देकर खूब अच्छी तरह जोत डाला, बैलोंकी अच्छी अवस्था रहनेसे इसबार जोताई तो सुन्दर हुई ही काम भी कुछ शीघ्र हुआ।

अब सिचाईका प्रश्न सामने आया। जिन जमीनोंमें कुएँ थे उनमे नई मोटे खरीदकर काम चालू कर दिया गया। जिनमें कुएँ नहीं थे उनमे कुएँ बनने लगे। बडे खेतोंमे तो अलग-अलग कुएँ बन गये। छोटे खेतोंमे दो-दो तीन-तीन किसानोंको मिलाकर साझेकी खेती करा दी गई तथा उनकी जमीनोंमे कुएँ भी साझेके ही बनवा दिये गये। जिन कूओंमें पानी कम जानेकी सम्भावना दिखाई दी उनमें बोरिंग कराके जल बढ़ा दिया गया।

इन कुओंके बनानेमें मजदूरीका काम तो गांववालोंने परस्पर सहयोग करके करा दिया, ईंटा, सुरखी आदि सामान सब सहकार समितिने दे दिया। इस तरह सिचाईका सवाल भी हल हो गया।

इधर अनुभव प्राप्त करनेवाले खेतमें अधिक बढ़नेवाले घास

की जो जड़ें लगायी गयी थीं, वे इस समय तक कई बीघोंमें फैल गई थीं, इसका सारा भार महिलाओंने अपने ऊपर ही ले लिया था। क्योंकि एकबार जोत-जातकर जमीन तैयार कर देनेके बाद इस कामके लिये हल-बैलोंकी कुछ भी आवश्यकता नहीं पडती है।

हर महीने सिरके बराबर घास बढ जाती है, जिसे माहेश्वरी और सुशीला बड़े प्रेमसे अपने हाथों काट लेती हैं तथा उसीमे से कुछ हिस्सा जडोंका निकालकर आगे खेत बढाती रहती हैं। घास काट लेनेके बाद छोटी-छोटी दो कुदालोंसे वे रोज जितनी जमीनका घास काटतीं उतनी ही कोडकाडकर साफ कर लेती हैं। हर दूसरे महीने वे उसमें खाद भी देती रहती हैं, जो उन्होंने गाय और बैलोंके गोबरसे वहीं एक ओर गड्ढा बनाकर तैयार कर ली है।

यह घास जिसे गीनी घास कहते हैं हर महीने एक एकड में दो-अढाई सौ मन होती रहती है। अभीतक इन्होंने कुल एक-एकड़मे ही घास लगा पायी है, बस इतनेसे ही उनकी वर्तमान गोशालाके लिये काफी चारा प्राप्त हो जाता है।

———

बत्तीसवां अध्याय

जज साहबकी मण्डलीको गावमें आये अभी पूरे दो साल भी नहीं हुए हैं कि इसी बीचमें उस गावके अधिकांश गृहस्थोंके अपने लिये ही नहीं, अपने पशुओंके लिये भी ईंटोंकी दीवार-पर खपरैल छाये हुए घर बन गये हैं। घर भी इस ढंगसे बने हैं कि उनमें हवा और धूप काफी मात्रामे प्रवेश कर सकती है। घरका मैला पानी बहनेके लिये बड़े अच्छे ढगसे नालियां बन गई हैं। छोटी-छोटी हाथ गाड़ियोंसे प्रत्येक गृहस्थ घरका कूड़ा-कर्कट तथा गोबर आदि अपने खेतोंमें बने हुए खादके गड्ढोंमें बड़ी आसानीसे पहुँचा देते हैं। जिससे गांवमें सफाई तो रहती ही है, फसलोंके लिये समयपर खाद भी मिल जाती है।

जिस गांवमें बाहर भेजकर हजारों रुपये कमानेकी तो बात सोच ही कौन सकता था; अपने बच्चेके लिये भी दूधके दर्शन होने कठिन थे। वहाँ आज प्रत्येक ग्रामनिवासी अपने लिये दूध और घी रखकर भी एक खासी रकम उससे प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही अच्छी नसलके बछड़े-बछिया भी काफी संख्यामें गाँवमें

दिखाई दे रहे हैं, जो साल डेढ सालके बाद कामके योग्य हो जायंगे।

अन्य कामोंकी उचित व्यवस्था हो जानेसे ग्रामवासियोंका अब काफी समय बचने लगा था। इसलिये उन्हे वस्त्र बुननेकी पद्धति बताकर चरखे और करघेका काम भी आरम्भ कर दिया गया, जो कुछ-कुछ तो पहलेसे ही चालू था, पर अब सब लोग इस कार्यको नियमित रूपसे करने लग गये हैं। इस विषयमे धनीलाल विशेष अनुभवी थे। जिन्होंने ग्राम्यवासियोंको थोडे ही दिनोंमें स्वावलम्बी बना दिया। इसलिये बहुत थोडे अर्सेमें ही ग्रामवासियोंने अपने लिये बाहरसे कपडा मँगाना बिलकुल बन्द कर दिया।

यद्यपि सुधारक मण्डलीका अन्य कई तरहके उद्योग सिखानेका भी विचार था, पर उस गाँवके अधिवासियोंने तो गोपालन और दूध-घीके कामको ही अपने निर्वाहका साधन बनाये रखनेका विशेष आग्रह प्रकट किया, क्योंकि अच्छी नसलके पशु और उनके लिये गिनी घासकी प्रचुर खेतीके द्वारा अबतक जो वे आशातीत लाभ प्राप्त कर चुके थे उसके सामने उन्हे और कुछ भी अच्छा नहीं लगता था।

इन लोगोंने भी उनका आग्रह देखकर गोपालनके विषयकी अन्य बारीकियां भी उन्हें धीरे-धीरे समझा दीं, जिससे वे और

भी अधिक लाभ उठाने लगे।

इस समयतक श्री रामचरणजीके फण्डके चुकता रुपये ग्रामवासियोंने अदा कर दिये थे। साथ ही उनकी सहकार समितिमें भी अब एक खासी रकम जमा हो गयी थी।

इधर पंडितजी तथा उनकी दोनों पत्निया भी चुप नहीं बैठी थीं। उन्होंने भी अपनी नयी शिक्षा-पद्धतिके अनुसार सिर्फ उसी ग्रामके नहीं आसपासके अन्य ग्रामोंके बालकोंको भी अक्षर ज्ञानके साथ-साथ कई तरहकी औद्योगिक शिक्षा देनेका काम जारी कर रखा था। जिसके फलस्वरूप इन ढाई-तीन सालके भीतर ही वहाँसे कई अच्छे लड़के बढ़ई और लुहारका काम सीखकर अपनी रोजी कमानेके योग्य बनकर अपने गावोंको लौट गये थे।

तैंतीसवां अध्याय

हमारी सुधारक मण्डलीको गांवोंमें आये अब दस साल बीत चुके हैं। इस लम्बी अवधिमे उन्होंने इस सारे जिलेके किसान और मजदूरोंको स्वावलम्बी बना दिया है। जहां इस जिलेसे हजारों आदमी अपनी रोजीके लिये विदेशों तककी धूल फाँककर भी अपना पापी पेट नहीं भर पाते थे। वहां आज बाहरसे यहा आकर सैकडों आदमी अपना गुजर कर रहे हैं।

जिले भरके कल कारखाने बन्द हो गये हैं, वहां जो भी चीजे खर्च होती हैं, वे सभी गांवोंमे तैयार होने लगी हैं। जो चीज गावोंमे तैयार नहीं हो सकती उसका उन्होंने व्यवहार करना ही बन्द कर दिया है।

सुधारक मण्डलीका इस जिलेका काम अब एकदम खतम हो चुका है। उन्होंने अपने फण्डसे जितनी रकम लगायी थी, वह सारीकी-सारी वसूल हो चुकी है। उलटे उसे उस जिलेकी सहकार समितिके लिये एक महाजनी सघ [बैङ्क] खोलना पड़ा है, जो दूसरे जिलेके लोगोंको कम सूदपर रुपये उधार देता है।

इधर पण्डितजीकी सफलताको देखकर जिले भरमें उसी तरहकी पाठशालाएं खुल गई हैं। जिनमें शिक्षा पाये हुए विद्यार्थी सिर्फ अपने जिलेमें ही काम नहीं कर रहे हैं, वरन् सारे भारतवर्षमें इसी तरहकी शिक्षाका प्रसार करनेको चारों ओरसे उनकी मांग आ रही है।

इस तरहकी शिक्षासे एक यह भी लाभ हुआ है कि बालकोंका स्वास्थ्य स्वतः ही अच्छा रहने लगा है। क्योंकि उन्हे नियमित रूपसे शारीरिक परिश्रमका काम करना पड़ता है।

बस